

मूल्य : दो रुपया पचीस नया पैसा

प्रथम संस्करण, सन् २०१४

प्रकाशक—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (बनारस)

मुद्रक—ओम्प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी ५१८६-१६

भूमिका

पालि भाषा भगवान् बुद्ध के कुछ समय पूर्व से लेकर अशोक-काल के कुछ समय पीछे तक, पूरे उत्तर भारत की राष्ट्रभाषा थी। इसका साहित्य बड़ा विशाल है। कालचक्रवश एक दीर्घकाल तक हम भारतीय पालि भाषा से अनभिज्ञ-से हो गये थे, किन्तु पड़ोसी बौद्धदेश लका, बर्मा, श्याम आदि इसे धार्मिक भाषाके रूप में सुरक्षित रखे रहे। सम्प्रति उन देशों में इसका बहुत प्रचार है।

इस समय भारतवर्ष में भी पालि-शिक्षा की व्यवस्था की ओर हमारा ध्यान गया है। हिन्दू विश्वविद्यालय और राजकीय संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी, विहार विश्वविद्यालय, पालि-प्रतिष्ठान नालन्दा और कलकत्ता, बम्बई आदि विश्वविद्यालयों तथा संस्कृत समिति विहार (पटना) द्वारा इसके शिक्षण और परीक्षण की व्यवस्था है। आगरा, लखनऊ, इलाहाबाद, सागर आदि विश्वविद्यालयों द्वारा भी डिग्री-कोर्सों में इसे स्थान प्राप्त है। उत्तर प्रदेश और विहार के हाईस्कूल तथा इण्टर मीडियेट कोर्स में भी पालि रखी गई है और इन दोनों राज्यों में अब एक बड़ी सख्या में छात्र पालि पढ़ने लगे हैं। केन्द्रीय सरकार द्वारा पालि त्रिपिटक को भी देवनागरी लिपि में प्रकाशित किया जा रहा है। यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है।

किन्तु, अभी पाठ्य-पुस्तकों तथा व्याकरण ग्रन्थों के अभाव से छात्रों को बड़ी असुविधा होती है। हिन्दीमें अब तक पालि के तीन व्याकरण-ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें पूज्य भदन्त जगदीश काश्यप द्वारा लिखित 'पालि महान्याकरण' सर्वांग परिपूर्ण है, तथापि वह विशाल-काय ग्रन्थ छात्रों के लिए सुविधाजनक तथा सरल नहीं है। वह विशेष रूप से विद्वानों के योग्य है।

यह ग्रन्थ इस दृष्टि से लिखा गया है कि हाईस्कूल से लेकर एम. ए., आचार्य तक के छात्र इससे लाभ उठा सकें और उन्हें पालि व्याकरण का पूर्ण ज्ञान हो जाय । इसे 'मोग्गलान व्याकरण' तथा उसके परिवार-ग्रन्थ 'पदसाधन' के आधार पर तैयार किया गया है । हिन्दी में लिखे अन्य ग्रन्थों से भी सहायता ली गई है । हम इन सभी लेखकों के आभारी हैं ।

इसे लिखने के लिए पालि-प्रतिष्ठान नालन्दा के रजिस्ट्रार श्री चन्द्रिका सिंह उपासक एम० ए० तथा राजकीय सस्कृत महाविद्यालय वाराणसी के प्राध्यापक श्री जगन्नाथ उपाध्याय ने विशेष आग्रह किया था । हम इन दोनों कल्याणमित्रों के कृतज्ञ हैं ।

ज्ञानमण्डल लिमिटेड के प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष ज्ञानवृद्ध सुहृद् श्री देवनारायण द्विवेदी जी की प्रकाशन-व्यवस्था के कारण इस ग्रन्थ को हमने उन्साहपूर्वक शीघ्र तैयार किया है । अपने प्रति उनके स्नेह को हम किन शब्दों में व्यक्त करें ?

—भिक्षु धर्मरक्षित

विषय-सूची

पाठ	विषय	पृष्ठ
१. पहला पाठ—	धर्ण परिचय, स्वर, व्यञ्जन, विगेष	१
२. दूसरा पाठ—	शब्द-परिचय, विभक्ति, लिङ्ग, वचन, शब्द, रूप, सज्ञा	४
३. तीसरा पाठ—	क्रिया, काल, पुरुष, वत्तमानकाल 'पठ' धातु, भ्वादिगण के धातु	८
४. चौथा पाठ—	अकारान्त नपुसकलिङ्ग शब्द 'फल', भ्वादिगण के धातु	१२
५. पाँचवाँ पाठ—	आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'लता', भ्वादिगण के धातु	१६
६. छठाँ पाठ—	इकारान्त पुलिङ्ग शब्द 'मुनि', रुधादिगण के धातु	२०
७. सातवाँ पाठ—	इकारान्त नपुसकलिङ्ग शब्द 'अष्टि', दिवादिगण के धातु	२४
८. आठवाँ पाठ—	इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'रत्ति', तुदादिगण के धातु	२७
९. नवाँ पाठ—	ईकारान्त पुलिङ्ग शब्द 'दण्डी', तनादिगण के धातु	३१
१०. दसवाँ पाठ—	ईकारान्त नपुसकलिङ्ग शब्द 'सुखकारी', चुरादिगण के धातु	३४

- ११ ग्यारहवाँ पाठ—ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'इत्थी', नदी, स्वादिगण के वातु, निपात ३६
- १२ बारहवाँ पाठ—उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'भिक्षु', ज्यादि-गण के वातु ४१
- १३ तेरहवाँ पाठ—उकारान्त नपुमकलिङ्ग शब्द 'आयु' ४५
- १४ चौदहवाँ पाठ—क्रिया—अनागतकाल 'पठ' वातु, पूर्व-कालिक क्रिया ४८
- १५ पन्द्रहवाँ पाठ—उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'वेनु', मातु ५४
- १६ सोलहवाँ पाठ—उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'पितु', सत्थु, क्रिया अतीतकाल, परिसमाप्त्यर्थक भूत 'पठ' वातु ५७
- १७ सत्रहवाँ पाठ—सर्वनाम शब्द 'अह', 'तुम्ह', क्रिया-अनुज्ञा ६१
- १८ अठारहवाँ पाठ—उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'सव्यञ्जू', कृदन्त ६४
- १९ उन्नीसवाँ पाठ—उकारान्त नपुमकलिङ्ग शब्द 'मयम्भू', क्रिया-विविलिङ्ग, कृदन्त ६७
- २० बीसवाँ पाठ—उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'वधू', निपात शब्द ७०
- २१ इक्कीसवाँ पाठ—'त' शब्द सर्वनाम, निमित्तार्थक अय्य 'तु', 'ताय', 'तवे' ७४
- २२ बाइसवाँ पाठ—ओकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'गो', ओकारान्त नपुमकलिङ्ग शब्द 'चित्तगो', प्रेरणायक क्रिया ७७
- २३ तेइसवाँ पाठ—कृच्छ्र अनियमित पुल्लिङ्ग शब्द—'गज' 'अत्त', 'ब्रह्म', 'पुम', 'युव', 'मा' ८०
- २४ चौबीसवाँ पाठ—सर्वनाम शब्द 'माव', 'कि', 'र' ८५

२५. पच्चीसवाँ पाठ—सर्वनाम शब्द 'एत', 'इम', 'अमु' ८९
२६. छव्वीसवाँ पाठ—'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द—
'गुणवन्तु', 'न्त' तथा 'मान' प्रत्ययान्त शब्द—'गच्छन्त' ९३
२७. सत्ताइसवाँ पाठ—'तु' प्रत्ययान्त शब्द—'दातु', अकारान्त
नपुसकलिङ्ग शब्द 'मन', परिवारवाची शब्द, शरीरावयव-
वाची शब्द ९८
२८. अट्ठाइसवाँ पाठ—सख्यावाचक शब्द—'एक' 'द्वि', 'उभ',
'ति', 'चतु', 'पञ्च', 'एकूनवीसति', 'एकूनसत', सौ से
असंख्येय तक की गणना, 'कति', पूरणार्थक शब्द, विशेष शब्द १०२
२९. उन्तीसवाँ पाठ—क्रिया—अनद्यतनभूत, परोक्षभूत, हेतुहेतु-
मद्भूत, अत्तनोपद धातु-रूप—[वत्तमानकाल, अनागतकाल,
परिसमाप्त्यर्थक भूत, विधिलिङ्ग, अनुज्ञा, अनद्यतनभूत, परोक्ष-
भूत, हेतुहेतुमद्भूत] ११२
३०. तीसवाँ पाठ—उपसर्ग ११७
३१. एकतीसवाँ पाठ—तद्धित १२२
३२. वत्तीसवाँ पाठ—तद्धितान्त अव्यय १३१
३३. तैत्तीसवाँ पाठ—कृदन्त १३६
३४. चौत्तीसवाँ पाठ—सन्धि—स्वर सन्धि, व्यञ्जन सन्धि, निगा-
हीत सन्धि १४३
३५. पैत्तीसवाँ पाठ—समास—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय,
बहुव्रीहि, क्तियार्थ, द्वन्द्व १५४
३६. छत्तीसवाँ पाठ—गण—न्वादि, रुधादि, दिवादि, तुदादि,
तनादि, जुरादि, त्वादि, ज्ञादि, क्यादि १६७
३७. सैंतीसवाँ पाठ—त्वी-प्रत्यय १७३

- ३८ अङ्गतीसवाँ पाठ—विभक्ति-भेद—पठमा, दुतिया, ततिया,
चतुर्थी, पञ्चमी, छट्टी, सत्तमी १७६
- ३९ उन्तालीसवाँ पाठ—वाच्य—कर्तृवाच्य, भाववाच्य, कर्म-
वाच्य १८२
- ४० चालीसवाँ पाठ—विशेषण—गुणवाचक, सख्यावाचक,
कृदन्त, तद्धितान्त १८५
-

पालि व्याकरण

पहला पाठ

वर्ण-परिचय

पालि-भाषा में ४३ वर्ण होते हैं,^१ किन्तु कच्चायन-व्याकरण के लेखक ने ४१ वर्ण ही माना है। उन्होंने एँ और ओँ को वर्ण नहीं माना है। मोगल्लान-व्याकरण के लेखक तथा पीछे के आचार्यों ने इन्हें भी वर्ण माना है, क्योंकि सयुक्ताक्षर के पूर्व आनेवाले ए और ओ ह्रस्व होते हैं।^२ इन वर्णों में १० स्वर^३ और ३३ व्यञ्जन^४ हैं।

स्वर

अ आ, इ ई, उ ऊ, एँ ए, ओँ ओ।

इनमें दो-दो स्वर सवर्ण कहे जाते हैं।^५ जैसे—अ, आ—एक सवर्ण है। इ, ई—एक सवर्ण है। उ, ऊ—एक सवर्ण है। एँ, ए—एक

१. अआदयो तितालीसवण्णा १,१।

२. इन्हें एत्थ, सेय्यो, ओट्ठो, सोत्थि आदि शब्दों से जाना जा सकता है।

३. दसादो सरा १,२ (आदि के १० स्वर हैं)।

४. कादयो व्यञ्जना १,६ (क आदि ३३ वर्ण व्यञ्जन हैं)।

५. हे द्वे सवण्णा १,३।

सवर्ण है। ओँ, ओ—एक सवर्ण है। सवर्णों में पूर्व वर्ण ह्रस्व है।^१ जैसे—अ, इ, उ, एँ, ओँ। उनके दूसरे वर्ण दीर्घ हैं।^२ जैसे—आ, ई, ऊ, ए, ओ।

व्यञ्जन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
स	ह	ळ	अं	

पाँच पाँच वर्णों के पाँच वर्ग हैं।^३ जैसे—कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग।

‘अ’ को निग्राहीत कहते हैं।^४ निग्राहीत का तात्पर्य है अनुस्वार।

विशेष

वैदिक भाषा में ६४ अक्षर होते हैं और संस्कृत में ५०। पालि में ऋ नहीं होता, उसके स्थान में कहीं अ, इ या उ हो जाते हैं। जैसे—
 ऋह = गह, एत्य = नच्च (यहाँ ‘अ’ हो गया है)। ऋणम् = इण, ऋपि =
 इसि (यहाँ ‘इ’ हो गया है)। ऋतु = उतु, ऋपभ = उमभ (यहाँ ‘उ’
 हो गया है)।

१ पुष्पो रस्सो १,४।

२ परो दीघो १,१।

३ पञ्च पञ्चका वर्गा १,७।

४ विन्दु निग्राहीतं १,८।

ल, ऐ, औ पालि में नहीं होते ।

ऐ के स्थान में ए हो जाता है । जैसे—ऐरावण = एरावण, वैमानिक = वेमानिक, वैयाकरण = वेय्याकरण । कहीं-कहीं ऐ का इ तथा ई भी हो जाते हैं । जैसे—ग्रैवेय = गीवेय्य, सैन्धव = सिन्धव ।

औ के स्थान में ओ हो जाता है । जैसे—औदरिक = ओदरिक, दौवारिक = दोवारिक । कहीं-कहीं उ भी हो जाता है । जैसे—मौक्तिक = मुक्तिक, औद्धत्य = उद्धत्त ।

पालि-भाषा में 'श' और 'ष' नहीं होते, केवल 'स' ही होता है । सम्प्रति 'ळ' हिन्दी तथा सस्कृत में व्यवहृत नहीं है, किन्तु मराठी में इसका अव भी प्रचलन है ।

पालि में व्यञ्जन हलान्त नहीं होते और न तो पद के अन्त में स्थित निगृहीत म् होता है । पालि में विसर्ग और रेफ भी नहीं होते । रेफ का कहीं-कहीं लोप हो जाता है और कहीं-कहीं वह 'र' हो जाता है । जैसे—कर्म = कम्म, सर्व = सब्ब, तर्हि = तरहि, महार्ह = महारहो, आर्य = अरिय, सूर्य = सुरिय, क्रीत = कीत, भार्या = भरिया, पर्यादान = परियादान, प्रेत = पेत, समग्र = समग्ग, इन्द्र = इन्दो ।

दूसरा पाठ

शब्द-परिचय

विभक्ति

हिन्दी भाषा में आठ कारक होते हैं, किन्तु पालि में कारक सात ही माने जाते हैं। कारकों को ही पालि में 'विभक्ति' (= विभक्ति) कहते हैं। सम्बोधन कारक को कारक न कहकर उसे आल्पन कहते हैं। कारकों को विभक्ति के क्रम से इस प्रकार जानना चाहिए —

कारक	विभक्ति
१ कर्त्ता	पठमा
२ कर्म	दुतिया
३ करण	ततिया
४ सम्प्रदान	चतुर्थी
५ अपादान	पञ्चमी
६ सम्बन्ध	छट्ठी
७ अधिकरण	सत्तमी
८ सम्बोधन	आल्पन

जिस प्रकार हिन्दी में कारकों के चिह्न होते हैं, उसी प्रकार पालि में भी विभक्तियों के चिह्न होते हैं, जो सदा शब्दों के साथ लगे रहते हैं।

लिङ्ग

हिन्दी में केवल दो ही लिङ्ग होते हैं—पुर्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग, किन्तु पालि में तीन लिङ्ग होते हैं —

- (१) पुर्लिङ्ग
- (२) स्त्रीलिङ्ग
- (३) नपुंसकलिङ्ग

पुरुषवाची शब्दों को पुल्लिङ्ग कहते हैं और स्त्रीवाची शब्दों को स्त्रीलिङ्ग, किन्तु जो शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों नहीं होते हैं, वे नपुंसकलिङ्ग माने जाते हैं। जैसे—कुल, गेह, चित्त, मन, धन आदि। पालि भाषा पढ़ने पर इनका ज्ञान स्वतः धीरे-धीरे हो जाता है।

वचन

पालि में भी हिन्दी की भाँति दो ही वचन होते हैं—एकवचन, बहुवचन। संस्कृत में 'द्विवचन' भी होता है, किन्तु पालि में द्विवचन नहीं होता।

शब्द

हिन्दी की भाँति पालि में भी सार्थक शब्द के पाँच भेद होते हैं—संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, अव्यय। संज्ञा को पालि में 'नाम' कहते हैं।

रूप

विभक्तियों के लगने से शब्दों के जो रूप बनते हैं, उन्हीं का प्रयोग सर्वत्र होता है। यहाँ अकारान्त, पुल्लिङ्ग, संज्ञा शब्द 'बुद्ध' का रूप दिया जा रहा है.—

संज्ञा

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

बुद्ध

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	बुद्धो ^१	बुद्धा

१ कहीं-कहीं 'ओ' का 'ए' भी हो जाता है। जैसे—'वनप्पगुम्मे यथा फुस्सितग्गे'। अतः 'बुद्धो' का 'बुद्धे' भी रूप हो सकता है, किन्तु इसका प्रयोग कम देखा जाता है।

दुतिया	बुद्धं	बुद्धे
ततिया	बुद्धेन	बुद्धेहि, बुद्धेभि
चतुर्थी	बुद्धाय, बुद्धस्स	बुद्धानं
पञ्चमी	बुद्धा, बुद्धम्हा, बुद्धस्मा	बुद्धेहि, बुद्धेभि
छट्ठी	बुद्धस्स	बुद्धान
सप्तमी	बुद्धे, बुद्धम्हि, बुद्धस्मि	बुद्धेसु
आल्पन	बुद्ध, बुद्धा	बुद्धा

इन पदों का अर्थ हिन्दी में इस प्रकार होगा —

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	बुद्ध ने	बुद्धों ने
दुतिया	बुद्ध को	बुद्धों को
ततिया	बुद्ध से	बुद्धों से
चतुर्थी	बुद्ध के लिए	बुद्धों के लिए
पञ्चमी	बुद्ध से	बुद्धों से
छट्ठी	बुद्ध का, की, के	बुद्धों का, की, के
सप्तमी	बुद्ध पर, में	बुद्धों पर, में
आल्पन	हे बुद्ध !	हे बुद्धों ॥

इन अकारान्त पुलिट्ठ शब्दों के रूप भी 'बुद्ध' शब्द के समान ही होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
नर	मनुष्य	उरग	साँप
मनुस्स	,,	यक्ख	यक्ष
पुरिस	,,	देव	देवता
मनुज	,,	मीह	मिह
सुर	दिव्यता	गन्धर्व्व	गन्धर्व
नाग	साँप	मोण	कुत्ता

सुख	कुत्ता	लोक	ससार
आलोक	प्रकाश	संसार	”
संघ	सघ	गाम	गाँव
ओघ	बाढ	धम्म	धर्म
पुत्त	पुत्र	पमाद	देर
याचक	भिखारी	रुक्ख	वृक्ष
दारक	लढका	दास	दास
वाणिज	बनिया	भूपाल	राजा
कुमार	कुमार	नरपति	”
सुरिय	सूरज	अच्छ	भाछ

इनके अतिरिक्त जितने भी अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द होंगे, सबके रूप ‘बुद्ध’ शब्द के समान ही होंगे ।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

१. बुद्धस्स गामो । २. बुद्धान पुत्ता । ३. बुद्धेसु आलोको । ४. बुद्धग्हा लोको । ५. बुद्धेहि याचको । ६. सुखस्स धम्मो । ७. मनुस्सान दारका । ८. भूपालस्स मनुजा । ९. सघस्स पुरिसा । १०. सुरेहि असुरा ।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. बुद्ध के लिए । २. बुद्ध का पुत्र । ३. बुद्ध का धर्म । ४. बुद्ध से असुर । ५. बुद्ध में देवता । ६. भिखारियों का राजा । ७. कुमारों में लढका । ८. सूरज का आलोक । ९. बनियोंके लढके । १०. गाँव में बाढ ।

तीसरा पाठ

क्रिया

क्रिया के अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द को धातु कहते हैं ।
जैसे—भृ, पठ, गम, चज इत्यादि ।

रूप बनाने की सुविधा के लिए सभी धातुएँ ९ भागों में विभक्त हैं ।
प्रत्येक भाग को गण कहते हैं ।

काल

पालि में भी तीन काल होते हैं—वर्तमान काल, अनागत काल,
अतीत काल । वर्तमान (= वर्तमान) को 'पच्चुपन्न' भी कहते हैं
और अतीत (= भूत) को अप्पजतनी ।

पुरुष

पालि में पुरुष भी तीन ही होते हैं, किन्तु उनका नाम इस प्रकार
होता है —

१ अन्य पुरुष	=	पठम पुरुसि
२ मयम पुरुष	=	मड्डिम्मम पुरुसि
३ उत्तम पुरुष	=	उत्तम पुरुसि

तीनों पुरुषों के सर्वनाम

मा	=	व	तुम्हे	=	तुम लोग
ते	=	य	अहं	=	म
त्वं	=	त	मयं	=	हम लोग

सभी काल में धातु के रूप परस्सपद और अत्तनोपद दो प्रकार के होते हैं, किन्तु व्यवहार में अत्तनोपद के रूप बहुत कम देखे जाते हैं। परस्सपद का ही प्रयोग बहुधा होता है।

वत्तमान काल

‘पठ’ धातु

परस्सपद

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	पठति	पठन्ति
मज्झिम पुरिस	पठसि	पठथ
उत्तम पुरिस	पठामि	पठाम

अर्थ

पठति	=	पढ़ता है।	पठन्ति	=	पढ़ते हैं।
पठसि	=	पढ़ते हो।	पठथ	=	पढ़ते हो।
पठामि	=	पढ़ता हूँ।	पठाम	=	पढ़ते हैं।

नीचे दिए हुए धातुओं के रूप भी ‘पठ’ धातु के समान ही होंगे। ये धातुएँ भ्वादि गण के हैं :—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
भू	होना	भवति, भवन्ति
ह्रस्	हँसना	हसति, हसन्ति
रक्ख	रक्षा करना	रक्खति, रक्खन्ति
वद	बोलना	वदति, वदन्ति
पच	पकाना	पचति, पचन्ति
नम	नमस्कार करना	नमति, नमन्ति
गम	जाना	गच्छति, गच्छन्ति

दिस	देखना	पस्सति, पस्सन्ति
दिस	,,	दिस्सति, दिस्सन्ति
ठा	खडा होना	तिट्ठति, तिट्ठन्ति
सर	स्मरण करना	सरति, सरन्ति
याच	माँगना	याचति, याचन्ति
कन्द	रोना	कन्दति, कन्दन्ति
कम्प	काँपना	कम्पति, कम्पन्ति
चज	त्यागना	चजति, चजन्ति

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(क)

१ सो पठति । २ ते पठन्ति । ३ अह पठामि । ४ मय पठाम ।
५ त्व पठसि । ६ तुम्हे पठथ । ७ बुद्धो हसति । ८ दारका पचन्ति ।
९ अह पस्सामि । १० सो गच्छति । ११ मय गच्छाम । १२ याचको
कन्दति । १३ वाणिजा पस्सन्ति । १४ रुक्खो भवति ।

(ख)

१ नरो धम्म पठति । २ मनुस्सो भूपालो भवति । ३ पुरिसा गाम
गच्छन्ति । ४ मनुजो बुद्ध नमति । ५ सुरा गामे दिस्सन्ति । ६ नागो
देव नमति । ७ उरगा गामम्हा गच्छन्ति । ८ यक्खो रुक्खे तिट्ठति ।
९ देवा धम्म पस्मन्ति । १० सीहो सघ सरति । ११ गन्धर्वो दारक
याचति । १२ सोणा लोक चजन्ति । १३ सुनखो ओघे कम्पति । १४
आलोके नपालो तिट्ठति । १५ सघो बुद्ध सरति ।

(ग)

१ अह गाम गच्छामि । २ सो गामे धम्म पस्सति । ३ ते रुक्खेसु
आलोके पस्सन्ति । ४ भूपालो ससारे मनुस्से पस्सति । ५ दारकेसु वाणिजो
धम्म वदति । ६ याचको ओघे मुरिय पस्सति । ७ त्व गामे वाणिज

रक्खसि । ८. मय देवेसु याचका भवाम । ९. तुम्हे पुत्तान पमाद पस्सथ ।
 १०. सुरियो आलोक नरान चजति । ११. बुद्धा मनुजान धम्म वदन्ति ।
 १२. भूपाला वाणिजान गाम रक्खन्ति । १३. दासो मग्गे याचके पस्सति ।
 १४. कुमारा लोके भूपाला भवन्ति ।

(घ)

१ अह भूपालस्स पुत्तो गामे भवामि । २. त्व याचकेसु दासो धम्म
 रक्खसि । ३. मय नरान धम्मे गामेसु पस्साम । ४. सो नरो आलोके बुद्ध
 पस्सति । ५. मय ओघे रक्खेसु सुरिय पस्साम । ६. सो मनुस्सो गामग्हा
 गाम गच्छति । ७. सो याचको बुद्धस्स धम्म सरति । ८. अह गामे
 वाणिजस्स पुत्त पस्सामि । ९. सो भूपालान सघ आलोके सरति । १०.
 सुरियो लोके नरान आलोक चजति । ११. सो रक्खो गामे ओघेन कम्पति ।
 १२. वाणिजो गामेसु मनुस्सेहि धम्म सरति । १३. दारका आलोके बुद्धान
 धम्म पस्सन्ति । १४. भूपालो मनुस्सान गाम ओघेन रक्खति । १५. सो
 दारको सुरियस्स आलोके तिट्ठति ।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. मे धर्म को पढता हूँ । २. वह बुद्ध के धर्म को पढता है । ३.
 राजा भिखारियों की रक्षा करता है । ४. सिंह गाँव की रक्षा करता है ।
 ५. मैं बाढ़ में सूरज को देखता हूँ । ६. राजा कुमार को देखता है । ७.
 वह बुद्ध को नमस्कार करता है । ८. तू धर्म को देखते हो । ९. पेड़
 काँपता है । १०. लड़का गाँव में रोता है । ११. भिखारी गाँव को जाता
 है । १२. लड़के बाढ़ में खड़े होते हैं । १३. मैं राजा से पुत्र माँगता हूँ ।
 १४. बनिया गाँव में पकाता है । १५. दास राजा से गाँव माँगता है ।
 १६. पुत्र हँसता है । १७. वह दास रोता है । १८. देर होती है । १९.
 सिंह गाँव को जाता है । २०. बनिया आलोक में सूरज को देखता है ।
 २१. सब से कुत्ते को माँगता है । २२. लोक में आदमी होते हैं । २३.
 गन्धर्व गाँव में रोते हैं । २४. राजा लोग दिखाई देते हैं ।

चौथा पाठ

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

फल

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	फलं	फला, फलानि
द्वितीया	फलं	फले, फलानि
आलपन	फल, फला	फला, फलानि

शेष रूप 'बुद्ध' शब्द के समान होंगे ।

इन अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप भी 'फल' शब्द के समान ही होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
चित्त	चित्त	दान	दान
पुञ्ज	पुण्य	शील	शील
पाप	पाप	धन	धन
रूप	रूप	ज्ञान	ज्ञान
स्रोत	कान	लोचन	आँख
घ्राण	ग्राह	मूल	जट
मुख	मुख	कुल	कुल
दुःख	दुःख	बल	बल
कारण	कारण	जाल	जाल
मुख	मुख	घञ्ज	वान
जल	जल	हिरञ्ज	मोना

सुसान	श्मशान	वन	जगल
हृदय	हृदय	वत्थ	वस्त्र
नयन	आँख	यान	रथ
ओदन	भात	सोपान	सीढ़ी
मरण	मृत्यु	आण	शान
नगर	नगर	छत्त	छाता
भत्त	भात	उदक	पानी
गेह	घर	पोत्थक	पुस्तक
उरयान	बाग	सरीर	शरीर

‘भ्वादि गण’ के इन धातुओं के रूप भी ‘पठ’ धातु के समान ही होंगे :—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
सुच	शोक करना	सोचति, सोचन्ति
जुत	प्रकाश करना	जोतति, जोतन्ति
मुद	प्रसन्न होना	मोदति, मोदन्ति
सुभ	शोभित होना	सोमति, सोमन्ति
रुच	पसन्द करना	रोचति, रोचन्ति
पा	पीना	पिबति, पिबन्ति
दह	जलाना	डहति, डहन्ति
”	”	उतति, उहन्ति
जर	पुराना होना	जीरति, जीरन्ति
मर	मरना	मरति, मरन्ति
”	”	मीयति, मीयन्ति
रुद	रोना	रोदति, रोदन्ति

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(क)

१. फल रक्खति । २. फलानि सोभन्ति । ३. फलेषु जलं दिस्सति ।

४ भूपालम्स चित्त रोदति । ५ सुनखो ओदन रोचति । ६ नगरे वाणिजो मरति । ७ सुसाने सीहो जल पिवति । ८ गेहे नरो हसति । ९ दारका उय्यानेसु रोदन्ति । १० उय्याने रुक्खा कम्पन्ति । ११ याचको गामे भत्त याचति । १२ पुरिसस्स हृदये दुक्ख दिस्सति । १३ अह मुख रोचामि । १४ उरगो वन गच्छति । १५ यक्खो पोत्थकं पठति ।

(ख)

१ पुत्तस्स नयनानि रूपेसु जोतन्ति । २ नगरेसु नरा भत्त पचन्ति । ३ त्व गेहे सुनखस्स मरण पस्ससि । ४ अह धम्मेसु मोदामि । ५ रुक्खस्स मूल जीरति । ६ मुखेन सो नरो जल पिवति । ७ जालेन त्व रूप रुक्खसि । ८ दासा नगरे गेहानि दहन्ति । ९ तुम्हे रुक्ख डहथ १० ते जना गेहे मीयन्ति । ११ यानेहि कुमारा उय्यान गच्छन्ति । १२ असुरा हिरज्ज रोचन्ति । १३ सोपानेन रुक्खेसु फलानि पस्सन्ति । १४ पुत्ता छत्तेन जल पिवन्ति । १५ पुज्ज सुखस्स कारण भवति ।

(ग)

१ अह कुमारस्स छत्त नगरे पस्सामि २ सो याचको गेहेसु दारकंहे भत्त याचति । ३ यक्खस्स चित्त उय्यानस्स रुक्खेसु भवति । ४ तुम्हे बुद्धस्स धम्म हृदये पस्सथ । ५ धम्मो लोके नरान पापेहि रुक्खति । ६ ससार मनुस्सा दाने पुज्ज पस्सन्ति । ७ दास ! त्व दुक्ख लोके रोचसि ? ८ देव ! अह नगरेसु धन पस्सामि ९ ते सोणा गेहे भत्त रोचन्ति । १० सो नरो गेहे वत्थेन सोभति । ११ दारकस्स जाण भूपालम्स गेहे पोत्थकेसु जोतति । १२ लोके नरान सररीरेन मुख भवति । १३ चित्तेन ते दुक्क सरन्ति । १४ सुरियस्स आलोके सो पुरिसो वज्ज डहति । १५ सुनखम्स मील लोके दुक्कम्स कारण भवति ।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. लट्ठ की जॉय हैमती है । २ म नगर में भिखारी को देखता ह । ३ बनिश उय्यान के पेड़ों में रुक्ख देखते ह । ४ तुम्ह में बुद्ध

धर्मको पसन्द करता है । ५. राजा पुत्र को भिखारी से माँगता है । ६. तू नगर से बाढ़ देखते हो । ७. मैं पुस्तक में प्रसन्न होता हूँ । ८. देवता का गरीर वन में शोभता है । ९. कुत्ते की आँख दिखाई देती है । १०. मनुष्य लोक में सूरज का आलोक पसन्द करते हैं । ११. पुण्य को राजा लोग छोड़ते हैं । १२. नगर में गन्धर्व रोता है । १३. वह घर जा रहा है । १४. यक्ष बाग में सूरज के प्रकाश में फलों को देखता है । १५. बनिया घर से भात को माँगता है । १६. पेड़ की जड़ पुरानी होती है । १७. राजा का घर नगर में जलता है । १८. कुमार की आँख में राजा देखता है । १९. दास बाग के पेड़ों में फलों को देखते हैं । २०. बुद्ध के धर्म से ससार में सुख होता है । २१. मनुष्यों के लिए पाप दुःख का कारण होता है । २२. मनुष्य नगर में शीलों में प्रसन्न होते हैं । २३. बुद्ध का धर्म लोक में प्रकाशित होता है । २४. पाप से ससार में मनुष्य को दुःख होता है । २५. मैं बुद्ध को नमस्कार करता हूँ । २६. राजा लोग ससार में सुख को देखते हैं । २७. भिखारी नगर में लड़कों से पानी माँगता है । २८. यक्ष श्मशान में भात पकाता है । २९. घर में पुरुष दुःख से शोक करता है । ३०. मैं धर्म को नमस्कार करता हूँ । ३१. वह सध को नमस्कार करता है । ३२. तुम लोग बुद्ध को नमस्कार करते हो ।

पाँचवाँ पाठ

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

लता

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	लता	लता, लतायो
दुतिया	लतं	लता, लतायो
ततिया	लताय	लताहि, लताभि
चतुर्थी	लताय	लतानं
पञ्चमी	लताय	लताहि, लताभि
छट्ठी	लताय	लतानं
सप्तमी	लतायं, लताय	लतासु
आलपन	लते	लता, लतायो

इन आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी 'लता' शब्द के समान ही होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अच्छरा	अप्सरा	जटा	जटा
अम्मा ^१	माता	तण्डा	तृणा
गाथा	श्लोक	नावा	नौका

१ 'अम्मा' शब्द के रूप में आलपन एकवचन में 'लते' की भाँति 'अम्मे' न होकर 'अम्मा' ही होता है । जैसे—भोति अम्मा । किन्तु अन्य स्वर का विकल्प से टप्प हो जाता है । जैसे—भोति अम्म, अम्मा ।

चन्दिमा	चन्द्रमा	पटिपदा	मार्ग
छाया	छाया	मेत्ता	मैत्री
सुणिसा	पतोहू	सभा ^१	सभा
परिसा	परिषद्	साला	घर
भरिया	छो	गीवा	गला
जिह्वा	जीभ	साखा	हाली
माला	माला	तारका	तारा
देवता	देवता	वालुका	वालू
विज्जा	विद्या	कञ्जा	कन्या
वीणा	वीणा	सद्धा	श्रद्धा
पञ्जा	प्रज्ञा	कह्वा	सन्देह
माया	माया	सुरा	शराब
सेना	सेना	दिसा	दिशा
मिक्षा	मिक्षा	वनिता	स्त्री

‘भ्वादि गण’ के इन धातुओं के रूप भी ‘पठ’ धातु के समान ही होंगे —

धातु	अर्थ	पठम पुरिसमें प्रयोग
नि+सद्	बैठना	निसीदति, निसीदन्ति
ठा	खड़ा होना	उट्टहति, उट्टहन्ति
नि + कम	निकलना	निक्खमति, निक्खमन्ति
सं + आ + दा	ग्रहण करना	समादियति, समादियन्ति

१. ‘सभा’ और ‘परिसा’ शब्दों का सत्तमी एकवचन में ‘सभर्ति’ और ‘परिसर्ति’ रूप भी होता है। यथा—सभर्ति, सभायं, सभाय । परिसर्ति, परिसायं, परिसाय ।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(क)

१ लता रुक्मिणी कम्पति । २ लतासु फलानि दिस्सन्ति । ३ लतादि रुक्मिणी सोभन्ति । ४ अच्छरायो हसन्ति । ५ अम्मा पुत्तस्स मुख पस्सति । ६ सो दारको गाथायो पठति । ७ चन्दिमा लोके जोतति । ८ छायायो गेहे भवन्ति । ९ सुणिस्सा उट्ठहति । १० नावा जले गच्छति । ११ अह मील समादियामि । १२ वनितायो सीलानि समादियन्ति । १३ सो भूपालो बने निसीदति । १४ भरिया नगरम्हा निक्खमति । १५ सेनायो गामेसु निसीदन्ति ।

(ग)

१ अम्मा कुमारस्स भत्त पचति । २ गाथायो पोत्थकसु अह पस्सामि । ३ मनुस्सान जयायो कज्जायो रोचन्ति । ४ लोके नरान तण्हाय दुक्ख भवति । ५ बुद्धस्स पटिपद मय रोचाम । ६ मेत्ताय मसारे जना मोदन्ति । ७ परिगति बुद्धो निसीदति । ८ सभामु भरियायो दिस्सन्ति । ९ लतान माला रुक्मिणी कम्पति । १० वीणा दारकस्स गेहे दिस्सति । ११ पज्जाय सो नरो जातति । १२ मालामु दारका भवन्ति । १३ बुद्धा भिक्खाय गाम गच्छति । १४ मा याचका वाट्ठकाय निमीदति । १५ लोके पज्जाय जना दुक्ख पस्सन्ति ।

पालि में अनुवाद कीजिए :—

१ लताओं में घर सोभता है । २ अम्मा नगर में दिखाए लता
३ । ३ माल में चन्द्रमा का देखा जाता है । ४ पेड़ की छाया में मनुष्य
उठता है । ५ बड़े जहाज में भात की रक्षा करता है । ६ स्त्री की कृपा
दिखाए देती है । ७ नौका जल में जाती है । ८ मार्गों में मनुष्य गेहे
जाता है । ९ लता के सुगन्ध होता है । १० पत्तों पर बैठती है । ११ परिदृश्य

में स्त्री रोती है । १२. जीम वृष्णा पसन्द करती है । १३. पुत्र के गले में
 माला शोभती है । १४. देवता नगर से निकलते हैं । १५. तू विद्या पढते
 हो । १६. वह वीणा के लिए शोक करता है । १७. मनुष्यों की प्रजा
 पुण्य देखती है । १८. सेनायें घरों में जल पीती हैं । १९. भिखारी भिक्षा
 के लिए नगर में रोता है । २०. सभाओं में बुद्ध लोग धर्म देखते हैं ।
 २१. लहके की गर्दन उठती है । २२. पेड़ों से डालियाँ निकलती हैं ।
 २३. चन्द्रमा के आलोक में तारे शोभा देते हैं । २४. बालू में राजा की
 नौका जाती है । २५. कन्यायें घर में बैठती हैं । २६. श्रद्धासे धर्म होता
 है । २७. कन्या को सन्देह होता है । २८. सेना नगर में शराब पीती है ।
 २९. बाग में स्त्री खड़ी होती है । ३०. दिशाएँ शोभा देती हैं ।

छठाँ पाठ

इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

मुनि

एकवचन

बहुवचन

पठमा	मुनि	मुनी, मुनयो
दुतिया	मुनि	मुनी, मुनयो
ततिया	मुनिना	मुनीहि, मुनीभि
चतुर्थी	मुनिनो, मुनिस्स	मुनीनं
पञ्चमी	मुनिना, मुनिम्हा, मुनिस्मा	मुनीहि, मुनीभि
छट्ठी	मुनिनो, मुनिस्स	मुनीनं
सप्तमी	मुनिम्हि, मुनिस्मि	मुनिसु, मुनीसु
आलपन	मुनि, मुनी	मुनी, मुनयो

इन इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप भे 'मुनि' शब्द के समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पाणि	हाथ	गण्ड	गोंठ
मुट्ठी	मुट्ठी	कुच्छि	पेट
मालि	धान	वीहि	धान
व्याधि	रोग	सन्धि	जोड़
रासि	टर	दीपि	चीता
रमि'	कृपि	मणि	मणि

१ 'इसि' शब्द का रूप पठमा एकवचन में विकल्प से 'इसे' होता है और दुतिया बहुवचन में भी। जैसे—समणे ब्राह्मणे वन्दे मरुपन्त्ररणे इमे ।

गिरि	पहाड	रवि	सूरज
कवि	कवि	कपि	वन्दर
असि	तलवार	मसि	स्याही
निधि	खजाना	विधि	विधि
अहि	सोंप	किमि	कीड़ा
पति	पति	अरि	शत्रु
जलनिधि	समुद्र	गहपति	गृहपति
अधिपति	राजा	नरपति	राजा
सारथि	सारथी	जलधि	समुद्र
आति	रिस्तेदार	अग्नि ^१	आग

‘रुधादि गण’ के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे .—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
रुध	रोकना	रुन्धति, रुन्धन्ति
भुज	खाना	भुञ्जति, भुञ्जन्ति
कत	काटना	कन्तति, कन्तन्ति
गह	पकड़ना	गण्धति, गण्धन्ति
छिद्	काटना	छिन्दति, छिन्दन्ति
बध	बाँधना	बन्धति, बन्धन्ति
भिद्	फोड़ना	भिन्दति, भिन्दन्ति
मुच	छोड़ना	मुञ्चति, मुञ्चन्ति
युज	जोड़ना	युञ्जति, युञ्जन्ति
लिप	लेपना	लिम्पति, लिम्पन्ति
सिच	सीचना	सिञ्चति, सिञ्चन्ति
हिंस	हिंसा करना	हिंसति, हिंसन्ति

१. ‘अग्नि’ शब्द का रूप पठमा एकवचन में विकल्प से ‘अग्निनि’ भी होता है ।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए.—

(क)

१ मुनि निधि गण्ढति २ मुनिनो मुट्टिस्मि मणि सोभति । ३ सो नूनान रुक्म्य छिन्दति । ४ जलनिधिम्हि नावा गच्छति । ५ सारथि याने निरसदति । ६ दारको वीहि छिन्दति । ७ अह सालि गण्ढामि । ८ व्याधि मनुस्से हिसति । ९ सो पाणिना दारक गण्ढति । १० कवि गण्ठि मुञ्जति । ११ भरियाय कुच्छिन्मि व्याधि भवति । १२ वाणिजस्म बाह्यो नरा कन्तन्ति । १३ नावाय सन्धि पम्सन्ति । १४ वीहीन रामि अविपति वन्वति । १५ अहि गामे जल पिवति ।

(ग)

१ इसिना पुत्तो धम्म पठति । २ गिरिम्हि इमया रुक्म्य सिञ्चन्ति । ३ कविना अग्गा गेह भिन्दति । ४ दासो असिना गीव छिन्दति । ५ नरपति निमि रम्पति । ६ पति भरिय गण्ढति । ७ अधिपतयो दासे हसन्ति । ८ सारथीहि नरा वर गण्ढन्ति । ९ जातयो मायामु लिम्पन्ति । १० दीपयो वनेसु मुनये मुञ्जन्ति । ११ मणयो गेहसु जोतन्ति । १२ रवि मनुस्मान आलोक्कन सिञ्चति । १३ वपयो वने फलानि मुञ्जन्ति । १४ ममि वत्थ छिन्दति । १५ नरा विविता धम्म समादियति । १६ किमयो पत्तेसु दिम्मन्ति । १७ अरया मन्नि भि दन्ति । १८ गण्ढतिनो भरिया गण्ठि मुञ्चति । १९ नरपति मम्म युञ्जति । २० अग्गा गेह गण्ढति ।

पाठि में अनुवाद कीजिए —

पर वस्त्र दिखाई देता है । १० हम लोग धान बाँध रहे हैं । ११. जोड़ों को तुम लोग काटते हो । १२ धन के ढेर से मिखारी माँगता है । १३. ऋषि लोग फलों को खाते हैं । १४. वह पहाड़ पर पानी रोकता है । १५ कवि की स्त्री वस्त्र को काटती है । १६. तलवार से सेनाएँ मनुष्यों की हिंसा करती हैं । १७. साँप खजाने की रक्षा करता है । १८. पति स्त्री को छोड़ता है । १९. समुद्र में नौका जाती है । २०. राजा लोग दुःख में रोते हैं । २१ सारथी पेड़ को काटता है । २२. रिस्तेदार कन्या को देखते हैं । २३. चीता कुत्तों को पकड़ता है । २४. मणि से आलोक निकलता है । २५ सूरज ससार में प्रकाश छोड़ता है । २६. वन्दर पेड़ों पर फलों को खाते हैं । २७. वह स्याही को वस्त्र में लेपता है । २८. राजा विधि से घर छोड़ता है । २९. कीड़े फलों में होते हैं । ३०. शत्रु राजा को बाँधते हैं । ३१ गृहपति की स्त्री मणि को फोड़ती है । ३२ आग नगर को घेरती है ।

सातवाँ पाठ

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

अट्टि (=हड़ी)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	अट्टि	अट्टीनि, अट्टी
द्वितीया	अट्टि	अट्टानि, अट्टी
आल्पन	अट्टि	अट्टीनि, अट्टी

शप रूप 'मुनि' शब्द के समान होंगे ।

इन शब्दों के रूप भी 'अट्टि' शब्द के ही समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
दधि	दही	सपि	बी
वारि	पानी	सत्थि	जॉव
अक्खि	आँख	अच्चि	लपट

'दिवादि गण' के इन धातुओं के रूप नीचे लिख प्रकार से होंगे —

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
दिव	गलना	दिधति, दिधन्ति
नम	नष्ट होना	नन्मति, नन्मन्ति
युध	लड़ाई करना	युधति, युधन्ति
म्व	अच्छा लगना	म्वति, म्वन्ति
कुध	गुन्मा होना	कुधति, कुधन्ति
कुप	आप करना	कुपति, कुपन्ति
गा	गाना	गायति, गायन्ति

घा	सूँघना	घायति, घायन्ति
छिद	टूटना	छिज्जति, छिजन्ति
झा	ध्यान करना	झायति, झायन्ति
नहा	नहाना	नहायति, नहायन्ति
बुध	समझना	बुज्झति, बुज्झन्ति
लुभ	लोभ करना	लुब्भति, लुब्भन्ति
सम	शान्त होना	सम्मति, सम्मन्ति
सिव	सीना	सिब्वति, सिब्वन्ति
सुध	शुद्ध होना	सुज्झति, सुज्झन्ति
सुस	सुखना	सुस्सति, सुस्सन्ति
हन	मारना	हज्जति, हज्जन्ति

कुछ आवश्यक शब्द

शब्द	अर्थ
अत्थि	है
नत्थि	नहीं है
सन्ति	हैं
न	नहीं

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(क)

१. कुमारस्स सत्थिनो अट्ठीनि छिज्जन्ति । २. ते सुनखस्स अट्ठिना दिव्वन्ति । ३. जलनिधिग्घि वारि नस्सति । ४. अट्ठीसु व्याधि अत्थि । ५. अग्गिनो अन्वि गेह डहति । ६. अक्खीहि सुरिय पस्सति । ७. सुनखो दधि रोचति । ८. सप्पिस्मि जल अत्थि । ९. सेना नगरे युज्झति । १०. भूपालस्स भत्त रुच्चति । ११. याचको दारकेन कुप्पति । १२. अह न कुज्झामि । १३. त्व धम्म गायसि । १४. सो उदक घायति । १५. रुक्खो ओधेन छिज्जति ।

(ख)

१ मुनयो वनेषु ज्ञायन्ति । २ वनितायो उदके नहायन्ति । ३ तुम्हे धम्म बुज्झथ । ४ यक्खस्स चित्त उय्याने लुब्भति । ५ मुनिनो व्यासयो सम्मन्ति । ६ भरिया पुत्तम्म कथ सिञ्चति । ७ मुनयो पुज्जेन सुज्झन्ति । ८ सा वनिता दुक्खेन सुम्सति । ९ व्याधि मनुस्से हज्जति । १० लोके सुख नत्थि । ११ गामे वाणिजस्स अम्मा अत्थि । १२ भृपालन्स भरियायो गेहे सन्ति । १३ सो नरो याचको न भवति । १४ मय धम्म वढाम । १५ तुम्हे दवीनि मुज्झथ । १६ अह बुद्ध सरण गच्छामि । १७ त्व धम्म सरण गच्छसि । १८ सो सध सरण गच्छति । १९ लोके मयन्स सरणे सुख अत्थि । २० ते मुनयो वग्गेन न सुज्झन्ति ।

पालि में अनुवाद कीजिए.—

१ लटक की हड्डी टूटती है । २ दास हड्डी से खेलता है । ३ हड्डी में राग दिखाई देता है । ४ हड्डियों में मैं नहीं खेलता हूँ । ५ दही में पानी है । ६ जल में साँप नहा है । ७ आँख से सरज नहीं दिखाई देता है । ८ लपट घर में उठती है । ९ घी घर में है । १० जाँघ की हड्डी टूटता है । ११ राग नष्ट हात है । १२ लटक घर में लटकाई करत है ।

आठवाँ पाठ

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

रत्ति (=रात)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्यो
द्वितीया	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्यो
तृतीया	रत्तिया, रत्या	रत्तीहि, रत्तीभि
चतुर्थी	रत्तिया, रत्या	रत्तीनं
पञ्चमी	रत्तिया, रत्या	रत्तीहि, रत्तीभि
छट्ठी	रत्तिया, रत्या	रत्तीनं
सप्तमी	रत्तियं, रत्यं, रत्या, रत्ति, रत्तो, रत्तिया	रत्तीसु, रत्तिसु
आलपन	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्यो

इन शब्दों के रूप भी 'रत्ति' शब्द के समान ही होंगे :—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
युत्ति	युक्ति	तित्ति	तृप्ति
वुत्ति	जीवन-वृत्ति	खन्ति	सहनशीलता
कित्ति	कीर्ति	सन्ति	शान्ति
मुत्ति	मुक्ति	सिद्धि	सिद्धि
सुद्धि	शुद्धि	बोधि	ज्ञान
इद्धि	वृद्धि	भूमि	भूमि
वुद्धि	वृद्धि	जाति	जन्म

बुद्धि	बुद्धि	पीति	प्रीति
नन्दि	तृष्णा	सन्धि	मेल
कोटि	करोड	दिट्ठि	दृष्टि
बुद्धि	वृष्टि	तुट्ठि	सन्तोष
यट्ठि	लाठी	पालि	पक्ति
पन्ति	पक्ति	सति	स्मृति
ध्रुलि	धूल	अंगुलि	अगुली
अटवि	जगल	असनि	बिजली
आलि	सखी	चुति	मृत्यु
दुन्दुभि	बाजा	पत्ति	पैदल सेना
कन्ति	शोभा	दोणि	ढोंगी
नाभि	नाभी	रसि	रश्मि
कैलि	क्रीडा	गति	गमन
विति	वीरज	युवति	तरुणी
रुचि	रुचि	सुगति	अच्छी गति

‘तुदादि गण’ के इन वातुओ के रूप नीचे लिखे प्रकार में होंगे —

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
तुद	पीटा करना	तुदति, तुदन्ति
कुस	तृणा	कुसति, कुमन्ति
मुस	चुराना	मुसति, मुमन्ति
लिख	लिखना	लिखति, लिखन्ति
मुप	मेघना	मुपति, मुपन्ति
प+विम	धुमना	पविमति, पविमन्ति
चिद	भगता	चिन्दति, चिन्दन्ति
कुग	कटकना	कुगति, कुगन्ति

नुद	दूर करना	नुदति, नुदन्ति
खिप	फैंकना	खिपति, खिपन्ति
गिल	निगलना	गिलति, गिलन्ति
चि + किर	छोंटना	विकिरति, विकिरन्ति
नि + गिर	निगलना	निगिरति, निगिरन्ति

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क)

१. रत्तिय कवि पोत्यक लिखति । २. अटविय दीपयो भवन्ति । ३. रत्तिय चन्दिमाय आलोको गेहे भवति । ४. युत्तिया सा वनिता भक्त गिलति । ५. कुमारस्स वुत्तिय कङ्खा अत्थि । ६. मुनिनो कित्ति लोके अत्थि । ७. अह व्याधिना दुक्खं फुसामि । ८. नरा ससारे मुत्तिं चजन्ति । ९. गेहेसु तित्ति नत्थि । १०. दारको खन्तिया सुख विन्दति । ११. अह सन्ति विन्दामि । १२. मुनिनो सिद्धिया कङ्खा नत्थि । १३. सुद्धीहि जना सुज्झन्ति । १४. इद्धिया इसयो नगर गच्छन्ति । १५. धनेन लोके बुद्धि भवति ।

(ख)

१. कुमारो यट्ठीहि सुनख नुदति । २. युवतिया पत्तिनो अम्मा भक्तं खिपति । ३. दोणि जलधिम्हि विकिरति । ४. सो दारको दधिं निगिरति । ५. भूपालो गेह पविसति । ६. युवति वने सुपति । ७. केलिय वाणिजो दुन्दुभिं मुसति । ८. यक्खो दुक्ख फुसति । ९. सारथिनो कुच्छिस्मिं नुदति । १०. अगुलीसु व्याधि नत्थि । ११. मय वोधिं फुसाम । १२. सो बुद्ध न सरति । १३. वनिता धम्म वदति । १४. इसयो अटवीसु सन्ति । १५. गेहेसु दारका भक्त मुज्झन्ति । १६. अम्मा दधि गण्हति । वाणिजो पोत्यक लिप्पति ।

पालि में अनुवाद कीजिए :—

१ रात में माता पुत्र को छूती है । २ ऋषि लोग जंगल में बसते हैं । ३ जीवन-वृत्ति के लिए मैं भात खाता हूँ । ४ यक्ष युक्ति जानता है । ५ कीर्ति से मुख मिलता है । ६ दास घर में दुःख भोगता है । ७ लटका धन छींटता है । ८ स्त्री घर में सोती है । ९ लता पेड़ से निकलती है । १० बुद्ध पुस्तक नहीं लिखते हैं । ११ युवतियाँ लाठियों को देखती हैं । १२ मेना की पत्ति नगर में जाती है । १३ जंगल से चीता नगर में प्रवेश करता है । १४ लड़के पत्ति में खड़े हैं । १५ मुनि लोग ध्यान करते हैं । १६ सरज की रश्मि राजा को स्पर्श कर रही है । १७ वृष्टि का पानी घर को सींचता है । १८ बूल घर में बिखर रही है । १९ स्त्री की सग्नियाँ गाती हैं । २० जंगल में सिंह दुःख भोगता है । २१ साँपों का राजा मरता है । २२ आदमी को नुष्टि नहीं होती है । २३ वह लपटी में बन्दर को पकड़ता है । २४ बिजली के आलोक में आदमी दिखाई देता है । २५ टोपी समुद्र में प्रवेश कर रही है । २६ सुगति में दुःख नहीं है । २७ लटके की नाभी में राग है । २८ मैं घर जा रहा हूँ ।

नवाँ पाठ

ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

दण्डी (=सन्यासी)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	दण्डी	दण्डी, दण्डिनो
दुतिया	दण्डिनं, दण्डि	दण्डी, दण्डिनो, दण्डिने
ततिया	दण्डिना	दण्डीहि, दण्डीभि
चतुर्थी	दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीनं
पञ्चमी	दण्डिना,, दण्डिस्मा, दण्डिम्हा	दण्डीहि, दण्डीभि
छट्ठी	दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीनं
सत्तमी	दण्डिनि, दण्डिम्हि, दण्डिस्मिं	दण्डिसु, दण्डीसु
आल्पन	दण्डि, दण्डी	दण्डी, दण्डिनो

इन शब्दों के रूप भी 'दण्डी' शब्द के ही समान होंगे .—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
करी	हाथी	चक्री	चक्रवाला
कामी	कामी	चागी	त्यागी
कुट्टी	कोढ़ी	जटी	जटाधारी
कुसली	कुशली	जाणी	जानी
गणी	गणवाला	दन्ती	हाथी
दाठी	बाघ	दीर्घजीवी	दीर्घजीवी
धम्मवादी	धर्मवादी	धम्मी	धर्मी

पक्खी	पक्षी	पापकारी	पापी
बल्ली	बलवान्	भागी	भागवाला
भोगी	भोग करनेवाला	माली	माली
मूसली	मसल धारण करनेवाला	योगी	योगी
वम्मी	वस्त्रवाला, सापही	संधी	सववाला
सामी	स्वामी	सिखी	मोर
सीघयायी	शीघ्र जानेवाला	सुखी	सुखी
मन्ती	मन्त्री	धजी	व्यजावाला
छत्ती	छत्र धारण करनेवाला		

‘तनादि गण’ के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे—

धातु	अर्थ	पठम पुग्लिस् मे प्रयोग
तन	फैलाना	तनोति, तनोन्ति
सक	सकना	सक्कोति, सक्कोन्ति
वन	मॉगना	वनोति, वनोन्ति
मन	जानना	मनोति, मनोन्ति
आप	पाना	आपोति, आपोन्ति
कर	करना	करोति, करोन्ति

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१ दाटी मग्ग गच्छति । २ करिनो कदल्लियो नुवन्ति । ३ कामी पुग्गिमा कटे (= चटाईयाँ) तनोन्ति । ४ कुट्टी आमने निमीदित्वा भक्तं प्राचक्षते । ५ पुम्ली पुत्तं कत्वा मग्ग आपोति । ६ गणिनो जनान् चित्ताति जानति । ७ चम्भी गत्तानि टुनानि । ८ चागी मनानि न दण्डते । ९ उट्ठिमा मग्ग गे न वसति । १० जाणा पुग्गिमा मग्ग मग्गं न व । ११ दाटी मग्गं वणिक्कामि । १२ दाटी मग्गं वणिक्कामि ।

खादन्ति । १३. पक्खिनो आकासे उड्डन्ति । १४. बलिनो दुव्वले जने
न पहरन्ति । १५. भोगी भोगे इच्छति । १६. मूसली दण्डीहि न भायति ।
१७. वम्मी भूपाल रक्खति । १८. सामी भरिय अप्पोति । १९. सीघयायी
खिप्पं नगर गच्छति । २०. सिखी पक्खे पसारेत्वा भित्ति न च्छति ।
२१. योगी ज्ञान करोति । २२. सुखी सुख मनोति । २३. धजी युद्धभूमिं
गन्त्वा विराजति । २४. माली पुष्प गण्हति । २५. पापकारी निरय
उप्पजति ।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. दण्डी गाँव में जाता है । २. सिपाही युद्ध करता है । ३. राजा
बलवान् मनुष्यों को चाहता है । ४. हाथी गन्दगी (= मलानि) नहीं
फैलाते हैं । ५. कामी धन चाहता है । ६. कोढ़ी भीख माँगता है । ७.
कुशली पुण्य करता है । ८. गणवाला गण को बढ़ाता है । ९. चक्रवाला
पानी पीता है । १०. त्यागी पुरुष ग्राम को छोड़ता है । ११. जटाधारी
लोग वन में घूमते हैं । १२. जानी कभी (= कदापि) रोते नहीं हैं ।
१३. हाथी जंगलों में विचरण करते हैं । १४. बाघ हाथी को मारते हैं ।
१५. पक्षी आकाश में शब्द करते हैं । १६. सिपाही नगर में टहलता है
(= चक्कमति) । १७. मंत्री राजा से धन माँगता है । १८. मोर दीवार
पर बैठा है । १९. ध्वजाधारी आगे-आगे (= पुरतो) जाता है । २०.
योगी आसन पर ध्यान करता है । २१. माली माला बनाता है । २२.
पापी लोग पाप फैलाते हैं । २३. धर्मा धर्म बढ़ाते हैं । २४. सुखी सुख
पाते हैं । २५. स्वामी उद्यान में घर बनाते हैं ।

दसवाँ पाठ

ईकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

सुखकारी (= सुख देने वाला)

एकवचन

बहुवचन

पठमा	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी
दुतिया	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी
आल्पन	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी

येष रूप 'दण्डी' शब्द के समान होंगे ।

'चुरादि गण' के इन वातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे.—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस एकवचन में प्रयोग
अज्ज	कमाना	अज्जेति, अज्जयति
ईर	हिलना	ईरेति, ईरयति
कण्ण	मुनना	कण्णेति, कण्णयति
कथ	कहना	कथेति, कथयति
क्वित्त	कीर्तन करना	क्वित्तेति, क्वित्तयति
गण	गिनना	गणेति, गणयति
गन्थ	गंधना	गन्थेति, गन्थयति
चिन्त	विचारना	चिन्तेति, चिन्तयति
चुण्ण	चर-चूर करना	चुण्णेति, चुण्णयति
चुर	चुराना	चोरेति, चोरयति
छट्ठ	पकना	छट्ठेति, छट्ठयति
झप	झलना	झपति, झापयति
पिण्ड	पिण्ड बनाना	पिण्डेति, पिण्डयति

पुस	पोसना	पोसेति, पोसयति
पूज	पूजा करना	पूजेति, पूजयति
मन्त	सलाह करना	मन्तेति, मन्तयति
तक्क	तर्क करना	तक्केति, तक्कयति
तीर	पूरा करना	तीरेति, तीरयति
दिस	उपदेश करना	देसेति, देसयति
वन्द	वन्दना करना	वन्देति, वन्दयति
वण्ण	प्रशसा करना	वण्णेति, वण्णयति

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. सुखकारि धन अज्जेति । २. सुखकारिनो खणं (= धण) न गणेन्ति । ३. वायुना रुक्खो ईरेति । ४. ते धम्म कण्णेन्ति । ५. भूपालो नीति कयेति । ६. सुनखो भत्त चोरेति । ७. दारका पुप्फानि गन्थेन्ति । ८. इत्थी सक्खर चुण्णेति । ९. भिक्खु अत्तनो किलेसे (= क्लेशों को) ज्ञापेति । १०. सो भत्त पिण्डेति । ११. वाणिजो भरिय पोसेति । १२. भिक्खवो पुप्फेहि बुद्ध पूजेन्ति । १३. ते रत्तिय मन्तेन्ति । १४. अहं बुद्धे वन्दामि । १५. बुद्धो धम्म देसेति ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. लोग धर्म की वन्दना करते हैं । २. चोर धन को चुराते हैं । ३. भिक्षु धर्म का उपदेश करता है । ४. उपासक भोजन-दान देते हैं । ५. लडका भिक्षु से तर्क करता है । ६. भिखारी धन कमाता है । ७. वह अपना (= अत्तनो) वस्त्र फेंकता है । ८. सिपाही किसान की झोंपड़ी (= कुटि) जलाता है । ९. मैं अपना काम पूरा करता हूँ । १०. पेड़ का पत्ता (= पण्ण) हिलता है । ११. लोग पण्डित की प्रशसा करते हैं । १२. विद्वान् (= पण्डिता) सलाह करते हैं । १३. स्वामी स्त्री को पोसता है । १४. वे बुद्ध का कीर्तन करते हैं । १५. हाथी घर को चूर-चूर करता है ।

ग्यारहवाँ पाठ

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

इत्थी (= स्त्री)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	इत्थी	इत्थी, इत्थियो
द्वितीया	इत्थियं, इत्थिं	इत्थी, इत्थियो
तृतीया	इत्थिया	इत्थीहि, इत्थीभि
चतुर्थी	इत्थिया	इत्थीन
पञ्चमी	इत्थिया	इत्थीहि, इत्थीभि
छट्ठी	इत्थिया	इत्थीनं
सप्तमी	इत्थियं, इत्थिया	इत्थीषु
आलपन	इत्थि	इत्थी, इत्थियो

इन शब्दों में 'इत्थी' शब्द के ही समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
'नदी'	नदी	पाटली	एक वृक्ष

१. पठमा और द्वितीया के बहुवचन में 'नदी' शब्द के रूप नञायो, नदियो ही होते हैं। सभी विभक्तियोंमें रूप इस प्रकार होते हैं :-

	एक वचन	बहुवचन
पठमा	नदी	नदी, नदियो, नञायो, नञो
द्वितीया	नदिं, नदियं, नज	नदी, नदियो, नञायो, नञो
तृतीया	नदिया, नजा	नदीहि, नदीभि
चतुर्थी	नदिया, नजा	नदीन
पञ्चमी	नदिया, नजा	नदीहि, नदीभि

मही	पृथ्वी	नारी	स्त्री
चेतरणी	वैतरणी	कुमारी	कुमारी
वापी	वौली, जलाशय	तरुणी	तरुणी
वारुणी	गराव	किन्नरी	किन्नर-स्त्री
ब्राह्मणी	ब्राह्मणी	नागी	नागिन
सखी	सहेली	देवी	देवी
गन्धर्व्वी	गन्धर्व-स्त्री	यक्षी	यक्षिणी
अजी	बकरी	मिगी	मृगी
वानरी	बन्दरी	सूकरी	सूअरी
सीही	सिंहनी	हंसी	हसिनी
कुक्कुटी	मुर्गा	भगिनी	बहिन
कदली	केला	घटी	गगरी
दासी	दासी	गावी	गाय
काकी	कोवी	राजिणी	रानी

‘स्वादि गण’ के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे :—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
सु	सुनना	सुणोति, सुणोन्ति
खी	क्षय होना	खिणोति, खिणोन्ति
बु	ढँकना	बुणोति, बुणोन्ति
गि	शब्द करना	गिणोति, गिणोन्ति
सक	सकना	सक्णोति, सक्णोन्ति
”	”	सक्कुणोति, सक्कुणोन्ति
प + आप	प्राप्त करना	पापुणोति, पापुणोन्ति

छद्दी	नदिया, नज्जा	नदीनं
सत्तमी	नदिया, नज्जा, नज्ज	नदीसु
भालपन	नदि	नदी, नदियो, नज्जायो, नज्जो

निपात

जिन शब्दों के रूप लिंग, विभक्ति और वचन के कारण परिवर्तित नहीं होते, उन्हें अव्यय कहते हैं। अव्यय पालि में पाँच प्रकार^१ के होते हैं। उनमें एक 'निपात' होता है। नीचे कुछ निपात^२ शब्द दिए जाते हैं —

निपात	अर्थ	निपात	अर्थ
इत्थ	ऐसा	यस्मा	जिस कारणसे
एवं	ऐसा	वत	निश्चय मे
कथ	कैसा	एकक्खत्तुं	एक बार
इति	इति = ऐसा	एकधा	एक प्रकार से
इव	तरह	एव	ही
सद्धि	साथ	वा	या
तस्मा	इसलिए	न	नहीं
मा	भत	खिप्प	शीघ्र
सन्निक	धीरे धीरे	च	और
खलु	निश्चय से	विय	भाँति
अत्र	यहाँ	अद्धा	निश्चय से
अद्युना	इस समय	अल	बस
आम	हाँ	इध	यहाँ
इदानि	इस समय	तदा	तब
सदा	हमेशा	अज्ज	आज
सुवे	आगामी कल	हीयां	बीता हुआ कल
यदा	जब	कदा	कब
एकदा	एक बार	सव्वदा	हमेशा

१. त्रिगुण्य, त्रिगुण्यो पाठ ।

२. जिस न शब्दों के लिए देगिये, त्रिगुण्यो पाठ भी ।

पच्छा	पीछे	पुरा	पहले
सायं	शाम	पातो	प्रातः
परसुवे	आगामी परसों	परहीयो	बीता हुआ परसों
इह	यहाँ	उद्धं	ऊपर
उपरि	ऊपर	एतरहि	अब
एत्तावता	अब तक	एत्थ	यहाँ
अपि	भी	कच्चि	क्या
कदाचि	कदा	कह	कहाँ
किं	क्या	कुहिं	कहाँ
कुत्र	कहाँ	तत्थ	वहाँ
तत्र	वहाँ	तथेव	वैसे ही
बहिद्धा	बाहर	मा	मत
यत्र	जहाँ	यथा	जैसे
याव	जब तक	सकिं	एक बार
सह	साथ	साधु	ठीक
सेय्यथापि	जैसे	हेट्ठा	नीचे

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. इत्थी कथ सुणोति ? २. नदी एव सन्दति । ३. मही सनिकं खीयति । ४. वेतरणी मनुस्से पीलेति । ५. वापिय इत्थियो नहायन्ति । ६. पाटलिरुक्खे फलानि सन्ति । ७. नारियो गेहे एव सदा वसन्ति । ८. कुमारी पोत्थक पठति । ९. तरुणिया सद्धिं दारका गच्छन्ति । १०. उम्मत्तका जना वारुणिं पिबन्ति । ११. एकस्वत्तु ब्राह्मणी वाराणसि गच्छति । १२. अज्ज सखी धन पापुणोति । १३. तुम्हे मा कुप्पथ । १४. वाणिजा वसु खिप्प वुणोन्ति । १५. गन्धर्वी पव्वते गीत गायति । १६. अजीरुक्खान पल्लवे खिणोति । १७. वानरी मनुस्से विय कीलति । १८.

मीडियो अटवीमु वसन्ति । १९ भगिनी दारके पोसेति । २० त्व कुहिं
गच्छमि ? २१ अह नगर गच्छामि । २२ त्व कुतो आगच्छसि ? २३
अह वाराणमिया आगच्छामि । २४ घटी खल दारकेन भिन्ना । २५
आम, तेन दारकेन एव भिन्ना ।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

वारहवाँ पाठ

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

भिक्षु (=भिक्षु)

एकवचन

बहुवचन

पठमा भिक्षु
द्वितीया भिक्षुं
तृतीया भिक्षुना
चतुर्थी भिक्षुनो, भिक्षुस्स
पञ्चमी भिक्षुना, भिक्षुस्मा, भिक्षुम्हा
छट्ठी भिक्षुनो, भिक्षुस्स
सप्तमी भिक्षुस्मि, भिक्षुम्हि
आलपन भिक्षु

भिक्षू, भिक्षवो
भिक्षू, भिक्षवो
भिक्षूहि, भिक्षूभि
भिक्षून्
भिक्षूहि, भिक्षूभि
भिक्षून्
भिक्षुस्सु, भिक्षूस्सु
भिक्षू, भिक्षवे,
भिक्षवो

इन शब्दों के भी रूप 'भिक्षु' शब्द के ही समान होंगे :—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सेतु	पुल	केतु	पताका
भानु	सूर्य	राहु	राहु
उच्छु	ईश्वर	वेलु	चाँस
मच्छु	मृत्यु	सिन्धु	समुद्र
मधु	मधु	मेरु	सुमेरु पर्वत
सत्तु	शत्रु	कारु	विश्वकर्मा
हेतु	कारण	जन्तु	जानवर

पटु	चतुर	बन्धु	भाई
संकु	कील	फरसु	कुल्हाडी
रेणु	पराग	गरु	गुरु
बाहु	हाथ		

‘ज्यादि गण’ के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे .—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
अस्	खाना	अस्नाति, अस्नन्ति
चि	चुनना	चिनाति, चिनन्ति
जा	जानना	जानाति, जानन्ति
थु	प्रगषा करना	थुनाति, थुनन्ति
धू	धुनना	धुनाति, धुनन्ति
पू	पवित्र करना	पुनाति, पुनन्ति
ल	काटना	लुनाति, लुनन्ति
सि	सीना	सिनाति, सिनन्ति

कुछ आवश्यक पुत्तिलङ्ग शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अस्स	घाटा	आवाट	गद्दा
अज	बकरा	कुञ्जर	हाथी
मिग	द्विग	गन्थ	ग्रन्थ
उरग	सौंप	जनक	पिता
कस्मश्च	स्मिमान	तच्छुक	बटई
गट्ठम	गडा	तापम	तपस्वी
भमर	भया	कुक्कुट	मुर्गा
मार	वामदेव	वम्मिक	वामीक
विट्ठार	भट	चोर	चोर
एवाप	दरफ	आहार	भोजना

वेज्ज	वैद्य	सिगाल	गीदड
सूद	भण्डारी	मग्ग	मार्ग
लेखक	लेखक	मञ्च	चारपाई

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(क)

१. भिक्षु अस्स पस्सति । २. सेतुग्हा अजो वारिं पिवति । ३. भिक्षवो विहारे भत्त अस्सन्ति । ४. भानु नमे रोचति । ५. दारका उच्छु खादन्ति । ६. भिक्षुनो मच्चु दिस्सति । ७. केतु गेहे अत्थि । ८. राहुत्स पुत्तो सीस धुनाति । ९. वेळ्ळहि सत्तु हिंसति । १०. सिगाला मधु अस्सन्ति । ११. बन्धु नरपति थुनाति । १२. फरसुना दारका रुक्ख छिन्दन्ति । १३. सक्कुना खेत्त खनन्ति । १४. रेणुग्हि रज नत्थि । १५. गरुनो भरिया वत्थ सिनाति ।

(ख)

१. अहं भमर जानामि । २. त्व मधु पिवसि । ३. वेज्जो मग्गा वेळु चिनाति । ४. बाहुना सो गज पहरति । ५. माता भत्त भुज्जति । ६. रेणुग्हा भमरो गन्ध गण्हति । ७. सत्तु भानु पस्सति । ८. भूपालो गेह गच्छति । ९. सो गेहे कन्दति । १०. ते दारक थुनन्ति । ११. तुग्हे हेतु इच्छथ । १२. मय वत्थ सिनाम । १३. सूदो भत्त भुज्जति । १४. मय सकूहि कूप खनाम । १५. तुग्हे राहु पस्सथ । १६. उच्छु जना खादन्ति

पालि में अनुवाद कीजिए

१. भिक्षु पुल पर जाता है । २. सूरज चमकता है । ३. ऊख को लठके खाते हैं । ४. मृत्यु आ रही है । ५. केतु दिखाई नहीं देता । ६. बाँस को आदमी काटता है । ७. समुद्र में नौका (= नावा) जाती है । ८. मधु मीठा (= मधुर) होता है । ९. शत्रु वस्त्र सीता है । १०. लोग भात खाते हैं ।

११ हेतु मे सखार होता है । १२ चतुर लोग तुमको जानते है । १३. कीलो मे पर्वत खोदते है । १४ पराग को लडके चुन रहे है । १५ मै हाथ मे कीलो को चुनता हूँ । १६ सुमेरु पर्वत पर देवता रहते है । १७ विश्वरूपा रथ को पवित्र करता है । १८ विश्वकर्मा तुम्हारी प्रशंसा करता है । १९ जानवर घर मे रहते ह । २० भाई भात खाता है । २१ तुम्हाडी मे पैट को काटने है । २२ गुरु लटको की प्रशंसा करता है । २३ तुम गटो (=निसीदाहि) । २४ मे कीलो को चुनता हूँ । २५ भारे मधु पाते ह । २६ लटके ग्रन्थ पढते ह । २७ सब लोग मधु पीते है । २८ म भाइ मे घर जाता हूँ । २९ वह मेरे घर आता है । ३० आज म घर जा रहा ह ।

तेरहवाँ पाठ

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

आयु

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	आयु	आयूनि, आयू
दुतिया	आयुं	आयूनि, आयू
आल्पन	आयु	आयूनि, आयू

शेष रूप 'भिकखु' शब्द के समान होंगे ।

इन शब्दों के रूप भी 'आयु' शब्द के ही समान होंगे.—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
चक्खु	आँख	तिपु	राँगा
वसु	धन	मधु	मधु
धनु	धनुष	वत्थु	वस्तु
दारु	लकड़ी	जतु	लाह
अम्बु	पानी	अस्सु	आँसू
जानु	घुटना	सिग्गु	सड़जन
हिँगु	होंग	वपु	शरीर

'क्यादि गण' के इन धातुओं के रूप नीचे लिखे प्रकार से होंगे.—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस में प्रयोग
की	खरीदना	किणाति, किणन्ति
वि + की	वेचना	विक्किणाति, विक्किणन्ति

(४६)

गि	शब्द करना	गिणाति, गिणन्ति
बु	ढँकना	बुणाति बुणन्ति
सक	सकना	सकणाति, सकणन्ति
सु	सुनना	सुणाति, सुणन्ति

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए.—

(क)

१ चक्रवृत्त बुणाति । २ वसु रक्खति । ३ आयु पस्मति । ४. धनुना मिग द्विगति । ५ दारुनि छिन्दति । ६ अम्बूनि गण्हन्ति । ७ जानुन्दि न्जति । ८ द्विगु भुञ्जति । ९ तिपुना पहरति । १० मयु विणाति । ११. वत्सनि विविणन्ति । १२ जतु गिणाति । १३ अस्मूनि पतन्ति । १४ मिग्गु पुणति । १५ वपु पुनाति ।

(ग)

१ अह चक्रवृत्ता रूप पन्नामि । २ त्व वसु भुञ्जामि । ३ सो गेहे सदृष्टाति । ४ दारुणो कृत्य मित्रति । ५ सो पुरिमो सीम बुणाति । ६ ते गेहे विविणन्ति । ७ ते दारुका न सह सुणन्ति । ८ जना गजे विविणन्ति । ९ यममाला गीत सुणाति । १० कुमारो अत्तनो पोत्थक विविणति । ११ मय भमरे पन्नाम । १२ आज मेवा दिन्मन्ति । १३ शत्रुभक्त न भुञ्जामि । १४ त्व कन्मा कन्दमि ? १५ सो पोत्थक विणाति ।

पालि में अनुवाद कीजिए .—

१ चक्रवृत्त रूप पन्नाम । २ वसु भुञ्जामि । ३ कुत्ता लकड़ी पकड़ता है । ४ धनुना मिग द्विगति । ५ दारुणो कृत्य मित्रति । ६ लकड़ियों को छिन्दति । ७ जतु गेहे विविणन्ति । ८ गजों से डरते हैं । ९ दोग

को वस्त्र से ढँकता है । १०. राँगा चमकता है । ११. मधु को लडके पसन्द करते हैं । १२. वस्तुओं को हम देखते हैं । १३. लाह घर में विद्यमान है । १४. आँसू गिरता है । १५. सड़जन मार्ग में मौजूद है । १६. शरीर शुद्ध होता है । १७. वह शब्द करता है । १८. मैं रोता हूँ । १९. तुम जाते हो । २०. वह प्रकाश करता है । २१. घर में घन है । २२. पेड सूख रहा है । २३. जाँघ दर्द करती है । २४. वस्त्र नष्ट होता है । २५. पेड टूटता है ।

चौदहवाँ पाठ

क्रिया, अनागत काल

‘पठ’ वातु

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिम	पठिस्सति	पठिस्सन्ति
मदिम पुरिम	पठिस्ससि	पठिस्सथ
उत्तम पुरिम	पठिस्सामि	पठिस्साम

अर्थ

पठि मति = पढ़गा ।

पठिस्सथ = पढ़ोगे ।

पठिस्सन्ति = पढ़ग ।

पठिस्सामि = पढ़गा ।

पठि मनि = पढ़ाम ।

पठिस्साम = पढ़गे ।

इस प्रकार अन्य वातुओं के भी रूप अनागत काल में होंगे । यहाँ कुछ उदाहरण दिए जाते हैं —

धातु	अर्थ	पठम पुरिसमे प्रयोग
चर	चिचरगा	चरिस्सति
भृ	भा ।	भविस्सति
रति	काटगा	रन्तिस्सति
रम्प	काटगा	रम्पिस्सति
रर	काटगा	ररिस्सति
दीट	काटगा	कालिस्सति
रम	काटगा	रमिस्सति
,		रिस्सति

खनु	खोदेगा	खनिस्सति
गह	ग्रहण करेगा	गण्दिस्सति
खाद	खायेगा	खादिस्सति
हिंस	हिंसा करेगा	हिसिस्सति
सु	सुनेगा	सुणिस्सति
सि	सोयेगा	सयिस्सति
चल	चंचल होगा	चलिस्सति
चुण	पीसेगा	चुणेस्सति
चुर	चुरायेगा	चोरेस्सति
छिदि	तोडेगा	छिन्दिस्सति
वस	रहेगा	वसिस्सति
लिख	लिखेगा	लिखिस्सति
भुज	भोजन करेगा	भुज्जिस्सति
जल	जलेगा	जलिस्सति
जि	जीतेगा	जिनिस्सति
तच्छ	छीलेगा	तच्छिस्सति
तर	पार करेगा	तरिस्सति
दा	देगा	दत्सति
पुस	पालेगा	पोसेस्सति
पा	पीयेगा	पिविस्सति
दिस	देखेगा	पत्तिस्सति
पत	गिरेगा	पतिस्सति
दंस	डँसेगा	डसिस्सति

पूर्वकालिक क्रिया

धातु के पीछे त्वा, त्वान तथा तून प्रत्यय लगाकर पूर्वकालिक क्रिया बनाई जाती है, किन्तु 'त्वा' प्रत्यय का ही प्रयोग अधिक होता है। 'त्वान'

और 'तन' प्रत्ययो के प्रयोग विरल होते हैं । 'त्वा' का अर्थ है 'कर' या 'करके' । पूर्वकालिक क्रिया के कुछ उदाहरण यहाँ दिये जाते हैं —

धातु	पूर्वकालिक क्रिया	अर्थ
कर	कत्वा	करके
सु	सुत्वा	सुनकर
दिस	पस्मिन्त्वा	देखकर
पा	पिवित्वा	पीकर
सि	सयित्वा	सोकर
लज्ज	लजित्वा	लज्जा करके
रक्ष्य	रक्षित्वा	रक्षा करके
भुज	भुजित्वा	भोजन करके
मर	मरित्वा	मर करके
युज	योजित्वा	निगुक्त करके
दिस	दित्वा	देखकर
पत	पतित्वा	गिरकर
पच	पचित्वा	पकाकर
उस	उमित्वा	उमकर
तर	तरित्वा	पारकर
टा	टत्वा	गड़ा होकर
जी	जेत्वा	जीत कर
रन्तु	हन्तित्वा	हन्तकर
कट्	कोटित्वा	कटकर
जाल	कीलित्वा	गुलकर
गम	गत्वा	जाकर
गह	गहेत्वा	देकर
चर	चलित्वा	चलने होकर
चिन्त	चिन्तेत्वा	समझकर

छिदि	छिन्दित्वा	काटकर
जन	जनेत्वा	पैदाकर
जागर	जागरित्वा	जागकर

धातु के साथ समास होने पर, उसके पीछे 'त्वा' प्रत्यय का विकल्प से 'य' आदेश हो जाता है—

त्वा	य	अर्थ
अभिभवित्वा	अभिभूय	तिरस्कार करके
अभिवन्दित्वा	अभिवन्द्य	अभिवादन करके

उपसर्गपूर्वक धातु के पीछे आने वाले 'त्वा' प्रत्यय का 'य' आदेश हो जाता है —

उपसर्ग	धातु	रूप	अर्थ
आ	दा	आदाय	लेकर
प	हा	पहाय	छोड़कर
वि	धा	विधाय	करके

धातु के साथ समास होने पर 'त्वा' का विकल्प से तुं, यान, अञ्च तथा वान आदेश हो जाता है—

अभिहरित्वा,	अभिहृत्तुं	=	लकर
अनुमोदित्वा,	अनुमोदियान	=	अनुमोदन करके
आह्नित्वा,	आहञ्च	=	आघात करके
सक्करित्वा,	सक्कञ्च	=	सत्कार करके
अधिकरित्वा,	अधिकिञ्च	=	अधिकार करके
अधियित्वा,	अधिञ्च	=	पढ़कर
समेत्वा,	समेञ्च	=	मिलकर

पस्वित्वा. दिस्वान. दिस्वा = देखकर

(५२)

कुछ और भिन्न पूर्वकालिक क्रिया

आगमम = आकर	ओरुह्य = उतरकर	लद्धा = पाकर
निक्कयम्म = निक्कलकर	आह्य = चढकर	लद्धान = पाकर
		कातून = करके

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए —

१ दारका गते चरिस्मति । २ सो मूपालो भविस्मति । ३ ते म्कटे
 कतिस्मति । ४ उमभो नयेन कम्पिस्मति । ५ अहं कम्म न करिस्मामि ।
 ६ त्वं अजं गहं गमिस्ममि । ७ मुनखा उग्यान् कीलिस्सन्ति । ८.
 अम्मा उरगं वरिस्सति । ९ नरा गामे ऋपं गानम्सन्ति । १० भरिया
 पुत्तं गहिस्मात् । ११ गजो पणं नुचिस्मति । १२ ते उच्छवो प्पादि-
 स्सन्ति । १३ म्मा मिगं न ह्मिस्मति । १४ अहं वम्मं मुणिस्मामि । १५.

पीकर पुस्तक लिखेगा । १३. मैं राजा को जीतूँगा । १४. बटई पेढ को छीलेगा । १५. ग्वाला (=गोपो) पहाड से भूमि पर गिरेगा । १६. सोंप हँसकर मर जायेगा । १७. वह मुख को देखकर रोयेगा । १८. मैं पुत्र को पालूँगा । १९. धन को देखकर मन चंचल होगा । २०. वह पाप नहीं करेगा । २१. मैं बुद्ध की शरण जाऊँगा । २२. वह व्यापार (=वणिज्ज) करेगा । २३. भिक्षु शील की रक्षा कर व्यान (=ज्ञान) करेगा । २४. वह निर्वाण (=निब्बान) पायेगा । २५. वह इस लोक को (=इम लोक) फिर नहीं आयेगा ।

पन्द्रहवौ पाठ

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

धेनु (=गाय)

एकवचन

बहुवचन

पठमा	धेनु	धेनु, धेनुयां
द्वितीया	धेनु	धेनु, धेनुयां
तृतीया	धेनुया	धेनुहि, धेनूभि
चतुर्थी	धेनुया	धेनून्
पञ्चमी	धेनुया	धेनुहि, धेनूभि
षष्ठी	धेनुया	धेनून्
सप्तमी	धेनुय, धेनुया	धेनुम्
अष्टमी	धेनु	धेनु, धेनुयां

एतद्वाक्येन धेनु शब्दः कृती समानः प्राग्वहः —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
धातु	धातु	धातु	धातु
कामु	काम	कामु	काम
कचु	कच	कचु	कच
कणु	कण	कणु	कण
कितु	कित	कितु	कित

उकारान्त 'मातु' शब्द के रूप 'धेनु' शब्द से भिन्न होते हैं:—

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	माता	मातरो
द्वितीया	मातरं	मातरे, मातरो
तृतीया	मातुया, मातरा	मातरेहि, मातरेभि, मातूहि, मातूभि
चतुर्थी	मातु, मातुया	मातरानं, मातानं, मातूनं
पञ्चमी	मातुया, मातरा	मातरेहि, मातरेभि, मातूहि, मातूभि
छट्ठी	मातु, मातुया	मातरानं, मातानं, मातूनं
सप्तमी	मातुया, मातरि	मातरेसु, मातुसु
आलपन	मात, माता	मातरो

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

१. धेनुया सद्धि अह गाम गमिस्सामि । २. वच्छतरो धेनुया खीर पिवति । ३. धातुय कालवण्णो विज्जति । ४. आकासे विज्जु दिस्सति । ५. मातर निच्च पूजेति । ६. कासुय अजायो पतन्ति । ७. गद्रभा यागु पिवन्ति । ८. सुसाने मतमनुस्स ज्ञापेन्ति । ९. सत्सु बन्धु ताळेति । १०. कणेरुया सद्धि वन गमिस्सति । ११. सुवे भिक्खु रज्जु गण्हिस्सति । १२. कच्छु रुज्जति । १३. पटुमपुप्फानि वापिय कम्पन्ति । १४. दहुरोगो सुवे वट्ठिस्सति । १५. परसुवे अह गण्ड (=फोटे को) कण्ठयिस्सामि ।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. गाय घास खाती है । २. उसे मीठे तृण अच्छे लगते हैं । ३. धानुओं में सोना उत्तम होता है । ४. गट्टे में कुत्ता गिर कर मरता है ।

५ लटकी यवागु पकाती है । ६ कमल का फूल सफेद(= सेत) होता है ।
 ७ रन्गी को लेकर वन में जाऊँगा । ८ जंगल से आकर ब्राह्मण खाना
 खाता है । ९ हथिनी दाटफर गंगा में जायेगी । १० खुजलाहट इस समय
 बटती है । ११ दाढ़ में रून(= रुधिर) निकल रहा है । १२ आकाश में
 बिजली चमक रही है । १३ सास बटू को सताती है (= पीलेति) । १४
 मुँह माता का सन्सार करते हैं । १५ भिक्षु लोग गाय का दूध (= खीर)
 पीते हैं ।

सोलहवाँ पाठ

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

पितु (=पिता)

सत्यु, पितु आदि कुछ उकारान्त शब्दों के रूप 'भिक्षु' शब्द के रूप से भिन्न होते हैं :—

एकवचन	बहुवचन
पठमा पिता	पितरो
द्वितीया पितरं	पितरे, पितरो
तृतीया पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
चतुर्थी पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं, पितूनं
पञ्चमी पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
छट्ठी पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं, पितूनं
सप्तमी पितरि	पितरेसु, पितुषु, पितूषु
आल्पन पित, पिता	पितरो

सत्यु (=शास्ता, भगवान् बुद्ध)

एकवचन	बहुवचन
पठमा सत्या	सत्थारो
द्वितीया सत्थारं	सत्थारे, सत्थारो
तृतीया सत्थारा	सत्थारेहि, सत्थारेभि, सत्थूहि, सत्थूभि
चतुर्थी सत्यु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारानं, सत्थानं
पञ्चमी सत्थारा	सत्थारेहि, सत्थारेभि, सत्थूहि, सत्थूभि
छट्ठी सत्यु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारानं, सत्थानं

सत्तमी सत्यरि
आल्पन सत्य, सत्या

सत्थारेसु
सत्थारो

इन शब्दों के रूप 'सत्यु' शब्द के समान होंगे.—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कत्तु	कर्त्ता	नत्तु	नाती
गन्तु	जाने वाला	नेतु	नेता
जेतु	जीतने वाला	भत्तु	रक्षा करने वाला
आतु	शाता	विज्जापेता	सूचित करने वाला
विनेतु	विनय गिखानेवाला	सोतु	मुनने वाला
वत्तु	वक्ता	महामन्त्रातु	एक राजा का नाम

क्रिया

अतीतकाल, परिसमाप्त्यर्थक भूत

'पठ' वातु

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	अपठी, पठी	अपठिसु, पठिसु
	अपठि, पठि	अपठु, पठु
महिम पुरिस	अपठो, पठो	अपठित्य, पठित्य
उत्तम पुरिस	अपठिं, पठिं	अपठिम्हा, पठिम्हा, अपठिम्हा, पठिम्हा

सभी धातुओं के रूप परिसमाप्त्यर्थक अतीतकाल में उक्त प्रकार से ही होंगे । यहाँ कुछ उदाहरण दिए जाते हैं :—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस एकवचन में प्रयोग
गम	गया	अगमासि
भू	हुआ	अभवी
चुर	चुराया	अचोरयि
ठा	खड़ा रहा	अट्टासि
वस	रहा	वसि
रुदि	रोया	रोदि
लभ	पाया	लभि
दा	दिया	अदासि
वद	कहा	अवदि
हु	हुआ	अहोसि
उ + पद	उत्पन्न हुआ	उत्पज्जि
अव + लोक	देखा	ओलोकेसि
कर	किया	अकरि
नि + वतु	रुका	निवत्ति
प + विस	गया	पाविसि

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. पिता पोत्थकं अपठि । २. सत्या गाम भिदखाय अगमासि ।
३. सत्यरि परिनिव्युते सक्को गार्थं अभासि । ४. कत्ता कम्म अकरि ।
५. दारका गामेसु विचरिसु । ६. जेता धन आदाय नगर अगमि । ७.
- वत्ता धम्म देसेत्वा गाम अगमासि । ८. सोतारो कदापि धम्म न सुणिसु ।
९. दारको विहार गन्त्वा निवत्ति । १०. भिक्खु भिक्खु गहेत्वा वन
- पाविसि । ११. सत्या भिक्खाय गामे चरित्वा भिक्खु ओलोकेसि । १२.

सो पापमम्म अज्जि । १३ सा इत्थी मग्गे अट्ठासि । १४ अह वन
गन्त्वा वसि । १५ भूपाला जनेहि वन लभिसु ।

पालि में अनुवाद कीजिए —

१ शान्ता ने एक भिक्षु को देखा । २ कुत्ता भात खाया । ३
लडकों ने पुस्तकें पढ़ी । ४ तुम लोगों ने सूरज को देखा । ५ पिता पुत्र
को देग्यर मार्ग में खड़ा हुआ । ६ कुत्ता घर में था (= अहोसि) ।
७, मणि का लडके ने चुराया । ८ स्त्री ने पति को मार कर रोया । ९,
उसने एक पुत्ररत्न (= पुत्ररत्न) पाया । १० नारदो देवल एवं अवदि ।
११ त्व पटम साल अगमामि । १२ वाणिजस गेहे दारिका उत्पज्जि ।
१३ गो अरज्ज गन्त्वा तत्थेय वसि । १४ अज्ज अह इवेव अहोसि ।
१५ मय तिपिटक पठिम्ह ।

सत्रहवाँ पाठ

सर्वनाम शब्द

‘अम्ह’ (= मैं)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	अहं	मयं, अस्मा, अम्हे, नो
द्वितीया	मं, ममं	अम्हं, अम्हाकं, अम्हे, नो
तृतीया	मया, मे	अम्हेहि, अम्हेभि, नो
चतुर्थी	मम, मय्हं, अम्हं, ममं, मे	अस्माकं, अम्हाकं, अम्हं, अम्हे, नो
पञ्चमी	मया	अम्हेहि, अम्हेभि
छट्ठी	मम, मय्हं, अम्हं, ममं, मे	अस्माकं, अम्हाकं, अम्हं, अम्हे, नो
सप्तमी	मयि	अस्मासु, अम्हेसु

तुम्ह (= तू)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	त्वं, तुवं	तुम्हे, वो
द्वितीया	तं, तवं, तुवं, त्वं	तुम्हं, तुम्हाकं, तुम्हे, वो
तृतीया	त्वया, तया, ते	तुम्हेहि, तुम्हेभि, वो
चतुर्थी	तव, तुय्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, तुम्हे, वो
पञ्चमी	त्वया, तया, त्वम्हा	तुम्हेहि, तुम्हेभि
छट्ठी	तव, तुय्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, तुम्हे, वो
सप्तमी	त्वयि, तयि	तुम्हेसु

‘अम्ह’ तथा ‘तुम्ह’ सर्वनाम के रूप तीनों लिंगों में समान होते हैं।
सर्वनाम में आल्पन नहीं होता है।

(६२)

क्रिया

अनुज्ञा

प्रश्न, प्रार्थना, अनुरोध, निमन्त्रण, आज्ञा, जिज्ञासा आदि के अर्थ में अनुज्ञा होती है। इसका रूप नीचे लिखे प्रकार से होते हैं—

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिम	पठतु	पठन्तु
मत्तिम पुरिम	पठ, पठाहि	पठथ
उत्तम पुरिम	पठामि	पठाम

अर्थ

पठम पुरिम	पठे	पढें
मत्तिम पुरिम	पठा	पढें
उत्तम पुरिम	पढेँ	पढें

अनुज्ञा के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

धातु	अर्थ	पठम पुरिस एकवचन में प्रयोग
कर	कर	करोतु
इगु	इच्छा करे	इच्छतु
कुप	नाराज करे	कुपतु
दिग्म	दिमा करे	दिमतु
सि	माये	सयतु
लभ	प्राप्त करे	लभतु
रक्ष	रक्ष करे	रक्षतु
दिग्म	दिग्म	दिग्मतु
पत	पत	पततु
पठ	पठ	पठतु
रक्ष	रक्ष	रक्षतु
रक्ष	रक्ष	रक्षतु

छिदि	काटे	छिन्दतु
जीव	जीये	जीवतु
तर	पार करे	तरतु
ठा	खडा रहे	तिष्ठतु
दा	दे	ददातु
नम	नमस्कार करे	नमतु
दिस्	उपदेश दे	देसेतु

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. अहं गेह गच्छामि । २. त्व विजालय गच्छ । ३. अम्हाक धीतरो पोथ्यक पठन्तु । ४. वाणिजो वणिज्ज कत्वा नगर गच्छतु । ५. त्वयि गते कुमारो गेह अगमासि । ६. भूपालो राजिणिं रक्खतु । ७. सो आकासे सुरिय पस्सतु । ८. अम्हाक पिता धन ददातु । ९. सत्था जनस्स धम्म देसेतु । १०. चोरा गाम मा विलोपेन्तु । ११. दारका मग्गे तिठ्ठन्तु । १२. सो सत सवच्छर जीवतु । १३. त्व पव्वतम्हा मा पताहि । १४. दारको याव सुरियुग्गमना सयतु । १५. ते पठविया धन लभन्तु ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. मेरे पास (=सन्तिके) खडा हो । २. वह मत रोये । ३. लडका स्कूल जाये । ४. भगवान् (=भगवा) धर्म का उपदेश दे । ५. कुसीनारा में एक राजा रहता था । ६. वह राजा यहाँ रुके । ७. तेरी स्त्री कब मरी ? ८. हम नगर जाँये । ९. अब आदमी बाजार (=आपण) जाँयें । १०. कुत्ता नदी को पार करे । ११. दास घर में भात पकाये । १२. तू और महानाम यहाँ (=इधेव) बैठ कर खाओ । १३. कच पिता तुम्हारे लिए घोटा लेगा । १४. मैं नहीं रुकूँगा । १५. वही यहाँ रुके ।

अठारहवाँ पाठ

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

सञ्चञ्ज (= सर्वज्ञ)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सञ्चञ्ज	सञ्चञ्ज, सञ्चञ्जनो
द्वितीया	सञ्चञ्जु	सञ्चञ्ज, सञ्चञ्जनो
तृतीया	सञ्चञ्जुना	सञ्चञ्जहि, सञ्चञ्जभि
चतुर्थी	सञ्चञ्जनो, सञ्चञ्जुम्स	सञ्चञ्जनं
पञ्चमी	सञ्चञ्जुना, सञ्चञ्जुम्मा,	सञ्चञ्जहि, सञ्चञ्जभि
	सञ्चञ्जुम्हा	
छट्ठी	सञ्चञ्जुना, सञ्चञ्जुम्स	सञ्चञ्जन
सप्तमी	सञ्चञ्जुस्मि, सञ्चञ्जुस्मि	सञ्चञ्जुसु
आठवी	सञ्चञ्ज	सञ्चञ्ज, सञ्चञ्जनो

इन शब्दों के रूप भी 'सञ्चञ्ज' शब्द के ही समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
मगञ्ज	नामग	धम्मञ्ज	धम्म
अव्यञ्ज	अवय	कालञ्ज	काल
रत्तञ्ज	पुराण परिचित	मत्तञ्ज	भावज्ञ
कत्तञ्ज	कत्त	तत्तञ्ज	तत्त्व
विद्	ज्ञान वाला	वेदग	वेद
परिग	परिगाले वाला		

कृदन्त

कृदन्त शब्दों के रूप भी 'कृदन्त' शब्द के ही समान होंगे —

कृदन्त शब्दों के रूप भी 'कृदन्त' शब्द के ही समान होंगे । (कृदन्त शब्दों के रूप भी 'कृदन्त' शब्द के ही समान होंगे) ।

लगने से जो रूप बनता है, वह कर्ता के विशेषण के समान व्यवहृत होता है। उसके रूप पुल्लिङ्ग में 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुंसकलिङ्ग में 'फल' शब्द के समान और स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द के समान होते हैं।

धातु	कृदन्त पुल्लिङ्ग	अर्थ
दिस	दिष्टो	देखा हुआ
गम	गतो	गया हुआ
कुध	कुद्धो	क्रुद्ध हुआ
सुस	सुख्लो	सूखा हुआ
भी	भीतो	डरा हुआ
पा	पीतो	पिया हुआ
तर	तिण्णो	पार किया हुआ
सिध	सिद्धो	सिद्ध हुआ
खम	खन्तो	क्षमा किया हुआ
गुह	गूह्यो	छिपा हुआ
जन	जातो	उत्पन्न हुआ
जर	जिण्णो	जीर्ण हुआ
ठा	ठितो	खड़ा हुआ
तुस	तुष्टो	सन्तुष्ट हुआ
दम	दन्तो	दमन किया हुआ
भुज	भुक्तो	खाया हुआ
सं + पूर	सम्पुण्णो	भरा हुआ
वस	वुर्यो, वुसितो	रहा हुआ
रञ्ज	रत्तो	अनुरक्त हुआ
वह	वुद्धो	बढ़ा हुआ
भू	भूतो	हो चुका हुआ
पुच्छ	पुष्टो	पूछा हुआ
दह	दद्दो	जला हुआ

मुद्	मृद्	भूला हुआ
मज्ज	भग्गो	टूटा हुआ
पच	पफो	पका हुआ
मुच	मुत्तो	छूटा हुआ
तस	चन्तो	उरा हुआ

अभ्यास

हिन्दी में अनवाद कीजिए—

उन्नीसवाँ पाठ

ऊकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

सयम्भू (= स्वयम्भू)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सयम्भू	सयम्भू, सयम्भुनि
द्वितीया	सयम्भू	सयम्भू, सयम्भुनि
आलपन	सयम्भू	सयम्भू, सयम्भुनि

शेष रूप 'सव्यञ्जू' शब्द के ही समान होंगे ।

क्रिया

विधि लिंग (= हेतुफल)

	एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस	पठे, पठेय्य	पठेय्युं, पठुं
मज्झिम पुरिस	पठे, पठेय्यासि	पठेय्याथ
उत्तम पुरिस	पठे, पठेय्यामि	पठेमु, पठेय्याम, पठेय्यामु

हेतु तथा फल के अर्थ में धातुओं के रूप इस प्रकार होते हैं । जैसे—
यदि सस्कार नित्य हों, तो निरुद्ध न हों (सचे सखारा निच्चा भवेय्यु,
न निरुज्जेय्यु) । यहाँ नित्य होना हेतु है और न निरुद्ध होना फल ।

कृदन्त^१ के कुछ और उदाहरण

धातु	कृदन्त	अर्थ
लभ	लब्धो	पाया गया

१. परिभाषा और विस्तार के लिए देखिये—तैत्तिरीयसंवाँ पाठ ।
(कृदन्त शब्दों के लिए भठारहवाँ पाठ भी देखिये) ।

रक्ष्य	रक्षितो	रक्षा किया गया
भिद्र	भिन्नो	फोटा गया
भज्ज	भट्टो	भूना गया
वध	वद्धो	बौधा गया
अनु + म्नास	अनुसिद्धो	अनुशासन किया गया
अभि + भू	अभिभतो	हराया गया
आ + मस	आमद्धो	छुआ गया
इमु	दृष्टो	चाहा गया
दस	दद्धो	डँसा गया
जा	जातो	जाना गया
छिदि	छिन्नो	तोडा गया
जि	जितो	जीता गया
कुम्भ	कुट्टो	स्पर्श किया गया
प + सम्भ	पमत्थो	प्रशमा किया गया
परि + बु	परिवृत्तो	वेग गया
नस	नामितो	नष्ट किया गया
नि + वस	निवृत्तो	पटना गया

धम्म करेय्याम । ११. गिलानो पुरिसो रोगेन अभिभूतो दुक्ख सयति । १२. दासो भूपात्तेन दण्डितो । १३. इत्थिया अग्गिना सासपो भट्ठो । १४. वद्धो गोणो गेहे येव मत्तो । १५. सच्चे त्व नगर गच्छेय्यासि, बहु भत्तवेतन लभेय्यासि ।

पालि में अनुवाद कीजिये

१. दूटा हुआ घड़ा नष्ट हो गया । २. यदि मैं वाराणसी न जाता, तो बीमार न होता । ३. राजा ने रानी से प्रद्वन पूछा । ४. धनी निर्धन न होते, यदि काम करके धन कमाते । ५. दास द्वारा अनुशासित बैल मर गया । ६. स्त्री द्वारा मोह जीता गया । ७. प्रशसित लड़का स्कुल गया । ८. मैं घर जाता, यदि थोड़ा धन मिल जाता । ९. पहना हुआ वस्त्र पानी से भीगा गया (= नेमित) । १०. उस विद्वान् द्वारा धर्म जाना गया । ११. मैं क्रोध से अभिभूत होकर भी प्रसन्न हूँ । १२. व्यापारी का रक्षित धन नष्ट हो गया । १३. आग से दास का घर स्पर्श किया गया । १४. तू यदि विहार जाता, तो धर्म सुनता । १५. वे लोग दान देते, यदि धन कमाते ।

वीसवॉ पाठ

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

वध् (= वद्)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	वध्	वध्न, वधुयो
दुतिया	वधु	वध्न, वधुयो
तत्तिया	वधुया	वध्निहि, वधूभि
चतुर्थ	वधुया	वध्न
पञ्चमी	वधुया	वध्निहि, वध्निभि
सप्तमी	वधुया	वध्न
अष्टमी	वधुय, वधुया	वध्न
नवमी	वधु	वध्न, वधुयो

इस पाठो के अन्त में कुछ शब्दों के समान हाग—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
जम्बू	जम्बू	सम्भू	एक नदी का नाम
सुतन्	सुतन्	चम्	मेना
वामान	वामान	सम्ब	उपनि

कुछ योग निपात शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अम्बो	अम्बो	अम्ब	अम्ब
अम्बो	अम्बो	अम्ब	अम्ब

१. इस पाठ के अन्त में कुछ शब्दों के समान हाग—

अत्थं	अस्त, विनाश	अधो	नीचे
अन्तरा	मध्य मे	अन्तो	मध्य में
अप्पेव	शायद	अभिण्हं	बार-बार
अमुञ्च	वहो	अवस्सं	अवश्य
आरका	दूर	आरा	दूर
आवि	प्रगट	उच्चं	ऊँचा
किञ्चि	कुछ	कीव	कब तक
कुदाचनं	कभी	क्व	कहाँ
चिरं	दीर्घकाल	चिरस्सं	चिरकाल
जातु	निश्चय से	तं	उस हेतु से
ततो	उस हेतु से	तथरिव	वैसे
तहिं	वहो	ताव	तब तक
तिरियं	तिरछा	तिरो	छिपा हुआ
तुण्ही	चुप	तेन	उस हेतु से
दिवा	दिन में	धुवं	स्थिर, निश्चय से
नमो	नमस्कार	नहि	नहीं
नाना	भिन्न	तु	गायद
नून	निश्चय से	नो	नहीं
पगे	प्रातःकाल	पतिरूपं	ठीक
परितो	चारों ओर	पातु	प्रकट
पुनप्पुनं	बार-बार	पुरतो	सामने
पुरे	सामने	पेच्च	परलोक में
वाहिरं	बाहर	मिच्छा	झूठ
मुधा	बेकार	मुसा	झूठ
मुहु	बार-बार	यं	जिस कारण से
यतो	जिस हेतु से	यथरिव	जैसे
येन	जिस हेतु से	यावता	जब तक

गहो	गुप्त	विना	विना
		समन्त	चारों ओर
सम्मा	अन्त्री तरफ	नुई	अच्छी तरह
उदाहु	अथवा	उठ	अथवा
फिमु	क्या	सचे	यदि

य निपात शब्द विस्मयादिवोचक है—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अद्ग	ह	अन्धु	ऐसा हो
एव	हाँ	अड्डा	निश्चय म
अम्भो	ह	अरे	अर
अहो	आश्चर्य है	जे	र (त्रियों के लिए)
हम्भा	ह	भो	"
रे	र	वे	निश्चय से
साधु	अच्छा	वि	विकार
हन्द	प्रणाम योग्य	हा	गौरव योग्य
हि	निश्चय से	हे	ह

इन निपातों का अपना कोई अर्थ नहीं है। ये वाक्यों की सुन्दरता बढ़ाने में सहायक हैं न ह —

अस्सु, खो, चे एत यग्ने, सुद, सिग ।

अथवा

१२. सचे त्व गेह गच्छेय्यासि, एकं मणिं लभेय्यासि । १३. हम्मो ! सग्गं गच्छाहि । १४. अहं तं चिरस्स जानामि । १५. वधुया सीस दिवा न दहति ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. बहू बार-बार घर जाती है । २. ब्राह्मण कभी-कभी ही बाजार जाता है । ३. मैं एक बार चाराणसी गया था । ४. वहाँ एक विद्वान् भिखारी रहता था । ५. गंगा के किनारे एक गाँव में विहार है । ६. विहार में एक सुन्दर स्तूप भी है । ७. उस विहार में बहुत से भिक्षु रहते हैं । ८. एक धार्मिक उपासक वहाँ दान देने आता है । ९. उसकी स्त्री भी धार्मिक है । १०. लड्डका नित्य धर्म-श्रवण करता है । ११. घर में स्त्री ठीक से रहती है । १२. घर के पास एक कुँआ है । १३. कुँए का जल भीठा और शीतल है । १४. लोग वहाँ आकर पानी पीते हैं । १५. देवता भी रात में वहाँ आया करते हैं ।

इक्कीसवाँ पाठ

सर्वनाम शब्द

‘त’ (= वह)

पुटिलङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पटमा	सो, स्यो	ते, ने
दुतिया	त, न	ते, ने
ततिया	तेन, नेन	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
चतुथी	तस्म, नस्म, अस्म	तेस, नेस, तेसान, नेसान
पञ्चमी	तस्हा, अस्हा, नस्हा, तस्मा	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
छठी	तस्म, नस्म, अस्म	तेस, नेस, तेसान, नेसान
सप्तमी	तस्मिह, अस्मिह, नस्मिह, तस्मि, तेनु, नेनु	
	नस्मि, अस्मि	

ततिया	ताय, नाय, तस्सा, तिस्सा ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
चतुर्थी	तिस्साय, तस्साय, अस्साय, तासं, आसं, तासानं तिस्सा, तस्सा, ताय
पञ्चमी	ताय, नाय, तस्सा ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
छट्ठी	तिस्साय, तस्साय, अस्साय, तासं, आसं, तासानं तिस्सा, तस्सा, अस्सा, ताय
सप्तमी	तिस्सं, तस्सं, अस्सं, तायं, तासु तस्सा, तिस्सा

निमित्तार्थक अव्यय

‘इस काम के निमित्त’ अर्थ में धातु से परे तुं, ताये और तवे प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कातुं गच्छति, कत्ताये गच्छति, कातवे गच्छति = करने के लिए जाता है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पठितुं	पढ़ने के लिए	पचितुं	पकाने के लिए
भोक्तुं	भोजन करने के लिए	सोतुं	सुनने के लिए
दष्टुं	देखने के लिए	युज्झितुं	युद्ध करने के लिए
वक्तुं	बोलने के लिए	कत्तुं	करने के लिए
रन्धितुं	रूँधने के लिए	दातुं	देने के लिए
पिचितुं	पीने के लिए	पातुं	पीने के लिए
गन्तुं	जाने के लिए	हरितुं	ले जाने के लिए
आहरितुं	लाने के लिए	कातुं	करने के लिए
लब्धुं	पाने के लिए	लभितुं	पाने के लिए
भुञ्जितुं	खाने के लिए	भवितुं	होने के लिए

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१ सो नहायितु नदि गच्छति । २ तेहि गोणो नीतो । ३ त गेह अगिना आमट्ट । ४ तत्स भरिया गिलाना अत्थि । ५. ताय पुत्तो वणिज करोति । ६ दारको भोत्तु महानम (= भोजनशाला) गच्छति । ७ नेत्त रुग्धितु गच्छ आनेहि । ८ अजाय सीर पानु याचको दच्छति । ९ भिक्खु तथागत दट्ठु विहारे एव वसति । १० अह तिपिटक पठितु आचरियस्म सन्तिक्क गच्छामि । ११ ते सामुरूपेण पोत्थकानि उगगण्हन्ति । १२. धम्म सोतु अम्हे गच्छाम । १३. मम भरिया युज्झितु युद्धभूमि गच्छति । १४ कदा सा वनिता सन्सुया गेट्ठ अगमासि ? १५ सो अत्तनो आहार पच्चितु तट्ठुल याचति ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१ वह स्त्री विहार देखने के लिए जाती है । २. राजा गाँव को घेरने के लिए जा रहा है । ३. दास चावल लाने के लिए शहर गया था । ४ उसकी माता बीमार हो गई है । ५ मैं शहर जाना चाहता हूँ । ६ निजु तथागत की वन्दना करने के लिए विहार जाना चाहता है । ७ चौर वन लेने के लिए रात में घूमने है । ८ व्यापारी वन पाने के लिए व्यापार करने है । ९ मुत्ता पानी के लिए नदी को जाता है । १० उस स्त्री से एक बच्चा मर गया । ११ मेरे पिता नदानी के लिए वस्त्र के साथ गए । १२ स्वधिर (=सेने) नेत्रि की वन्दना करने के लिए बर्हा गये । १३ मैं वन में जा रहा हूँ । १४ तुम काम करना के लिए क्यों जा रहे हो ? १५ उस स्त्री की स्त्री ने उसे बर्हा किया ।

बाइसवाँ पाठ

ओकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

गो (= बैल)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गो	गावो, गवो
द्वितीया	गावुं, गावं, गवं	गावो, गवो,
तृतीया	गावेन, गवेन, गावा, गवा	गोहि, गोभि
चतुर्थी	गावस्स, गवस्स, गवं	गवं, गुन्नं, गोनं
पञ्चमी	गवा, गावा, गावस्मा,	गोहि, गोभि
	गावम्हा, गवस्मा, गवम्हा	
छट्ठी	गावस्स, गवस्स, गवं	गवं, गुन्नं, गोनं
सप्तमी	गावे, गवे, गावम्हि,	गावेसु, गवेसु, गोसु
	गवम्हि, गावस्मि, गवस्मि	
आलपन	गो	गावो, गवो

‘गो’ के अतिरिक्त पालि में ओकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द अन्य नहीं मिलते । ‘गो’ शब्द के रूप स्त्रीलिङ्ग में भी पुल्लिङ्ग के समान ही होते हैं ।

ओकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

चित्तगो (=विचित्र गौर्वोवाला)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि
द्वितीया	चित्तगुं	चित्तगू, चित्तगूनि
आलपन	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि

शेष रूप ‘आयु’ शब्द के समान होंगे ।

‘गो’ शब्द के स्थान में सभी विभक्तियों में विकल्प से ‘गोण’ आदेश हो जाता है और उसके रूप पुष्टिन्न अकारान्त ‘बुद्ध’ शब्द के समान होते हैं ।

प्रेरणार्थक क्रिया

प्रेरणा करने के अर्थ में प्रेरणार्थक क्रिया होती है । जब कोई कर्त्ता किसी दूसरे से काम कराता है, तो वह प्रेरणार्थक क्रिया कही जाती है । प्रेरणार्थक क्रिया के रूप इस प्रकार होते हैं —

धातु	प्रेरणार्थक रूप	अर्थ
कर	कारति, कारयति, कारापेति, कारापयति	कराता है
पच	पाचति, पाचयति, पाचापेति, पाचापयति	पकवाता है
कन्द	कन्देति, कन्दयति, क दापेति, क दापयति	म्लाता है
कम्प	कम्पेति, कम्पयति, कम्पापेति, कम्पापयति	रूपाता है
चज	चाजेति, चाजयति, चाजापेति, चाजापयति	छाड़वाता है
भुज	भोजेति, भोजयति, भोनापेति, भोनापयति	मिलवाता है
बुध	बोधति, बोधयति, बोधापेति, बोधापयति	ज्ञात करवाता है
खिप	खिपेति, खिपयति, खिपापेति, खिपापयति	डकवाता है
लिख	लिखेति, लिखयति, लिखापेति, लिखापयति	लिखवाता है

लेखापितं । १३. सा इत्थी गाम गन्त्वा एक विहार कारापेसि । १४. अहं कदापि ब्राह्मणे न भोजापेमि । १५. कपणमनुस्सो धनिकेहि पलापयति ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. बैल गङ्गे में गिराया जाता है । २. हाथी को केला खिलाया जाता है । ३. गाँव में एक बढई द्वारा रथ बनाया जाता है । ४. स्थविर (= थेरो) गाँव से विहार में ले जाये जाते हैं । ५. अशोक द्वारा अनेक स्तूप बनवाये गए । ६. वह आदमी चोरों द्वारा मारा गया । ७. लडके से एक पत्र लिखवाते हैं । ८. आज पानी बरसाऊँगा । ९. तुमको घर ल्वा चलेँगा । १०. उससे भिक्षुओं को दान दिलवाऊँगा । ११. वह बच्चे को खिलवाता है । १२. बैल घर को कँपाता है । १३. रात में वह खेत में काम करवाता है । १४. तुम तथागत की वन्दना करवाओ । १५. अनाथपिण्डिक द्वारा जेतवन महाविहार बनवाया गया ।

तेइसवाँ पाठ

कुछ अनियमित पुल्लिङ्ग शब्द

नीचे कुछ ऐसे शब्दों के रूप दिए जाते हैं, जो अकारान्त तथा आकारान्त होते हुए भी 'बुद्ध' आदि शब्दों से भिन्न रूपवाले होते हैं —

राज (=राजा)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	राजा	राजा, राजाना
द्वितीया	राजान, राज	राजाना
तृतीया	राज्जा, राजेन, राजिना	राजेहि, राजृहि, राजेभि, राजभि
चतुर्थी	राज्जा, राजस्म्य, राजिना, राजस्म्य	राज्ज, राजून, राजानं
पञ्चमी	राज्जा, राजम्हा, राजस्सा	राजेहि, राजेभि, राजृहि,

ततिया	अत्तेन, अत्तना	अत्तेहि, अत्तेभि, अत्तनेहि, अत्तनेभि
चतुर्थी	अत्तनो, अत्तस्स	अत्तानं
पञ्चमी	अत्तना, अत्तस्मा, अत्तम्हा	अत्तेहि, अत्तेभि, अत्तनेहि, अत्तनेभि
छट्ठी	अत्तनो, अत्तस्स	अत्तानं
सप्तमी	अत्तनि, अत्तस्मिं, अत्तम्हि, अत्ते	अत्तनेसु, अत्तेसु
आलपन	अत्त, अत्ता	अत्ता, अत्तानो

ब्रह्म (= ब्रह्मा)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	ब्रह्मा	ब्रह्मा, ब्रह्मानो
द्वितीया	ब्रह्मानं, ब्रह्मं	ब्रह्मानो
ततिया	ब्रह्मना, ब्रह्मुना	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि, ब्रह्महि, ब्रह्मभि
चतुर्थी	ब्रह्मुनो, ब्रह्मस्स	ब्रह्मानं, ब्रह्मूनं
पञ्चमी	ब्रह्मना, ब्रह्मुना	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि, ब्रह्महि, ब्रह्मभि
छट्ठी	ब्रह्मुनो, ब्रह्मस्स	ब्रह्मानं, ब्रह्मूनं
सप्तमी	ब्रह्मे, ब्रह्मानि, ब्रह्मस्मिं, ब्रह्मम्हि	ब्रह्मेसु
आलपन	ब्रह्मे	ब्रह्मा ब्रह्मानो,

पुम (= मनुष्य)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	पुमा, पुमो,	पुमो, पुमानो,
द्वितीया	पुमानं, पुमं,	पुमानो, पुमाने, पुमे,

ततिरा	पुमाना, पुमुना, पुमेन	पुमानेहि, पुमानेभि, पुमेहि, पुमेभि
चतुर्थी	पुमुनो, पुमस्स	पुमानं
पञ्चमी	पुमाना, पुमुना, पुमा, पुमस्मा, पुमम्हा,	पुमानेहि, पुमानेभि, पुमेहि, पुमेभि,
उट्ठी	पुमुनो, पुमस्स	पुमानं,
सप्तमी	पुमाने, पुमे, पुमस्मि, पुमस्मिह,	पुमासु, पुमानेसु, पुमेसु
आल्पन	पुमं, पुम	पुमानो, पुमा

युव (= युवक)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	युवा,	युवा, युवानो, युवाना
तृतिरा	युवानं, युव	युवाने, युवे
ततिरा	युवाना, युवानेन युवेन	युवानेहि, युवानेभि, युवेहि, युवेभि
चतुर्थी	युवानस्म, युवस्म युविनां	युवानान युवान
पञ्चमी	युवाना, युवानस्मा युवानम्हा	युवानेहि, युवानेभि युवेहि. युवेभि.

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सा	सा, सानो
दुतिया	सं, सानं	से, साने
ततिया	सेन, साना	सेहि, सेभि, सानेहि, सानेभि
चतुर्थी	सस्स, साय, सानस्स,	सानं
पञ्चमी	सा, सस्मा, सम्हा, साना	सेहि, सेभि, सानेहि, सानेभि
छट्ठी	सस्स, सानस्स	सानं
सत्तमी	से, सस्सि, सम्हि, साने	सासु
आलपन	स, सान	सा, सानो

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. रज्जा तस्मिं गामे एको भिक्खून् आवासो कारापितो । २. राजिनि पसन्नमिह भटो धनवा जातो । ३. राजून् कम्म पसत्थ न होति । ४. अत्तनो चित्तं निग्गण्हाहि । ५. अत्तना पापकम्म न कातव्व । ६. ब्रह्मानो आकासे तिष्ठन्ति । ७. ब्रह्मणो नत्ता काल कतो । ८. पुमानो गामेषु आहिण्डन्ति । ९. तस्मिं पुमे दारको निसिन्नो होति । १०. इदानीं युवान् कालो आगतो । ११. मघवा समगे पमोदति । १२. अज्ज गेहा साने पलापेहि । १३. सुवपोत्तको आकासे उड्ढेति । १४. राजानो यदा कदा धम्मिका होन्ति । १५. मय पुमान् धम्म देसेम ।

पालि में अनुवाद कीजिए :—

१. राजा देवी के साथ राजभवन में है । २. राजाओं द्वारा एक विहार बनवाया गया । ३. गाँव में अपने लिए मैंने घर बनवाया है ।

१ मैं गला को कर (=सुख) देता हूँ । ५. ब्रह्मा लोगों को उपदेश देने
 ७ । ६ मनुष्य पर से बाहर जाता है । ७ उस आदमी पर राजा अत्य-
 विर प्रसन्न है । ८ युवक बैठकर पुस्तक लिखता है । ९ युवक के साथ
 एक तर्गा नी नी भी पैदा है । १० कुत्ते डूँधर उपर (=इतो चित्ता) वृमते
 है । ११ दुत्तो को लोग पामने है । १२ वह भोजन करके अपने साथी
 को नी (=सहायकम्पि) बुलाता है । १३ तुम अपने स्थान से कहाँ जाते
 हो ? १४ आम का पेट भूमि पर गिर गया । १५ हाथी कुत्ता से कभी
 नी नही डरता है ।

चौबीसवाँ पाठ

सर्वनाम शब्द

सर्व (= सब)

पुल्लिङ्ग

एकवचन

बहुवचन

पठमा

सर्वो

सर्वे

द्वितीया

सर्वं

सर्वे

तृतीया

सर्वेन

सर्वेहि, सर्वेभि

चतुर्थी

सर्वस्स

सर्वेसानं

पञ्चमी

सर्वम्हा, सर्वस्मा

सर्वेहि, सर्वेभि

छट्ठी

सर्वस्स

सर्वेसं, सर्वेसानं

सप्तमी

सर्वम्हि, सर्वस्मि

सर्वेसु

आलपन

सर्व, सर्वा

सर्वे

नपुंसकलिङ्ग

एकवचन

बहुवचन

पठमा

सर्वं

सर्वानि

द्वितीया

सर्वं

सर्वे, सर्वानि

आलपन

सर्व, सर्वा

सर्वानि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान ही होंगे ।

स्त्रीलिङ्ग

एकवचन

बहुवचन

पठमा

सर्वा

सर्वा, सर्वायो

द्वितीया

सर्वं,

” ”

ततिया	सञ्चाय	सञ्चाहि, सञ्चाभि
चतुर्थी	सञ्चस्सा, सञ्चाय	सञ्चासं, सञ्चासानं
पञ्चमी	सञ्चाय	सञ्चाहि, सञ्चाभि
उट्टी	सञ्चस्सा, सञ्चाय	सञ्चास, सञ्चासान
सप्तमी	सञ्चस्मं, सञ्चाय	सञ्चासु
आल्पन	सञ्चे	सञ्चा, सञ्चायो

इस शब्दों के रूप भी सञ्च शब्द के ही समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कतर	कौन	कतम	कौन-सा
अञ्च	अन्य	इतर	दूसरा
अञ्चतम	कोई	अञ्चतर	कोई

पुन्य, पर, अपर, दक्षिण, उत्तर तथा अधर शब्दों के रूप भी 'स' के समान ही होंगे, केवल षष्ठ्या बहुवचन में इनके 'न' रूप होंगे ।
तथा

पुञ्चे, पुञ्चा । परे, परा । अपरे, अपरा । दक्षिणे, दक्षिणा ।
उत्तरे, उत्तरा । अधरे अधरा ।

कि (=कौन)

न - विभक्ति में कि शब्द का 'क' आदेश न जाता ? ।

सत्तमी कम्हि, किम्हि, कस्मिं, केसु
किस्मिं

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	किं, कं	के, कानि
दुतिया	किं, कं	के, कानि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान ही होंगे ।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	का	का, कायो
दुतिया	कं	का, कायो
ततिया	काय	काहि, काभि
चतुर्थी	कस्सा, काय	कासं, कासानं
पञ्चमी	काय	काहि, काभि
छट्ठी	कस्सा, काय	कासं, कासानं
सत्तमी	कस्सं, कायं	कासु

‘य’ (= जो) शब्द के रूप तीनों लिंगों में ‘किं’ के समान ही होंगे ।
पुल्लिङ्ग में—यो, ये । य, ये । येन, येहि, येभि । यस्स, येस, येसानं ।
यग्हा, यस्सा, येहि, येभि । यस्स, येस, येसान । यग्हि,
यस्मि, येसु ।

नपुंसकलिङ्ग में—य, ये, यानि । य, ये, यानि । शेष रूप पुल्लिङ्ग के
समान ही होंगे ।

स्त्रीलिङ्ग में—या, या, यायो । य, या, यायो । याय, याहि याभि ।
यस्सा, याय, यास, यासानं । याय, याहि, याभि । यस्सा,
याय, यास, यासान । यस्सं, याय, यासु ।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

- १ मय्ये जना बुद्ध मरण गच्छन्ति । २ मत्वा इत्थियो पुत्ते पोमेन्ति ।
 ३ मय्यामु दिग्गामु अपटिहत्तो एव भवन्ति । ४ मय्य धन उट्टेत्वा परलोकं
 गन्तुं भविस्मति । ५ अज्जतरो पुग्गलो आगतो । ६ अज्ज कतमी तिथि
 हाति । ७ जन्तम दासकं मिस्सवापेमि । ८ अज्ज गोणं मय्ये योजेहि ।
 ९ का जज्जा, कदा हि भविस्मति । १० यो पुरिमो ततो आगतो, सो
 एव ताव भविष्याय मण्डिं भुवति । ११ इतरा मेये निमीदिवा पोत्थक
 लपति । १२ मुनय्या वावित्वा मय्येमु गेयमु भत्तं भुवति । १३ मय्यायो
 गाविना र्वाणं ददन्ति । १४ का आकाममग्गेन मत्तं कगेन्ता गच्छन्ति ।
 १५ पटविय मय्यो जना मयन्ति ।

पालि में अनुवाद कीजिए —

पञ्चीसवाँ पाठ

सर्वनाम शब्द

एत (=यह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	एसो	एते
द्वितीया	एतं, एनं	एते, एने
तृतीया	एतेन	एतेहि, एतेभि
चतुर्थी	एतस्स	एतेसं, एतेसानं
पञ्चमी	एतम्हा, एतस्मा	एतेहि, एतेभि
छट्ठी	एतस्स	एतेस, एतेसानं
सप्तमी	एतम्हि, एतस्मि	एतेसु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	एतं	एते, एतानि
द्वितीया	एतं	एते, एतानि

जोप रूप पुल्लिङ्ग के समान ही होंगे ।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	एसा	एता, एतायो
द्वितीया	एतं	एता, एतायो
तृतीया	एताय	एताहि, एताभि

चतुर्थी	एतिस्माय, एतिस्सा, एताय	एतासं, एतासानं
पञ्चमी	एताय	एताहि, एताभि
छट्ठी	एतिस्माय, एतिस्सा, एताय	एतासं, एतासान
सप्तमी	एतिस्मं, एतस्मं, एतासं	एतासु

इम (=यद्)

पुलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	अय	इमे
द्वितीया	इमं	इमे
तृतीया	अनेन, इमिना	एति, एभि, इमेति, इमेभि
चतुर्थी	अस्म, इमस्म	एस्म, एस्मान, इमेस्म, इमेस्मान
पञ्चम	अस्मा, इमस्मा, इमस्मा	एति, एभि, इमेति, इमेभि
छट्ठी	अस्म, इमस्म	एस्म, एस्मान, इमेस्म, इमेस्मान
सप्तमी	अस्मि, इमस्मि, इमस्मि	एसु, इमेसु

नपुंसकलिङ्ग

एकवचन	बहुवचन
इद, इम	इमे, इमानि
इद, इमं	इमे इमानि
पुलिङ्ग इ स्म ए तं ।	

स्त्रीलिङ्ग

एकवचन	बहुवचन
अय	इमा, इमाया
इम	इमा, इमायो
इमाय	इमाति इमाभि
इमाय इमाय	इमास्म, इमास्मान
इमिस्म इ इमिस्मा इमाय	

पञ्चमी	इमाय	इमाहि, इमाभि,
छट्टी	अस्ताय, अस्ता,	इमासं इमासानं
	इमिस्ताय, इमिस्ता, इमाय	
सप्तमी	अस्तं, इमिस्तं, इमायं	इमासु

अमु (=वह)

पुल्लिंग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	असु, अमुको	अमू, अमुयो
द्वितीया	अमुं	अमू, अमुयो
तृतीया	अमुना	अमूहि, अमूभि
चतुर्थी	अमुस्त	अमूसं, अमूसानं
पञ्चमी	अमुना, अमुन्हा, अमुस्ता	अमूहि, अमूभि
छट्टी	अमुस्त	अमूसं, अमूसानं
सप्तमी	अमुन्हि, अमुस्मिं	अमूसु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	अदुं, अमुं	अमू, अमूनि
द्वितीया	अदुं, अमुं	अमू, अमूनि

शेष रूप पुल्लिंग के समान ही होंगे ।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	असु, अमु	अमू, अमुयो
द्वितीया	अमुं	अमू, अमुयो
तृतीया	अमुया	अमूहि, अमूभि
चतुर्थी	अमुस्ता, अमुया	अमूसं, अमूसानं
पञ्चमी	अमुया	अमूहि, अमूभि

उद्दी	अमुस्सा, अमुया	अमूस, अमूसान
गत्तर्मा	अमुस्सं, अमुयं	अमूसु

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. एसा नरो पलायित्वा गामा आगच्छति । २. एतन् उपायन मय
 यन् लभिमाम । ३. एतानि यनानि विभक्तित्वा ते वणिज्ज करिस्मन्ति ।
 ४. एतास इत्थीन मामिका राजपुरिमा होन्ति । ५. अय पुरिमा गाम एव
 चरति । ६. अनेन दारयन पल चोरित । ७. इम सामाव गटेवा पन्नानेय
 स भन्ते । ८. इमस्मि विदार बुद्धस्स अतीव मुदर । ९. इमानि पुत्तानि
 कत्वा सग्ग पमोदय । १०. इमिस्सा गाथाय को अत्था । ११. इमाय
 मालाय तुम्ह वसय । १२. अमुको सोणो पलायित्वा गता । १३. अट्ट
 पल नारिकेल न होति । १४. अमुस्सा वनिताय पति अम्हाय वित्तालय
 गच्छित्वा न ति । १५. एतस्म गामो नदीकटे अट्ठविअ अयि ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

छब्बीसवाँ पाठ

‘वन्तु’ और ‘मन्तु’ प्रत्ययान्त शब्द

‘वाला’ के अर्थ में नाम के आगे ‘वन्तु’ तथा ‘मन्तु’ प्रत्यय लगते हैं। अकारान्त और आकारान्त शब्दों के आगे ‘वन्तु’ तथा इकारान्त आदि शब्दों के आगे ‘मन्तु’ प्रत्यय लगते हैं। जैसे—फलवन्तु = फल-वाला। बुद्धिमन्तु = बुद्धिमान्।

पुलिङ्गशब्द

गुणवन्तु (= गुणवाला)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गुणवा	गुणवन्तो, गुणवन्ता
द्वितीया	गुणवन्तं	गुणवन्ते
तृतीया	गुणवता, गुणवन्तेन	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि
चतुर्थी	गुणवतो, गुणवन्तस्स	गुणवतं, गुणवन्तानं
पञ्चमी	गुणवता, गुणवन्तस्मा,	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि
	गुणवन्तम्हा	
छट्ठी	गुणवतो, गुणवन्तस्स	गुणवतं, गुणवन्तानं
सप्तमी	गुणवति, गुणवन्ते,	गुणवन्तेषु
	गुणवन्तस्मि, गुणवन्तम्हि	
आल्पन	गुणवं, गुणव, गुणवा	गुणवन्तो, गुणवन्ता
	नपुंसकलिङ्ग	

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गुणवं, गुणवन्तं	गुणवन्ता, गुणवन्तानि
द्वितीया	गुणवं, गुणवन्तं	गुणवन्ता, गुणवन्तानि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान ही होंगे ।

स्त्रीलिङ्ग

स्त्रीलिङ्ग में 'वन्तु' का 'वती' तथा 'वन्ती' और 'मन्तु' का 'मती' तथा 'मन्ती' हो जाता है । जैसे—गुणवती, गुणवन्ती । सिरीमती, सिरीमन्ती । इनके रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'इत्थी' शब्द के समान होंगे । (देखिये, ग्यारहवाँ पाठ) ।

इन शब्दों के रूप भी 'गुणवन्तु' के समान ही होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कुलवन्तु	अच्छ कुलवाला	धनवन्तु	धनवान
पद्मवन्तु	प्रभावान	फलवन्तु	फलवाला
चलवन्तु	चलवान	भगवन्तु	भाग्यवाला
मघवन्तु	इन्द्र	यसवन्तु	यशवाला
शीलवन्तु	शीलवान	सुतवन्तु	सतवान
हिमवन्तु	हिमालय	कलिमन्तु	कालिमायुक्त
कसिमन्तु	कृपण	केतुमन्तु	केतुवाला
गतिमन्तु	गतिवाला	चक्रवर्तुमन्तु	चक्रवाला

काल में 'न्त' और 'मान' प्रत्ययों से पूर्व 'स्स' का आगम हो जाता है ।
जैसे—हसिस्सन्तो, हसिस्समानो ।

'मान' प्रत्ययान्त शब्द के रूप पुल्लिङ्ग में 'बुद्ध' शब्द के समान,
नपुंसकलिङ्ग में 'फल' शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द के
समान हाते हैं ।

गच्छन्त (= जाता हुआ)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गच्छं, गच्छन्तो	गच्छन्तो, गच्छन्ता,
द्वितीया	गच्छन्तं	गच्छन्ते
तृतीया	गच्छता, गच्छन्तेन	गच्छन्तेहि, गच्छन्तेभि
चतुर्थी	गच्छतो, गच्छन्तस्स	गच्छतं, गच्छन्तानं
पञ्चमी	गच्छता, गच्छन्तम्हा,	गच्छन्तेहि, गच्छन्तेभि
	गच्छन्तस्मा	
छट्ठी	गच्छतो, गच्छन्तस्स	गच्छतं, गच्छन्तानं
सप्तमी	गच्छति, गच्छन्तस्मिं,	गच्छन्तेसु
	गच्छन्तस्मिह, गच्छन्ते	
आलपन	गच्छं, गच्छ, गच्छा	गच्छन्तो, गच्छन्ता

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गच्छं, गच्छन्तं	गच्छन्ता, गच्छन्तानि
द्वितीया	गच्छन्तं	गच्छन्ते, गच्छन्तानि
आलपन	गच्छं, गच्छन्त	गच्छन्ता, गच्छन्तानि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के ही समान होंगे ।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गच्छन्ती	गच्छन्ती, गच्छन्तियो

गुतिषा	गच्छन्ति	गच्छन्ती, गच्छन्तियो
नतिषा	गच्छन्तिया	गच्छन्तीहि, गच्छन्तीभि
चतुर्थी	गच्छन्तिया	गच्छन्तीनं
पञ्चमी	गच्छन्तिया	गच्छन्तीहि, गच्छन्तीभि
ऋद्धी	गच्छन्तिया	गच्छन्तीनं
सप्तमी	गच्छन्तिया, गच्छन्तिय	गच्छन्तीसु
आल्पन	गच्छन्ति	गच्छन्ती, गच्छन्तियो

इन पादों में रूप भी गच्छन्त' शब्द में ही समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अच्यन्त	पूजा करता हुआ	कम्पन्त	कॉपता हुआ
अज्जन्त	कमाना हुआ	कीलन्त	गलता हुआ
अटन्त	रमना हुआ	गज्जन्त	गरजता हुआ
अदन्त	पाता हुआ	चजन्त	छोटता हुआ
चरन्त	विचरण करता हुआ	जीवन्त	जीता हुआ
तिष्ठन्त	पड़ा रोका हुआ	भव	आप
मीयन्त	भरता हुआ	मुणन्त	मुनता हुआ
जयन्त	जैता हुआ	विहरन्त	विहरता हुआ
वदन्त	बता हुआ	बुज्जन्त	गता हुआ
पचन्त	पकाता हुआ	कुप्यन्त	फरता हुआ

९ चक्षुमन्ता बुद्ध अच्चन्ता गेह गच्छन्ति । १०. भरियायो अटवीसु अटन्तियो रोदन्ति । ११. अरञ्जे सीहा गज्जन्ता चरन्ति । १२. भिक्खवो किलेसे जहन्ता अरहन्तो भवन्ति । १३. नरा इतो मीयन्ता परलोक गच्छन्ति । १४ ददतो पुञ्ज पवड्ढति । १५. पापकम्म कुब्बन्तो पापकारिनो निरये उप्पज्जन्ति ।

पालि में अनुवाद कीजिए:—

१. गुणवान् मरकर स्वर्ग में उत्पन्न होता है । २. गुणवानो के पुत्र शीलवान् होते हैं । ३. गुणवती कन्या को कौन नहीं चाहता है । ४. बलवान् लोग दुर्बलों पर अनुकम्पा करते हैं । ५. उसकी पुत्री भाग्यवती होगी । ६. फलवान् वृक्ष शोभा देते हैं । ७. स्मृतिमान् लडका स्कूल जाते हुए पढता था । ८ हिमालय में पक्षी रहते हैं । ९. यशवान् भिखारी भिक्षा नहीं माँगता है । १०. राजा का भाई खेलता हुआ भी रोता है । ११. उस रथ पर भात खाता हुआ दास बैठेगा । १२. मैं मार्ग में खड़ा होता हुआ तुम्हें देखूँगा । १३. मेरी स्त्री आजकल (=अधुना) अत्यधिक बीमार है । १४. उसका पिता धर्म सुनता हुआ सोता था । १५. वह स्त्री भात पकाती हुई ध्यान बढ़ा रही थी ।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

'मन' (= चित्त)

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	मनो	मना, मनानि
द्वितीया	मनं, मनो	मने, मनानि
तृतीया	मनसा, मनेन	मनेहि, मनेभि
चतुर्थी	मनसो, मनस्स	मनानं
पञ्चमी	मनसा, मनस्मा, मनम्हा	मनेहि, मनेभि
छट्ठी	मनसो, मनस्स	मनान
सप्तमी	मनसि, मने, मनम्हि, मनस्मि	मनेसु
आल्पन	मन, मना	मनानि

इन शब्दों के रूप भी 'मन' शब्द के समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
तम	अन्धकार	तप	तप
तेज	तेज	सिर	सिर
उर	उर	वच	वचन
ओज	ओज	रज	'गूल'
यस	यश	पय	दूध, पानी
चेत	चित्त	वय	उम्र
सर	तालाव	चास	वन्त
अय	लोहा		

परिवारवाची शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
ससुर	श्वशुर	मातुल	मामा
भाता	भाई	सहज	भाई
पितामह	बाबा	मातामही	ईसा
अम्मा	माता	घाति	घाई

मातुलानि	मामी	मातुच्छा	मासी
पितुच्छा	फूआ	मातुज	भतीजा
चुलपिता	चाचा	सम्सु	सामु

शरीरावयववाची शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
नय	नय	हृत्थ	हाथ
करपुट	हथेली	हृदय	हृदय
गेल	यम	मुख	मुख
नासिका	नाक	सत्रण	कान
घ्राण	नास	सरीर	शरीर
उर	पेचा	यन	स्तन
उदर	पेट	जघन	चूतट
पाद	पेग	पिट्टि	पीठ
खीर	दूध	पम्माव	पमाव
उन्चार	वाग्वाना	जघा	नरदर
अगुलि	अगुलि	कंस	कंस
लाम	गर्भ	दन्त	दात

कञ्जा गाविया खीरेन पायास पचित्वा बोधिसत्तस्स अदासि । १४. सो मारसेन अभिभवित्वा सदेवके लोके सम्मासम्बुद्धो जातो । १५. इमिपतने मिगदाये तथागतेन अनुत्तर धम्मचक्क पवत्ति ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. दाता ने भिखारियों को वस्त्र और अन्न दिया । २. नेता ने लोक को हराकर विजय प्राप्त की । ३. भगवान् बुद्ध (= भगवा बुद्धो) कपिलवस्तु से राजगृह गए । ४. राजगृह में द्वार-द्वारपर भिक्षा माँगी । ५. चिम्विसार ने उन्हें अपनी आँखों से देखा । ६. दूतों को भेजकर उन्हें राजभवन में बुलाया । ७. बोधिसत्त्व ने ज्ञानी के मन को सन्तुष्ट कर दिया । ८. तपोदा नदी का जल गर्म (= उण्ह) होता है । ९. भिक्षु तथागत के साथ उसमें नहाते हैं । १०. वह यथ अन्य यक्षों के साथ उपदेश देता हुआ घूमता है । ११. अगुलिमाल ने अगुलियों को गूँथकर माला बनाई । १२. वह श्रावस्ती (= सावत्थी) नगर के पास जगल में रहता था । १३. प्रातःकाल ही तथागत जगल की ओर गए । १४. उन्होंने अगुलिमाल को उपदेश देकर भिक्षु बना लिया । १५. अगुलिमाल ने थोड़े ही दिनों में ज्ञान प्राप्त कर लिया और अर्हत् हो गया ।

अट्टाइसवाँ पाठ

संख्यावाचक शब्द

३९. एकूनचत्तालीसति	७०. सत्तति
४०. चत्तालीसति	७१. द्वेसत्तति, द्विसत्तति, द्वासत्तति
४१. एकचत्तालीसति	७९. एकूनासीति
४२. द्वेचत्तालीसति, द्विचत्तालीसति	८०. असीति
४९. एकूनपञ्जासति	८१. एकासीति
५०. पञ्जासति, पण्णासति	८२. द्वेअसीति, द्वियासीति, द्वासीति
५२. द्वेपञ्जासति, द्वेपण्णासति	८९. एकूननवुति
द्विपञ्जासति, द्विपण्णासति	९०. नवुति
५९. एकूनसट्ठि	९२. द्वेनवुति, दिनवुति, द्धानवुति
६०. सट्ठि	९९. एकूनसत
६२. द्वेसट्ठि, द्वासट्ठि, द्विसट्ठि	१००. सत
६९. एकूनसत्तति	

सख्यावाचक शब्द प्रायः विशेषण की भाँति प्रयुक्त होते हैं, इसलिए उनमें वही लिंग, विभक्ति तथा वचन होते हैं, जो उनके विशेष्य में।

सख्या के अर्थ में 'एक' शब्द एकवचन ही होता है, किन्तु 'एक' शब्द की गणना सर्वनाम में होती है। यह सख्या, अतुल्य, असहाय तथा अन्य—इतने अर्थों में प्रयुक्त होता है।

एक पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	एको	एके

उदाहरण इस प्रकार जानना चाहिए—

१. संख्या—एको दारको (= एक लड़का)।

२. अतुल्य—उद्धो एकोव लोके (= लोक में बुद्ध अतुल्य है)।

३. असहाय—अहं एकोय अरब्जे विहरामि (= मैं जंगल में अकेला विहार करता हूँ)।

द्वितीया	एक	एके
तृतीया	एकेन	एकेहि, एकेभि
चतुर्थी	एकस्स	एकेसं, एकेसान
पञ्चमी	एकम्हा, एकस्मा	एकेहि, एकेभि
उष्टी	एकस्स	एकेसं, एकेसान
सप्तमी	एकम्हि, एकस्मि	एकेसु

नपुंसकलिङ्ग

	एक वचन	बहुवचन
पटमा	एक	एके, एकानि
द्वितीया	एक	एके, एकानि

एक रूप पुल्लिङ्ग के समान ही दाग ।

स्त्रीलिङ्ग

(१०५)

चतुर्थी
पञ्चमी
छट्ठी
सप्तमी

द्विन्नं, दुविन्नं
द्वीहि, द्वीभि
द्विन्नं, दुविन्नं
द्वीसु
उभ

‘उभ’ (=दोनों) शब्द भी बहुवचन होता है और इसके रूप तीनों लिंगों में समान होते हैं ।

पठमा
द्वितीया
तृतीया
चतुर्थी
पञ्चमी
छट्ठी
सप्तमी

बहुवचन
उभो
उभो
उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि
उभिन्नं
उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि
उभिन्नं
उभोसु, उभेसु
ति

‘ति’ (=तीन) शब्द भी बहुवचन होता है, किन्तु इसके रूप तीनों लिंगों में भिन्न होते हैं ।

पुल्लिङ्ग
तयो
तयो
तीहि, तीभि
तिण्ण, तिण्णन्नं
तीहि, तीभि
तिण्णं, तिण्णन्नं
तीसु

नपुंसकलिङ्ग
तीणि
तीणि
शेष रूप
पुल्लिङ्ग के
समान ही
होंगे

स्त्रीलिङ्ग
तिस्सो
तिस्सो
तीहि तीभि
तिस्सन्नं
तीहि, तीभि
तिस्सन्नं
तीसु

चतु

‘चतु’ (= चार) शब्द भी बहुवचन होता है। इसके भी रूप तीनों निम्न ३ भिन्न होते हैं।

	पुल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पठमा	चत्तारे, चतुगे	चत्तारि	चतम्सो
द्वितीया	चत्तारे, चतुगे	चत्तारि	चतुम्सो
तृतीया	चत्तहि, चत्तभि	येष स्म	चत्तहि, चत्तभि
चतुर्थी	चतुन्नं	पुल्लिङ्ग के	चतम्सन्नं
पञ्चमी	चत्तहि, चत्तभि	समान ही	चत्तहि, चत्तभि
षष्ठी	चतुन्न	ही	चतम्सन्न
सप्तमी	चतुसु	---	चतुसु

एकवचन

पठमा	एकूनवीसति
दुतिया	एकूनवीसतिं
ततिया	एकूनवीसतिया
चतुर्थी	एकूनवीसतिया
पञ्चमी	एकूनवीसतिया
छट्टी	एकूनवीसतिया
सत्तमी	एकूनवीसतियं

एकूनवीसति से अट्टनवुति तक आकारान्त शब्दों के रूप 'लता' शब्द के समान और इकारान्त शब्दों के रूप 'रत्ति' शब्द के समान होंगे ।

एकूनसतं

'एकूनसत' (=निन्नानवे) से लेकर मतसहस्स (=लाख) तक, सभी शब्द नपुसक, एकवचन होते हैं ।

एकवचन

पठमा	एकूनसतं
दुतिया	एकूनसतं
ततिया	एकूनसतेन
चतुर्थी	एकूनसतस्स, एकूनसताय
पञ्चमी	एकूनसता, एकूनसतस्मा, एकूनसतम्हा
छट्टी	एकूनसतस्स
सत्तमी	एकूनसते, एकूनसतम्हि, एकूनसतस्मि

'सत' (= सो) से आगे की सख्यायें इस प्रकार होती हैं .—

मत	एक पर २ अन्य
सहस्स	, ३ ,,
नहुत	,, ४ ,.

पठमा
दुतिया
ततिया
चतुर्थी
पञ्चमी
छट्ठी
सत्तमी

बहुवचन
कति
कति
कतीहि, कतीभि
कतीनं, कतिन्नं
कतीहि, कतीभि
कतीनं, कतिन्नं
कतीसु

पूरणार्थक शब्द
नपुंसकलिङ्ग

पुलिङ्ग
१ पठमो
२ दुतियो
३ ततियो
४ चतुर्थो
५ पञ्चमो
६ छट्ठो
७ सत्तमो
८ अट्ठमो
९ नवमो
१० दसमो

पठमं
दुतियं
ततियं
चतुर्थं
पञ्चमं
छट्ठं
सत्तमं
अट्ठमं
नवमं
दसमं

स्त्रीलिङ्ग
पठमा
दुतिया
ततिया
चतुर्थी, चतुत्था
पञ्चमी
छट्ठा, छट्ठी
सत्तमा, सत्तमी
अट्ठमा, अट्ठमी
नवमा, नवमी
दसमा, दसमी
एकादसी

११ एकादसो, एकादसमो एकादसमं
१२ वारसो, वारसमो, वारसमं, द्वादसमं द्वादसी

द्वादसमो
१३ तेरसो, तेरसमो तेरसमं
१४ चतुदसमो चतुदसमं
१५ पञ्चदसमो, पण्णरसमो पञ्चदसमं, पण्णरसमं

तेरसी
चतुदसी, चातुदसी
पञ्चदसी, पण्णरसी

१६ सोळसमो	सोळसमं	सोळसी
१७ सत्तसमो, सत्तदसमो	सत्तसमं, सत्तदसमं	सत्तससी, सत्तदसी
१८ अट्ठासमो, अट्ठादसमो	अट्ठासमं, अट्ठादसमं	अट्ठाससी, अट्ठादसी
१९ एकवीसतिमो	एकवीसतिमं	एकवीसतिमा, एकवीसतिमी

इसके आगे मन्त्रावाचन शब्दा के साथ 'म' लगाकर परणार्थक
 १९ दसो एत २ । नमे—एकवीसतिमो, तिसतिमो ।

विशेष शब्द

पालि में अनुवाद कीजिए—

१ दास ने आठ आम मुझे दिए । २ तीन दिनों से वह बीमार है । ३. मैंने आज दस कटहल (= पनस) के फलों को खरीदा है । ४. एक स्त्री अपने पति से झगड़ा करके (= कोलाहल कत्वा) दो पुत्रों को ले माता के घर चली गई । ५. भिक्षु लोग सौ वर्ष से अधिक जीते हैं । ६. कितने दिनों से पानी बरस रहा है ? ७. चालीस आदमी घास काटते हैं । ८. दासी ने सात पुस्तकें बच्चों को दिए । ९. तथागत अस्सीवें वर्ष में परिनिर्वाण को प्राप्त हुए (= परिनिन्वायि) । १०. एक रुपये में डेढ़ आम मिलते हैं । ११. सौ कार्पाणों से (= कक्षापणेहि) एक घर खरीद सकते हो । १२. अढ़ाई दिन में मैं नव कोस आया हूँ । १३. बकरी बारहवें दिन मर गई । १४. हाथियों ने जंगल में डेढ़ दिन तक वास किया । १५. सौ से अधिक आदमी यहाँ प्रतिदिन काम करते हैं ।

उन्तीसवॉ पाठ

परोक्ष समझी जाती है। इस प्रकार के परोक्ष में, उत्तम पुरुष में भी परोक्ष भूत का प्रयोग होता है। जैसे—सुतोन्वहं विललाप। मन्तोन्वहं विललाप। अचेनवोहं पठवियं पपत।

हेतुहेतुमद्भूत

जिस भूतकालिक क्रिया से जाना जाय कि एक क्रिया का होना दूसरी के ऊपर निर्भर था, तो उसे हेतुहेतुमद्भूत कहते हैं। जैसे—सचे पठमवये पव्वज्जं अलभिस्सा, अरहा अभविस्सा (= यदि वह प्रथम आयु में प्रव्रज्या पाए होता, तो अर्हत् हो गया होता)।

एकवचन	बहुवचन
पठम पुरिस अपठिस्सा	अपठिस्संसु
मज्झिम पुरिस अपठिस्से	अपठिस्सथ
उत्तम पुरिस अपठिस्सं	अपठिस्सम्हा

हेतुहेतुमद्भूत के कुछ विशेष धातु-रूप .—

धातु	रूप
कर	अकाहा, अकरिस्सा
हा	अहाहा, अहायिस्सा
लभ	अलच्छा, अलभिस्सा
वत्त	अवच्छा, अवत्तिस्सा
छिद	अच्छेच्छा, अच्छिन्दिस्सा
भिद	अभेच्छा, अभिन्दिस्सा
रुद	अरुच्छा, अरोदिस्सा
भुज	अभोक्खा, अभुज्जिस्सा
मुच	अमोक्खा, अमुज्जिस्सा
वच	अवक्खा, अवत्तिस्सा
प + वित्त	पावेक्खा, पाविसिस्सा
सक	सक्किस्सा, सक्कुणिस्सा

नु
अस्

अन्मोन्सा, अमुणिन्सा
अभविन्सा

अत्तनोपद धातु-रूप

तीसरे पाठ में उतलाया गया है कि पालि में धातु के रूप परस्मपद-
नार अत्तनोपद दो प्रकार के होते हैं, किन्तु परस्मपद के रूप ही बहुधा
प्रयुक्त होते हैं, अतः यहाँ तब सभी धातुओं के परस्मपद (= परस्मैपद)
रूप ही दिए गए हैं। यहाँ अत्तनोपद (= आत्मनेपद) में 'पठ' धातु के
रूप सभी कालों में दिए जाते हैं। सभी धातुओं के रूप इसी प्रकार होंगे।
उद स्मरण रखना चाहिए कि परस्मपद तथा अत्तनोपद के रूपा के प्रयोग
में जोर रखना पड़ेगा।

(११५)

मज्झिम पुरिस अपठसे, पठसे
उत्तम पुरिस अपठं, अपठ, पठं. पठ
विधिलिङ्ग^१

अपठव्हं, पठव्हं
अपठम्हे, पठम्हे

एकवचन
पठम पुरिस पठेथ
मज्झिम पुरिस पठेथो
उत्तम पुरिस पठेय्यं

बहुवचन
पठेरं
पठेय्यव्हो
पठेय्याम्हे

एकवचन
पठम पुरिस पठतं
मज्झिम पुरिस पठस्सु
उत्तम पुरिस पठे

अनुज्ञा^१

बहुवचन
पठन्तं
पठन्हो
पठामसे

एकवचन
पठम पुरिस अपठत्थ
मज्झिम पुरिस अपठसे
उत्तम पुरिस अपठि

अनद्यतनभूत^१

बहुवचन
अपठत्थुं
अपठव्हं
अपठाम्हेसे

एकवचन
पठम पुरिस पपठित्थ
मज्झिम पुरिस पपठित्थो
उत्तम पुरिस पपठि

परोक्षभूत^१

बहुवचन
पपठिरे
पपठिव्हो
पपठिम्हे

एकवचन
पठम पुरिस अपठिस्सय

हेतुहेतुमद्भूत^१

बहुवचन
अपठिस्सिसु

१ परस्पर के रूप के लिए देखिये उल्लोसर्वा पाठ ।
२ परस्पर के रूप के लिए देखिये सत्रहर्वा पाठ ।
उल्लोसर्वा पाठ ।
३-” ” ”

मरिचम पुग्मि अपटिस्ससे
उत्तम पुग्मि अपटिस्सं

अपटिस्सवहे
अपटिस्साम्हासे

अभ्यास

तीसवाँ पाठ

उपसर्ग

पालि में अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं—(१) उपसर्ग, (२) निमित्तार्थक, (३) पूर्वकालिक, (४) तद्धितान्त, और (५) रूढि वा निपात । इनमें से निमित्तार्थक (देखिए इफ़ीसवाँ पाठ), पूर्वकालिक (देखिये चौदहवाँ पाठ), तथा निपात (देखिये ग्यारहवाँ पाठ) के वर्णन किए जा चुके हैं ।

उपसर्ग बीस हैं—प, परा, नि, नी, उ, दु, सं, वि, अव, अनु, परि, अभि, अवि, पति, सु, आ, अति, अपि, अप, उप । उपसर्ग धातुओं के प्रारम्भ में लगते हैं । उपसर्ग लगने पर क्रिया के अर्थ में कभी तो कुछ विशेषता हो जाती है, कभी भिन्न और कभी बिल्कुल उल्टा ही अर्थ हो जाता है । जैसे —

जहति = छोड़ता है— पजहति = एकदम छोड़ता है ।

गच्छति = जाता है— आगच्छति = आता है ।

हरति = हरण करता है— पहरति = मारता है ।

आहरति = लाता है— संहरति = संहार करता है ।

उपसर्गों के कुछ उदाहरण

१. 'प' उपसर्ग

पञ्चजति = घर से निकल जाता है ।

पसारंति = फैलाता है ।

पच्छिन्दति = काटता है ।

पकोपेति = अत्यन्त कुपित होता है ।

पभाति = मृच चमकता है ।

पजानाति = भली प्रकार जानता है ।

३ 'परा' उपसर्ग

पराजयति = हराता है ।

पलेति = भागता है ।

पराममति = स्पर्श करता है ।

४ 'नी', 'नि' उपसर्ग

निरगमति = निकलता है ।

निगच्छति = बाहर निकलता २ ।

निट्टापेति = समाप्त करता है ।

निन्नामेति = शानपूर्वक मुनता २ ।

५ 'उ' उपसर्ग

उगच्छति = ऊपर उठता है ।

उद्गृहति = उठता २ ।

९. 'अव' उपसर्ग

अवजानाति = निन्दा करता है ।

अवसज्जति = छोड़ता है ।

अवमञ्जति = निरादर करता है ।

१०. 'अनु' उपसर्ग

अनुकम्पति = अनुकम्पा करता है ।

अनुकरोति = अनुकरण करता है ।

अनुजानाति = स्वीकृति देता है ।

अनुतप्पति = अनुताप करता है ।

११. 'परि' उपसर्ग

परिक्खति = परीक्षा लेता है ।

परिभवति = अनादर करता है ।

परिस्वहति = हरा देता है ।

१२. 'अभि' उपसर्ग

अभिधावति = किसी ओर दौड़ता है ।

अभिहरति = लाता है ।

१३. 'अधि' उपसर्ग

अधिभवति = हरा देता है ।

अधिवासेति = त्वीकार करता है ।

१४. 'पति' उपसर्ग

पटिक्कमति = लौटता है ।

पटिगच्छति = पीछे छोड़ निम्न जाता है ।

पटिसंथरति = कुशल मगल पृच्छता है ।

१५. 'सु' उपसर्ग

सुकत = सुकृत

सुकुमार = कोमल

सुगन्ध = सुगन्ध

१६ 'आ' उपसर्ग

आगच्छति = आता है ।

आदति = लेता है ।

आपुच्छति = आजा लेता है ।

१७ 'अति' उपसर्ग

अतिष्कमति = पार कर जाता है ।

अतिभुञ्जति = खप खाता है ।

१८ 'अपि' उपसर्ग

अपिघान = दफना

अपिलपेति = उग मागता है ।

१९ 'अप' उपसर्ग

अपेति = दूट जाता है ।

अपक्कमति = निरुल जाता है ।

भगवा अनाथपिण्डकस्स जेतवनारामे विहरति । ९. भटो त पुरिस अव-
सज्जति । १०. मक्कटो कण्णक अनुकरोति । ११. वेज्जो तस्स भरिय परि-
क्खति । १२. सो भग्गे अभिधावित्वा विहार गच्छति । १३. अह तव
पत्थन अधिवासेमि । १४. सुकुमारो राहुलकुमारो पब्बज्ज च उपसम्पदं
च अलभि । १५. सो ब्राह्मणो पूरलास अतिमुञ्जित्वा गिलानो जातो ।

पालि में अनुवाद कोजिए:—

१. मैं गाँव से आ रहा हूँ । २. स्त्री हाथों को फैलाती है । ३.
घोघिसत्त्व ने मार को हरा दिया । ४. मजदूर ने (=कम्मकरो) काम को
समाप्त कर दिया । ५. भिक्षु आसन से उठता है । ६. कहाँ से इतनी
दुर्गन्ध आ रही है ? ७. चोर ने धन को कपड़े से ढँक दिया । ८. मेरे
आचार्य कुशीनगर में (=कुसिनाराय) विहार करते हैं । ९. मैं उनका कमी
भी अनादर नहीं करता हूँ । १०. पापी परलोक में अनुताप करता है ।
११. तथागत ने त्रिग्विसार के निमन्त्रण को चुपचाप स्वीकार कर लिया ।
१२. तुम्हारा भाई बाजार से (=आपणग्हा) आ रहा है । १३. तू अपने
पिता से आज्ञा लेकर प्रव्रजित हो । १४. वहाँ से थोड़ी दूर (=थोक) हट
जाओ । १५. सुमेधा भिक्षुणी जहाँ भगवान् थे (=येन भगवान्), वहाँ
(=तेन) गई ।

एकतीसवाँ पाठ

तद्धित

नाम (= मन्त्र) में प्रत्यय लगाने से जो नये शब्द बनते हैं, उन्हें 'तद्धित' कहते हैं। यह स्मरण रखना चाहिए कि उपसर्ग पहले लगा करते हैं और प्रत्यय पीछे। यहाँ तद्धित के कुछ उदाहरण दिए जाते हैं —

'वाला' अर्थवाले तद्धित शब्द

नाम	प्रत्यय	तद्धित	अर्थ
गति	मन्तु	गतिमन्तु	गतिवाला
स्मृति	मन्तु	स्मृतिमन्तु	स्मृतिवाला
शील	वन्तु	शीलवन्तु	शीलवाला
प्रजा	वन्तु	प्रजावन्तु	प्रजावाला
दण्ड	दत्त	दण्डित	दण्डवाला

(१२३)

तप	ण
अभिज्ञा	आलु
दया	आलु
जटा	इल
सील	व
अण्ण	व
माया	वी
मेवा	वी
स (= त्व)	आमी
स	उवामी
लक्खी	ण
अङ्ग	न
लोम	मो
पुत्त	इम
सेना	इय

तापसो
अभिज्ञालु
दयालु
जटिलो
सीलवो
अण्णवो
मायावी
मेघावी
सामी
सुवामी
लक्खणो
अङ्गना
लोमसो
पुत्तिमो
सेनियो

तप करनेवाला
लोमी
दयावाला
जटावाला
शीलवाला
समुद्र
मायावाला
बुद्धिवाला
अधिकार रखनेवाला
अधिकार रखनेवाला
लक्ष्मीवाला
सुन्दर अंगोंवाली
लोमवाला
पुत्रवाला
सेनावाला

भाववाची तद्धित शब्द

नाम	प्रत्यय
नील	त्त
बुद्ध	त्त
मनुस्स	ता
सहाय	ता
जाया	त्तन
आलस	ण्य
दायाद	ण्य
सुचि	णेय्य
उज्जु	ण
मुदु	ण

तद्धित
नीलत्तं
बुद्धत्तं
मनुस्सता
सहायता
जायत्तनं
आलस्सं
दायज्जं
सोचेय्यं
अज्जवं
महवं

अर्थ
नीलत्व
बुद्धत्व
मनुष्यता
सहायता
स्त्रीत्व
आलस्य
उत्तराधिकार
पवित्रता
श्रद्धा
मृदुता

(१२४)

नग्ना	उय	नग्नियं	नग्नता
सूर	उय	सुरियं	सूरता
आलस्य	णिय	आलसिय	आलस्य
दास	य	दासय्यं	दासता
युव	नण्	योव्वनं	जवानी
अणु	इम	अणिमा	अणुव
मदन्त	इम	महिमा	महत्त्व

देवता तथा पूर्णता के अर्थ में

सुगत	ण	सोगतो	बोद्ध
महिन्द्र	ण	माहिन्द्रो	मन्त्रेन्द्र का उपासक
वरुण	ण	वारुणो	वरुण का उपासक
माघा	ण	माघो	माघ मास
फल्गुनी	ण	फल्गुनो	फाल्गुन मास

विभिन्न अर्थों में

(१२५)

किं	रित्तक
तारक	इत
हृथ	मत्त
सत	मत्त
जाणु	मत्त
जाणु	तग्घ
पुरिस	ण
उभ	अय
ति	अय
एक	क
एक	आकी
पाप	रतर
पाप	रतम
पाप	इस्सिक
कण	इय
कण	इट्ठ
व्याकरण	ण
पद	क
सुत्तन्त	णिक
सूकर	णिक
वेद	ह
दक्षिणा	गेय्य
काय	णिक
टलिद्द	ण
देव	त्त
ब्रह्म	इय
पाक	इम

किच्छकं
 तारकितं
 हृथमत्तं
 सतमत्तं
 जाणुमत्तं
 जाणुतग्घं
 पोरिसं
 उभयं
 तयं
 एक्को
 एकाक्की
 पापतरो
 पापमतमो
 पापिस्सिको
 कणियो
 कनिट्ठो
 वेय्याकरणो
 पदको
 सुत्तन्तिको
 सूकरिको
 वेदहं
 दम्भिलणेय्यो
 कायिकं
 हालिद्दं
 देवलो
 ब्रह्मियो
 पाकिमं

कितना
 तारोंवाला
 हाथ भर
 सौ भर
 घुटने भर
 घुटने भर
 पुरुष भर ऊँचा
 दोनों अश
 तीनों अश
 अकेला
 अकेला
 महापापी
 अत्यन्त पापी
 अत्यन्त पापी
 छोटा
 सबसे छोटा
 व्याकरण जाननेवाला
 पद जाननेवाला
 सुत्तन्त जाननेवाला
 सूकर मारनेवाला
 प्रसन्नता से युक्त
 दक्षिणा पाने योग्य
 शरीर से किया गया
 हल्दी के रंग में रँगा
 देवता द्वारा दिया गया
 ब्रह्मा द्वारा दिया गया
 पकाया हुआ

लोक	लोकिक
माता	माता की ओर से आया
रतु	रतु का पुत्र
वशिष्ठ	वशिष्ठ का पुत्र
वत्स	वत्स गोत्र में उत्पन्न
कात्यायन	कात्यायन गोत्र में उत्पन्न
श्रमण	श्रमण का वंशज
भागिनी	भाजा
दिति	दिति का वंशज
कुण्डिनि	कुण्डिनि का वंशज
द्रोण	द्रोण का वंशज
राजा	राजा की जाति का
वत्स	वत्सिय जाति का
मनु	मनुष्य

(१२७)

मातु
पितु
पितु

छ
छ

आमह

”

”

”

रेय्यण

तर

ण

णिक

णैय्य

मय

मय

त्सण

कण

ण

णिक

ता

ता

न्स

जातिण

ण

ण

ण

तन

अच

हम

मातुच्छा

पितुच्छा

पितामहो

पितामही

मातामही

मातामहो

मत्तेय्यो

वच्छतरो

कापोतं

कप्पासिकं

कोसेय्यं

तिणमयं

गोमयं

जातुस्सं

मानुस्सकं

काकं

आपूपिकं

जनता

वन्धुता

चम्बुस्सं

मुदुजातियो

ओरसो

मागघो

कापिलवत्थो

पुरातनो

अमच्चो

मज्झिमो

मौसी

फूआ

वावा

ईया

नानी

नाना

माता के लिए

छोटा बछड़ा

कवूतर का

कपास का बना

रेशम का बना

तृण का

गोबर

लाह का बना

मनुष्यों का जमाव

कोवों का राजा

पूए की ढेर

जन-समूह

बन्धु-समूह

चक्षु के लिए

कोमल त्वभाव का

औरस

मगध में उत्पन्न

कपिलवन्तु में उत्पन्न

पुरातन

माथ रहनेवाला मर्त्ता

मध्य ज्ञ

”
मातु

”

मातु

वच्छ

कपोत

कप्पास

कोस

तिण

गो

जतु

मतु

काक

आपूप

जन

वन्धु

चक्षु

मुदु

उर

मगध

कपिलवत्थु

पुरा

अमा (= साग) अच

मज्झ

सुहृज्जो	सुहृद, सज्जन
सोहृज्जं	सुहृदता
आरिस्सं	ऋषि का
आसभं	सँढ का
आज्ज्जं	आजानीयता
थेय्यं	चोरी
वाहुसत्त्वं	बहुभुतता

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. गतिमन्ता वेगेन घावन्ति । २. दण्डिको दण्डेन चोर पहरि । ३. घनिको एक विहार भिक्खून कारापेसि । ४. अत्थिको धन परियेन्मिस्सति । ५. तपस्सी तप कत्वा सग्ग गमिस्सति । ६. अण्णवे महाजल्लासि अत्थि । ७. अङ्गना अत्तनो रूप आदासे (= शीशा में) ओलोक्केति । ८. लोमसा तापसी विहारं छट्ठेत्वा कुहि गता ? ९. किञ्चे सति (= होने पर) आलस्स कातु न वट्टति । १०. त अह दासव्या मोच्चेमि । ११. सौगता सदा चेतिय वन्दन्ति । १२. हत्थमत्त भूमि याचित्वा अपि नाल्ढ । १३. कनिट्ठो भाता अज्ज इतो नगर गतो । १४. कायिक पापकम्म कटुकप्पल होति । १५. कोसिनारको धम्मरत्तिवतो भिक्खु इम पोत्थकं लिखति ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. वह वाराणसी का रहनेवाला भिक्षु कब यहाँ आयेगा ? २. मैं बौद्ध होनेवाले वैल के समान हूँ । ३. धर्म-कथित आज उपदेश देगा । ४. द्वारपाल भीतर नहीं जाने देगा । ५. इसज्ञान में रहनेवाला भिक्षु व्यान-लाभी (= ज्ञानलाभी) है । ६. मेरा औरस पुत्र मूल में अब पढ़ता है । ७. जनता भूत से (= जिघ्रिच्छाय) मर रही है । ८. भारतवर्ष में (= जम्बु-दीप) कोई राजा नहीं है । ९. कपास का वस्त्र कोमल (= मुदुं) होता है ।

बत्तीसवाँ पाठ

तद्धितान्त अव्यय

सज्ञा और सर्वनाम के पीछे तद्धित के कुछ प्रत्यय लगने से अव्यय बन जाते हैं, उन्हें ही 'तद्धितान्त' कहते हैं। वैसे प्रत्यय चौदह हैं—(१) तो, (२) त्र, (३) त्य, (४) धि, (५) हि, (६) ह, (७) दा, (८) था, (९) धा, (१०) ज्झ, (११) एधा, (१२) क्खत्तु, (१३) सो और (१४) ची।

प्रत्यय	तद्धितान्त	अर्थ
१. तो	चोरतो	चोर से
	कुतो	कहाँ से
	ततो	वहाँ ने
	यतो	उहाँ से
	इतो	यहाँ से
	अतो	यहाँ से
	अभितो	दोनों ओर से
	परितो	चारों ओर से
	पच्छतो	पीछे से
	हेटुतो	नीचे से

१. ऐगिये तीसवाँ पाठ।

❧ 'तो' प्रत्यय पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में प्रयुक्त होता है। 'तो' प्रत्यय के लग जाने पर शब्द अव्यय हो जाता है। जैसे—गामन्ना गच्छति=गामतो गच्छति (=गाँव से जाता है)।

आदितो	प्रारम्भ मे
मज्झतो	मीच मे
अन्ततो	अन्त मे
पिट्ठितो	पीठे मे
पस्सतो	पार्श्व मे
मुत्तता	सामने मे

सच्चत्र, सच्चत्थ	सच्चत्र
यच्च, यत्थ	जर्ग
तच्च, तत्थ	वर्ग
परच्च, परत्थ	दृग्दर्श जगद्

सच्चयि	सच तगद्
--------	---------

यथा
तथा

जैसे
वैसे

९. धा

द्विधा
एकधा
बहुधा

दो भाग में
एक भाग में
बहुत भाग में, प्रायः

१०. पधा

द्वेधा, द्विधा
तेधा, तिधा

दो प्रकार से
तीन प्रकार से

११. ज्ञं

एकज्ञं

एक प्रकार से

१२. क्खत्तुं

द्विक्खत्तुं
कतिक्खत्तुं
बहुक्खत्तुं

दो बार
कितनी बार
बहुत बार

१३. सो

खण्डसो
एकेकसो
पुथुसो
सच्चसो

खण्ड खण्ड करके
एक-एक करके
विस्तार से
सब प्रकार से

१४ ची

धवली करोति
धवली सिया
धवली भवति

उजला करता है
उजला होने
उजला होता है

ये शब्द निपात हैं :—

कथ, कुत्र, क्व,
अत्र, एत्थ

कहाँ
हाँ

उध, इह	यहाँ
फुटा, कुटा	किस समय
मदा	हमेशा
अधुना, इतानि	इस समय
अज्ज	आज
सज्जु	उसी दिन
अपगज्जु	दूसरे दिन
एतगहि	इस समय
कग्घ	किस समय
कय	कैसे
उत्थ	इस प्रकार

अभ्यास

तुम सदा ही सोते रहते हो । ४. जहाँ से जो मिले ले लो । ५. प्रारम्भ से ही लड़कों को स्कूल भेजूँगा । ६. उसने नीचे से पेड़ काटा । ७. तथागत सर्वत्र ही जाते हैं । ८. वे कहीं भी नहीं बैठते । ९. स्त्री को पुत्र कब उत्पन्न हुआ ? १०. वाराणसी में एक बौद्ध (=सोगतो) रहता है । ११. वहाँ के लोग उसे श्यामचरण नाम से (=सामचरणोति नामेन) जानते हैं । १२. उसी की पुत्री का नाम मल्लिका है । १३. मैं वहाँ गया था और उनके साथ वातचीत (=कथासल्लाप) की थी । १४. उन्होंने दो बार मेरी वन्दना की । १५. बहुत बार उन्होंने मुझे भोजन दिया । १६. वे प्रारम्भ से ही बुद्धधर्म में (=बुद्धधम्मे) श्रद्धावान् हैं ।

तैंतीमवॉ पाठ

कुडन्त

निपज्जितव्वं=लेटना चाहिए ।

भेतव्वं - फोड़ना चाहिए ।

कातव्वं=करना चाहिये ।

भवितव्वं=होना चाहिये ।

निसीदितव्वं=बैठना चाहिए ।

प्रायः ऊपर के ही अर्थ में धातु से परे 'घ्यण' प्रत्यय आता है ।
'घ्यण' का 'य' रह जाता है—

मया इदं न वाक्यं=मुझे यह नहीं कहना चाहिए ।

सिस्सेन पुप्फानि चेर्यानि=शिष्य को फूल चुनने चाहिये ।

घनिकेहि दलिद्धानं दानं देय्यं=घनिकों द्वारा दरिद्रों को
दान देना चाहिए ।

अच्छानि जलानि पेय्यानि=स्वच्छ जल पीने चाहिए ।

चेर्यं=चुनना चाहिये ।

वज्जं=निन्दनीय

किच्चं=कृत्य

गुर्हं=छिपाना चाहिए ।

'इस काम को करने वाला' अर्थ में धातु से परे 'त्तु' और 'णक्' प्रत्यय होते हैं । 'त्तु' का 'तु' और 'णक्' का 'अक्' रह जाता है—

दातु, दायको=देने वाला

वत्तु, वाचको=बोलने वाला

नेत्तु, नायका=नायक

सोत्तु, सावको=मुनने वाला

जेत्तु, × =जीतने वाला

छेत्तु, छेदको=टेंदने वाला

प्रत्यय

रुदन्त

अर्थ

आवी

भयदन्सावी

भय देखने वाला

अक्

जीवको

बहुन दिन जीने वाला

”	सति	स्मृति
”	वह्नि	वृद्धि
क	रुजा	पीडा
”	मुदा	मोद
यक	विज्जा	विद्या
”	इच्छा	इच्छा
य	पव्वज्जा	प्रवज्या
अन	वेदना	वेदना
”	वन्दना	वन्दना
अन	गमनं	जाना
”	दानं	दान
”	सरणं	शरण
नि	हानि	हानि
”	जानि	खराब होना
इ	चचि	बोलना
”	युधि	लड़ाई करना

भूतकाल के अर्थ में धातु से परे ‘क्वन्तु’ और ‘क्तावी’ प्रत्यय होते हैं :—

जि	विजितवन्तु	विजय पाया हुआ
”	विजितावी	”

भूतकाल के अर्थ में कर्म और भाववाचक में ‘क्त’ प्रत्यय होता है—

धातु	रुदन्त	अर्थ
कर	कतं	किया गया
वि + जि	विजितं	जीता गया, राज्य
हस	हसितं	हँसा गया
कर	पकतो	फिरा गया

सु	पमुत्तो	मोया हुआ
ठा	उपट्टितो गुरु भव	आपने गुरु की सेवा की
हुं	इद तेम भुत्त	इस स्थान पर उन लोगोंने
		भोजन किया था ।
दिम	दिट्टो	देखा गया ।
रुद	रोदित	गया गया ।

'न' व 'तु' और 'न' प्रत्यय वाट कुछ विग्रह पातु न रूप इस प्रकार होते हैं —

यज = इट्ठवा, यिट्ठवा, इट्ठं, यिट्ठं

वह = वुट्ठवा, वुट्ठं

ये कृदन्त निपात हैं—

थावर	स्थित रहनेवाला
इत्तर	जानेवाला
भंगुर	टूटनेवाला
भिदुर	नष्ट हो जानेवाला
भासुर, भस्सर	चमकनेवाला
धस्तो	ध्वस्त होनेवाला
वस्तो	भयभीत

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. मया त किञ्च कातव्य । २. विहारे सम्मज्जनकम्म (= झाड़ू लगायाना) कातव्य । ३. भिक्षवूहि धम्मो पकासितव्यो । ४. करणीयानि किञ्चानि न हातव्यानि ५. सर्वेसं ज्ञानं ब्रूहेतव्य । ६. कत्तव्यं कुसलं बहु । ७. त्वया दानं देय्यं । ८. किञ्चि वज्जं कम्मं कानु न वट्टति । ९. दायको वनं गन्त्वा दारुनि छिन्दति । १०. सावको धम्मं सुत्वा पुञ्जं करोति । ११. मयं लोके भयदत्ताविनो भवित्ताम । १२. लोकविदू सत्यां पुगलं ओलोकेत्वा दानं न गण्हति । १३. सयंभू सयं धम्मं सञ्चिक्त्वा अभिञ्जायं परित्खति । १४. विजितावी अत्तनो विजिते आणं करोति । १५. दिट्ठो मया लोके हीनतरो पुगलो ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. तुम्हें खाना खा लेना चाहिए । २. उसे बहुत नहीं हँसना चाहिए । ३. मैंने पास खाने वाला चूर्ण है । ४. हमे भारतवर्ष का भिक्षु होना चाहिए । ५. चैन्य के पास जाकर आसन पर बैठना चाहिए ।

चौंतीसवाँ पाठ

सन्धि

पालि में सन्धि तीन प्रकार की होती है—(१) स्वर सन्धि, (२) व्यञ्जन सन्धि और (३) निग्गहीत सन्धि । पालि में विसर्ग न होने के कारण 'विसर्ग-सन्धि' नहीं होती । सन्धियों की पूरी जानकारी साहित्य के अध्ययन से ही होती है । यहाँ जो नियम हैं, वे विगेष शब्दों की सन्धियों पर ही आधृत हैं । कोई एक नियम नियत नहीं है । अतः इन नियमों को पढ़कर घबड़ाना नहीं चाहिए, प्रत्युत इनका अभ्यास करना चाहिए, क्योंकि पालि साहित्य में आई हुई सन्धियाँ ही यहाँ उदाहृत हैं, जो सर्वत्र इसी प्रकार रहती हैं ।

स्वर सन्धि

दो स्वरों के परस्पर मिलने को स्वर-सन्धि कहते हैं ।

१ सरो लोपो सरे—स्वर में परे यदि स्वर हो तो कभी-कभी पूर्व स्वर का लोप हो जाता है । जैसे—पुरिस + उत्तमो । यहाँ पुरिम् + अ + उत्तमो । पुरिस् + उत्तमो = पुरिसुत्तमो ।

ऐसे ही—

पञ्जा + इन्द्रिय = पञ्जिन्द्रिय

सति + आरक्तो = सतारक्तो

भोगी + इन्दो = भोगिन्दो

चक्षु + आयतन = चक्षुपायतन

अभिभू + आयतन = अभिभायतन

धनमे + अग्नि = धनग्नि

ऐसे ही—

लता + इव = लताइव

किन्तु विकल्प से कञ्जेव, कञ्जाव तथा लतेव, लताव भी होता है ।

४. युवण्णानमे ओ लुत्ता—लुप्त हुए स्वर से परे क्रमशः 'इ' का कभी-कभी 'ए' और 'उ' का 'ओ' हो जाता है । जैसे—

तस् + इद = तस् + इद = तस् + एद = तस्तेद ।

ऐसे ही—

वात + ईरित = वातेरित

वाम + उरु = वामोरु

सीत + उदक = सीतोदक

वि + उदक = वोदक

५. यवा सरे—'इ' तथा 'उ' से परे यदि स्वर हो, तो कभी-कभी उनका क्रमशः 'य' तथा 'व' हो जाता है । जैसे—

मु + आगत = त्वागत

वि + अकासि = व्याकासि

वि + आकतो = व्याकतो

इति + अत्स = इच्चत्स

अधि + इणमुत्तो = अजिहणमुत्तो

यहु + आवाधो + यद्वावाधो

६. ए ओ नृं—'ए' तथा 'ओ' से परे यदि स्वर हो, तो कभी-कभी उनका क्रमशः 'म' तथा 'व' हो जाता है । जैसे—

ते + अज्ज = यज्ज

सो + अए = स्वाह

सो + अय = स्वाय

मे + अय = म्याय

पन्धते + अए = पन्धतराट

छ + अभिञ्जा = छळभिञ्जा

छ + अङ्ग = छळङ्ग

छ + आयतन = छळायतन

निम्नलिखित सन्धि निपात हैं:—

तथा + एव = तथरिव

यथा + एव = यथरिव

व्यञ्जन सन्धि

जब कोई व्यञ्जन (= वर्ण) किसी व्यञ्जन अथवा स्वर के साथ मिलता है, तो उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं ।

१. व्यञ्जने दीर्घरस्ता—जब किसी स्वर के बाद व्यञ्जन हो, तो पूर्व-स्थित ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर का प्रमश. दीर्घ तथा ह्रस्व हो जाता है ।
जैसे—

तत्र + अभिरति = तत्राभिरति

खन्ति + परम = खन्तापरम

मुनि + चरे = मुनीचरे

माला + भारी = मालभारी

जायति + सोको = जायती सोरो

तत्र + अय = तत्राय

२. सरम्हा छे—स्वर से परे व्यञ्जन हो, तो उस व्यञ्जन का कभी-कभी द्वित्व हो जाता है । जैसे—

वि + गहो = विग्गहो

प + गहो = पग्गहो

दु + क्त = दुक्कत्त, दुक्कट

३. चतुर्थ्य दुतिये स्वेसं ततिय पठमा—यदि किसी वर्ण के

दिव्य = दिव्य
पर्येसना = पर्येसना
पोक्खरण्यो = पोक्खरञ्जो
अध्यत्त = अज्झत्त

६. वग्गलसेहि ते—वर्गीय वर्ण, 'ल' या 'स' 'य' के साथ सयुक्त हों तो 'य' का भी वही अक्षर हो जाता है। जैसे—

सक्यते = सकृते
रुच्यते = रुचते
पठ्यते = पठते
सत्यते = सल्लते
दित्यते = दिस्सते
फल्यते = फल्लते
अस्यते = अस्सते

७. हस्स विपल्लासो—यदि 'ह', 'य' से सयुक्त हो, तो उनका उलट-पलट हो जाता है। जैसे—

गुह्य = गुह्यं
मुह्यति = मुह्यति

८. वे वा—यदि 'ह' 'व' से सयुक्त हो, तो विकल्प से उनका उलट-पलट हो जाता है। जैसे—

बहावाधो = बह्वावाधो

निग्गहीत सन्धि

निग्गहीत अर्थात् अनुस्वार के साथ जब कोई स्वर या व्यंजन मिलता है, तो निग्गहीत-सन्धि होती है।

१. निग्गहीतं—कहाँ-कहाँ निग्गहीत (= अनुस्वार) का आगम होता है। जैसे—

पुष्प + अस्सा=पुष्पसा (यहाँ 'अम्' जो आदिभूत अवयव है, उसका लोप हो गया है) ।

जायते + अग्निनि=जायते गिनि (यहाँ 'अग्' जो आदिभूत अवयव है, उसका लोप हो गया है) ।

५. वगो वगन्तो—निगहीत से परे कोई वर्गीय वर्ण रहे, तो विकल्प से निगहीत का उसी वर्ग का अन्तिम वर्ण हो जाता है । जैसे—

त + करोति=तङ्करोति

त + चरति=तञ्चरति

त + ठान=तण्ठान

त + धन=तन्धन

त + पाति=तम्पाति

त + खण=तङ्खण

धम्म + चरे=धम्मञ्चरे

त + डहति=तण्डहति

त + दान=तन्दान

त + फल=तम्फल

६ येद्य हि सुञो—यदि वाद में 'य' तथा 'हि' शब्द हों, तो पूर्वस्थित निगहीत का कहीं कहीं 'ज' हो जाता है । जैसे—

आनन्तरिक+यमाहु = आनन्तरिकञ्जमाहु

(यहाँ 'वगलसेहि ते' सूत्र से 'ज' का 'ञ्ज' हो गया है) ।

पचत्त+एव=पच्चनञ्जेव

त+दि = तदि

त+नेव = तन्नेव

य+येव=यञ्जयेव (यहाँ 'द' का आगम हो गया है) ।

७ ये सस्स—'य' परे हो, तो पूर्वस्थित 'म' शब्द के निगहीत का 'ज' हो जाता है । जैसे—

(१५२)

म + यमो = मय्यमो

म + यता = मय्यतो

८ म य दा मरे—मर पर हो, तो मरी मदी प्रवर्धित निगृहीत वा 'य', 'य' तथा 'द' आत्म हो जाता है। जैसे—

त + अर = तमर

त + एव = तमेव

त + उद = तदिद

त + अल = तल

९ तदमिनादीनि—नानान्वित मन्त्रि निपातः—

त + दमिना = तदमिना

स + आगामा = सकागामी

एक + उव + अर = एकमिना

स व वाय + अवगाग = सविदावगाग

द गन् + वाय + अ = दगन्वाय

उन् + अर = उन्मर

उन् + अर = उन्मर

दातुम्पि । २६. कथाह । २७. यावञ्चिध । २८. चक्कव । २९. तद्धूण ।
३०. सण्ठितो ।

सन्धि कीजिए:—

१. महा + ओघो । २. अज्ज + उपोसथो । ३. अग्नि + आहितो ।
४. चक्खु + इन्द्रियानि । ५. सु + आगत । ६. अह खो + अज्ज । ७.
पातु + अकासि । ८. वि + आकतो । ९. वुत्ति + अस्स । १०. बहु +
आबाधो ।

११. सम्मा + पधाना । १२. अगो + अक्खायति । १३. एसो +
अत्थो । १४. अ + फुट । १५. मधुव + मज्जति । १६. जायति + भय ।
१७. नि + ठान । १८. सम्म + धम्मो । १९. यस + धेरो । २०. खन्ति +
परमं ।

२१. य + आहु । २२. त + पाति । २३. त + धन । २४. त +
सभावो । २५. पुरिस + जाति । २६. याव + चिध । २७. अनु + धूलानि ।
२८. बुद्धान + सासन । २९. एव + अह । ३०. किं + इति ।

पेंतीमवॉ पाठ

समाप्त

(१५५)

(५) अभाव	नि	अभावो मक्खि-	निम्म-	मक्खियों से रहित
		कान	क्खिकं	
	दु	विगता इद्धि	दुस्सद्विकं	शब्दों से रहित
		सद्विकान		
	नि	अतिगतानि	नित्तिणं	तृणों से रहित
		तिणानि		
(६) यथा	अनु	अद्धमास अद्धमास	अन्वद्धमासं	हर आधे महीने
		रूपस्स योगा	अनुरूपं	रूप के योग्य
	"	सत्ति अनतिकम्म	यथासत्ति	यथाशक्ति
	"	रथस्स पञ्छा	अनुरथं	रथ के पीछे
(७) पश्चात्	अनु	सह चक्केन	सचक्कं	चक्र के साथ
(८) युगपद	सह	सह उरेन	सधुर	शोझ के साथ
	"			

अव्ययीभाव समास के कुछ उदाहरण

अव्यय	समास	भाव
याव	यावमत्तं ब्राह्मणे आमन्तय	जितने ब्राह्मणों को बुलाओ
"	यावजीवं	जीवनभर
परि	परिपव्यतं वस्सि देवो	पर्वत के चारों ओर बर्षा हुई
अप	अपपव्यतं " "	पर्वत को छोड़ कर बर्षा हुई
आ	आपाटलिपुत्तं " "	पाटलिपुत्र तक बर्षा हुई
वहि	वहिगामं	गाँव के बाहर
तिरो	तिरोपव्यतं	पर्वत के भीतर
पुरे	पुरेभत्तं	भोजन से पहले
पञ्छा	पञ्छाभत्तं	भोजन के बाद
अनु	अनुवनं अस्सनि गता	वन के समीप सिञ्ची गई
"	अनुगतां चाराणसी	गंगा के किनारे चारागसी
		देनी है

१	ओरेगढ़	गंगा के इस पार
उपरि	उपरिगिरग	शिवर के ऊपर
पट्टि	पट्टिमोत	धारा के त्रिपरीत
पार	पारयनुत	यमुना के उस पार
मग	मज्जेगढ़	गंगा के बीच
हट्टा	हट्टाशमाद	शमाद के नीचे
उड	उडगढ़	गंगा के ऊपर
अना	अधगढ़	गंगा के नीचे
अना	अन्ताशमाद	शमाद के भातर
पर	परगमत	भा न अविद
	परगेसद्वरम	मदन न अविद

निगठिगित अव्ययीभाव समाम निपात हे—

विभक्तियों में विभक्ति-चिह्नों का लोप हो जाता है, उनमें तत्पुरुष समास होता है ।

दुतिया, ततिया, चतुर्थी, पञ्चमी, छट्टी और सप्तमी विभक्तियों में पूर्वपद की विभक्ति का लोप होता है । पूर्वपद जिस विभक्ति में होता है, वह समास उसी विभक्ति के नाम से जाना जाता है । इस प्रकार तत्पुरुष समास छः प्रकार का होता है । जैसे—

नाम	विग्रह	समास	अर्थ
१. दुतिया	गाम गतो	गामगतो	गाँव गया हुआ
„	मुहुत्त सुख	मुहुत्तसुखं	मुहूर्त भर सुख
„	कुम्भ करोति	कुम्भकारो	कुम्हार
„	तन्न वायति	तन्तवायां	जुलाहा
„	वर हरति	वराहरो	सूअर
२. ततिया	असिना छिन्नो	असिच्छिन्नो	तलवार से कटा हुआ
„	पितुना सदिसो	पितुसदिसो	पिता के समान
„	सुखेन सहगत	सुखसहगतं	सुख के साथ
„	उरसा गच्छति	उरगो	साँप
„	पादेन पिबति	पादपो	वृश्च
३. चतुर्थी	धम्मत्स देय्य	धम्मदेय्यं	धर्मको देने योग्य
„	बुद्धत्स देय्य	बुद्धदेय्यं	बुद्ध को देने योग्य
„	यूपाय दारु	यूपदारु	यज्ञान्तम्भकी लकड़ी
„	रजनाय दोणि	रजनदोणि	वस्त्र रँगने की ट्रोनी
४. पञ्चमी	चोरेहि भय	चोरभयं	चोरों से भय
„	गामत्मा निगगतो	गामनिगगतो	गाँव से निकला हुआ
„	मेथुनत्मा अपेतो	मेथुनापेतो	मैथुन से दूर रहनेवाला
„	कम्मा जात	कम्मजं	कर्म से उत्पन्न
„	चित्तेन जात	चित्तजं	चित्त से उत्पन्न

विग्रह	समास	अर्थ
नीलं च त उप्पल चाति	नीलुप्पलं	नीला कमल
मुनि च सो सीहो चाति	मुनिसीहो	मुनि
सीलमेव धन	सीलधनं	शील-धन
कण्हो सप्पो	कण्हसप्पो	काला साँप
न ब्राह्मणो	अब्राह्मणो	अब्राह्मण
न ओकास	अनोकासं	अवकाश नहीं
कुच्छित्तो ब्राह्मणो	कुब्राह्मणो	निन्दित ब्राह्मण
कु अन्न	कदन्न	खराब अन्न
कु पुरिसो	कापुरिसो	बुरा आदमी
ईसकं उण्ह	कडुण्हं	थोडा गर्म
पगतो आचरियो	पाचरियो	आचार्य के आचार्य
निग्गतो कोसम्भिया	निग्गतकोसम्भिव	कौशाम्बी से निकला हुआ

कर्मधारय समास के कुछ विशेष उदाहरणः—

- अरियेहि पृथगेवायं जनोति = पृथुज्जनो = पृथक्जन
 छन्न अहान समाहारो = साहं, छाहं = छ. दिन
 छन्न आयतनान समाहारो = सल्लायतनं, छल्लायतनं = छः आयतन
 समानो पक्खो = सपक्खो = पौख के समान
 समाना जोति = सजोति = प्रकाश के समान
 पुव्वो अहो = पुव्वसो = पूर्वाह्न
 मज्झो अहो = मज्झसो = मध्याह्न
 सायो अहो = सायसो = सायह्न
 पञ्चन्न गुन्न समाहारो = पञ्चनचं = पाँच व्रैल
 चतुन्न पथान समाहारो = चतुप्पथं = चार मार्ग
 तिन्न लोफान समाहारो = तिलोफं = तीन लोफ
 चतुन्न सन्नान समाहारो = चतुसच्चं = चार सन्ध

(१६१)

दुविधो	= द्वे विधा प्रकारा अस्स
द्वत्तिपत्तपूरा	= द्वे वा तयो वा वारे पत्तानि पुण्णानि येस
तंसरणा	= त्व येस सरण एस
सोदरियो	= समान उदर यस्स
सास्सत्थं	= सह अस्सत्थेन वत्तति
साग्गि	= सह अग्गिना विज्जमानो
सदोणा	= अधिको दोणो अस्स

५. क्रियार्थ

जब दो क्रियाओं के कुछ विशेष प्रत्ययान्त शब्दों के साथ समास होता है तो उसे क्रियार्थ समास कहते हैं। जैसे—मलीनीकरिय=मैला करके।

क्रियार्थ समास प्रायः 'च', 'रो', 'रिक्ख' और 'क' प्रत्ययान्त शब्दों के साथ ही होता है।

क्रियार्थ समास
अलङ्कारिय

सकच्च

असकच्च

तिरोभूय

तिरोकरिय

उरसिकरिय

मनसिकरिय

मज्जेकरिय

तुण्हीभूय

पुरोभूय

सरी, सदी

सरिक्खो, सदिरुत्तो

-सरिसो, सदिसो

अर्थ

अलङ्कृत करके

सत्कार करके

असत्कार करके

छिनकर

छिपाकर

हृदय में करके

मन में करके

बोच में करके

मीन होकर

आगे होकर

मदश

यादी यादिस्सो, यादिस्सो

भयादा, भयादिस्सो, भयादिस्सो

कादी, कादिस्सो, कादिस्सो

इदी, इदिस्सो, इदिस्सो

नादी नादिस्सो, नादिस्सो

मादी मादिस्सो, मादिस्सो

एदी एतादी एदिस्सो

एतादिस्सो, एदिस्सो, एतादिस्सो

उदी

उदयान

मुख च नासिका च = मुखनासिकं

चक्खु च सोत च = चक्खुसोतं

गीतं च वादित च = गीतवादितां

युग च नङ्गल च = युगनङ्गलं

असि च चम्म च = असिचम्मं

काको च उल्को च = काकोलृकं

एकको च दुको च = एककदुकं

ढसो च मकसो च = ढंसमकसं

साकुन्तिको च मागविको च = साकुन्तमागविकं

समथ च विपस्सनं च = समथविपस्सनं

दीघो च मज्झिमो च = दीघमज्झिमं

इत्थी च पुमो च = इत्थिपुमं

कण्हो च सुको च = कण्हसुकं

पुव्व च उत्तर च = पुव्वुत्तरं

गङ्गा च यमुना च = गङ्गयमुनं

मही च सरभू च = महीसरभू

स्मरण रखना चाहिए कि प्राणी के अंग, बाजों के नाम, हल के अंग, सेना के अंग, नित्य वैरी, सख्या, परिमाण, क्षुद्र जन्तु, छोटी जाति, चरण, शर्णों के नाम, लिङ्ग विशेष, विरुद्ध स्वभाव, दिशा तथा नदी के नामों में गदा समाहार द्वन्द्व समास होता है ।

तथा

वृण, वृक्ष, पशु, पक्षी, धन वाचक शब्द, धान्य के नाम, व्यञ्जन और जनपदों में समाहार तथा इतरेतर—दोनों द्वन्द्व समास होते हैं ।

समाहार और इतरेतर द्वन्द्व के कुछ उदाहरण—

इन शब्दों में दोनों ही समास होते हैं :—

कासकुसं, उसीरवीरणं, मुञ्जवच्चर्जं । गङ्गिण्यलानं, साक-

माल । गोमदिस, अजेळक, कुक्कुरमूकर । हंसवलाक, बर-
 वलाक । त्रिष्टम्भमुक्कण, जातम्भरजत, मणिसगमुत्तावेळुगिय ।
 मालियर, तिलमुगमास । मारुगुव, गायमादिस, ण्णय्य
 दाराड निगमायूर । कानिकोमल, वडिजमल, पन्डुमूसेन,
 कुम्भञ्जाल ।

[६] ६२. अहोरत्त, ६३. दीघरत्त, ६४. द्विरत्त, ६५. दसगव, ६६. सारिपुत्तमोगाहाना, ६७. चन्दसुरिया, ६८. अग्निधूम, ६९. हसवका, ७०. अङ्गमगध ।

समास कीजिए—

[१] १. रथस्स पञ्छा, २. गगाय समीपे वत्ततीति, ३. मञ्चस्स हेट्ठा, ४. सीतस्स पटिलोम, ५. भत्तस्स पञ्छा, ६. नगरस्स अन्तो, ७. भत्तस्स पुरे, ८. नगरस्स समीप, ९. मकसान अभावो, १०. नगरस्स वहि ।

[२] ११. अरञ्ज गतो, १२. अग्निगो भव, १३. फलस्स रसो, १४. आगन्तुक्त्त भत्त, १५. विञ्जूहि गरहितो, १६. पितरा सदसो, १७. दधिना उपसित्त भोजन, १८. गुल्लेन मिस्सो ओदनो, १९. ब्राह्मणस्स देय्य, २०. फलान तित्तो, २१. दाने सोण्डो, २२. पव्वते ठितो ।

[३] २३. महाक्त्तपो च सो थेरो च, २४. धम्मो इति सम्मतो, २५. न अरियो, २६. पधान वचन, २७. पञ्जा एव रतन, २८. बुद्धघोषो च सो आचरियो च, २९. अन्धो च सो वधिरो च, ३०. न मित्तो, ३१. धम्मो इति बुद्धि, ३२. न ब्राह्मणो, ३३. कुञ्चितो ब्राह्मणो, ३४. अप्पक लवण, ३५. सुट्ठु कत, ३६. किञ्छेन कत, ३७. अतिक्कन्तो माल, ३८. अवकुट्ठ^१ कोकिलाय वन ।

[४] ३९. दिन्नो सुद्धो यत्त सो, ४०. सम्पन्नानि सत्त्वानि यस्मि सो, ४१. अभिरुद्धा वाणिजा यत्ता सा, ४२. विजितो मारो येन सो, ४३. ओत्तिण्णो एसो य सो, ४४. छिन्नो तरु येन सो, ४५. अरगत बालक पग्मा सो, ४६. पहत घन यत्त सो, ४७. नत्थि समो यत्त सो, ४८. मत्तानेके गजा यस्मि त, ४९. सह पुत्तेन आगतो यो, ५०. चित्ता गावो अस्सेति, ५१. उपगता दस वेस ते, ५२. सुवण्णविट्ठारो अलङ्कारो अन्ध, ५३. सुवति जाया यत्त सो, ५४. बहू मालायो एतस्म, ५५. दीघा ज्जा यम् सो ।

१. अवकुट्ठन्ति = परिषत्त (छोटा हुआ) ।

छत्तीसवाँ पाठ

गण

पहले बतलाया जा चुका है कि धातुओं के ९ गण होते हैं । (देखिये, तीसरा पाठ) । गणों के क्रम से धातुओं के रूप-क्रम भी दिए जा चुके हैं । (देखिये, तीसरा पाठ से तेरहवाँ पाठ तक) । वे गण क्रमशः इस प्रकार हैं :—

१. भ्वादि गण
२. रुधादि गण
३. दिवादि गण
४. तुदादि गण
५. तनादि गण
६. चुरादि गण
७. स्वादि गण
८. ज्यादि गण
९. क्यदादि गण

इन नवों गणों में भ्वादि गण सबसे बड़ा है । इस गण में ३०४ धातु हैं । इस धातु-समूह में सबसे पहले 'भू' धातु है, इसलिए इसे भू + आदि = भ्वादि गण कहते हैं । इसी प्रकार क्रमशः रुध, दिव, तुद, तन, चुर, सु, नि और की धातुएँ शेष अन्य गणों के धातु-समूह में आदि में हैं । इन्हीं के नाम पर उन गणों के नाम रखे गए हैं । प्रत्येक धातु-समूह (=गण) के धातुओं के रूप प्रारम्भ के धातु के समान ही होते हैं । यहाँ क्रमशः नवों गणों के कुछ धातुओं के उदाहरण दिए जाते हैं—

(१६९)

४. तुदादि गण
पठमपुरिस एकवचन

धातु	अर्थ
तुद	पोडा करता है
फुस	छूता है
खिप	फेंकता है
गिल	निगलता है
लिख	लिखता है
सुप	सोता है

५. तनादि गण
पठमपुरिस एकवचन

धातु	अर्थ
तन	फैलाता है
कर	करता है
सक	सकता है
मन	जानता है

६. चुरादि गण
पठमपुरिस एकवचन

धातु	अर्थ
चुर	चुराता
पुस	पोसता है
पूज	पूजता है
कथ	बहता है
छट्ट	फेंकता है
	विचार करता है

चिन्त

७. स्वादि गण
पठमपुरिस एकवचन

धातु	अर्थ
सु	सुनता है
सर	सकता है
सु	देखता है

सुणोति
सक्णोति, सक्कुणोति
बुणोति

(१७०)

८ ज्यादि गण

पटमपुग्मि णक्वचन	अर्थ
जिनानि	जीतता ३
जानानि	ज्ञानता ३
तुनानि	मायता १
धुनानि	धुनता १
मिनानि	मीनता १
युनानि	प्रशमा रगता १

९ क्यादि गण

पटमपुग्मि णक्वचन	अर्थ
किणानि	परीक्षा १
वुणानि	दृक्ता ३
सक्कणानि	सक्ता १
सुणानि	सुता १
सिणानि	सिद्ध करता १

अभ्यास

[६] २६. वण्णेति, २७. वन्देति, २८. पूजेति, २९. ज्ञापेति, ३०. चोरेति ।

[७] ३१. वुणोति, ३२. पापुणोति, ३३. सक्णोति, ३४. गिणोति, ३५. सुणोति ।

[८] ३६. सिनाति, ३७. लुनाति, ३८. पुनाति, ३९. जानाति, ४०. चिनाति ।

[९] ४१. सुणाति, ४२. वुणाति, ४३. किणाति, ४४. विक्किणाति, ४५. गिणाति ।

पठमपुरिस एकवचन में रूप लिखियेः—

१. पच (भू०) = पकाना
२. गम (भू०) = जाना
३. कत (क०) = काटना
४. मुच (क०) = छोड़ना
५. ज्ञा (दि०) = ध्यान करना
६. वुध (दि०) = समझना
७. गिल (तु०) = निगलना
८. तुद (तु०) = पीड़ा करना
९. कर (त०) = करना
१०. सक (त०) = सकना
११. कथ (तु०) = कहना
१२. पूज (तु०) = पूजा करना
१३. सु (त्वा०) = सुनना
१४. प + आप (त्वा०) = प्राप्त करना
१५. ल् (ज्या०) = काटना
१६. आ (ज्या०) = जानना
१७. की (क्या०) = पसीदना
१८. सु (क्या०) = सुनना

सैंतीसवाँ पाठ

स्त्री-प्रत्यय

पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए शब्द के वाद सात प्रत्यय आते हैं—१. आ, २ टी, ३. इनी, ४. नी, ५. आनी, ६. ऊ और ७. ति । यहाँ स्त्री प्रत्यय वाले शब्दों के कुछ उदाहरण दिए जाते हैं:—

प्रत्यय	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
आ	देवदत्तो	देवदत्ता
	अजो	अजा
	कोकिलो	कोकिला
	वालको	वालिका
डी	नद	नदी
	मह	मही
	कुमारो	कुमारी
	तरुणो	तरुणी
	वारुणो	वारुणी
	गोतमो	गोतमी
	गच्छन्तो	गच्छन्ती, गच्छती
	गुणवन्तो	गुणवन्ती, गुणवती
इनी	यक्षो	यक्षिणी, यक्षी
	नागो	नागिनी, नागी
	सीहो	सीहिनी, सीही
	राजा	राजिनी
	मानुषो	मानुषिनी

३. वालिका मातरा सद्धि गेह गच्छति । ४. कुमारी पुष्प याचति । ५. गौतमी कपिलवत्युतो निक्खमित्वा बुद्धसासने पव्वज्ज लभि । ६. नागियो गामेसु विचरन्ति । ७. सीहियो दारके न गण्हन्ति । ८. दण्डिनी दण्डेन सुनख पहरति । ९. सा इत्थी मानुसिनी अहोसि मज्जे । १०. मम मातुलानी पुव्वे एव काल कता । ११. गहपतानी भिक्खून् सदा दान देति । १२. वामोरु आपण गन्त्वा आभरण विकिणाति । १३. युवति इतो कुहिं गता । १४. तुय्ह घरणी गिलाना समाना अपि निच्च कम्म करोति । १५. पोक्खरणिय पदुमपुष्फानि पुष्फितानि सन्ति ।

पालि में अनुवाद कीजिए—

१. देवदत्ता झगडा कर रही है । २. बकरा पेड़ों की पत्तियाँ खाती है । ३. वालिका बुद्ध को नमस्कार करती है । ४. मही नदी में बहुत पानी है । ५. इस नदी में बाढ (=ओघो) आई हुई है । ६. वारुणी उन्मादिनी होती है । ७. यक्षिणी लडकों को प्यार करती है (=पियायति) । ८. भिक्षुणी जंगल में जाकर ध्यान करती है । ९. मेरी मामी बहुत धार्मिक है । १०. सुन्दर जाँघोंवाली स्त्री भिक्षुओं के लिए एक विहार बनवाती है । ११. युवती अपने पति के घर जाती है । १२. कुम्हारिनी मिट्टी से घड़े बनाती है । १३. दासी रेत में काम करती है । १४. कुमारी भोजन पकाकर लोगों को खिलाती है । १५. गौतमी ने मुझे बुलाया है ।

(४) 'धि' शब्द के योग में—धि अलसं सिस्सं=आलसी शिष्य को धिक्कार है ।

(५) 'अन्तरा' शब्द के योगमें—अन्तरा च राजगहं अन्तरा च नालन्दं=राजगृह और नालन्दा के बीच ।

(६) 'पति' शब्द के योग में—लोका पसन्ना बुद्धं पति=लोग बुद्ध के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते हैं ।

(७) 'विना' शब्द के योग में—न सिञ्जति धम्मो विरियं विना=विना परिश्रम के धर्म सफल नहीं होता ।

३. ततिया विभक्ति

कर्तृकरणेषु ततिया—भाववाच्य तथा कर्मवाच्य के कर्त्ता में, करण कारक में, और क्रिया-विशेषण में ततिया विभक्ति होती है ।

(१) भाववाचक में—पुरिसेन गम्मति=पुरुष द्वारा चलाया जाता है ।

(२) कर्म-वाच्य के कर्त्ता में—बालकेन चन्द्रो दिस्सति=बालक द्वारा चन्द्रमा देखा जाता है ।

(३) करणकारक में—दण्डेन सप्पं पहरति=दण्डे से सौंप गारता है ।

(४) क्रियाविशेषण में—गोत्तेन गोतमो = गोत्र ने गोतम है । सुमेधो नाम नामेन=नाम से सुमेध । समेन धावति=ममभूमि पर दौड़ता है । द्विदोणेन धञ्जं किणाति=दो द्रोण से धान्य नगोदता है ।

(५) साथ होने में—पुत्तेहि सह आगच्छति=पुत्रों के साथ जाता है । सिस्सेहि सद्धिं गच्छति=शिष्यों के साथ जाता है । भिक्खूहि समं थेरो गच्छति=भिक्षुओं के साथ व्यवहार करते हैं ।

(६) 'किं' योग में—किं ते जटाहि = तेरी जटाओं से क्या ?

(७) 'तुल्य' के अर्थ में—आचरियेन मदिसो मिन्सो=आचार्य के सदृश ही शिष्य है । जनकेन तुल्यो पुत्तो = पिता के तुल्य ही पुत्र है ।

पुत्रो=राजा का पुत्र । गामस्स मनुस्सा=गाँव के आदमी । दिवसस्स द्विक्खत्तुं=दिन में दो बार ।

इन अर्थों में भी छट्टी विभक्ति होती है—

(१) कृदन्त शब्दों के साथ—साधु सम्मतो बहुजनस्स=वहुत लोगों का मान्य । तिट्ठन्ति धम्मस्स जातारो=धर्म के जानने वाले हैं ।

(२) जाति, गुण तथा क्रिया में से जब किसी एक का निर्धारण किया जाय, तो वहाँ छट्टी विभक्ति होती है और सत्तमी भी :—

जाति—नरानं खत्तियो सेट्ठो, अथवा नरेसु खत्तियो सेट्ठो=मनुष्यों में क्षत्रिय श्रेष्ठ है ।

गुण—कण्हा गावीनं सम्पन्नखीरतमा, अथवा कण्हा गावीसु सम्पन्नखीरतमा=काली गौवों में अधिक दूध देने वाली होती है ।

क्रिया—पथिकानं धावं सीघतमो, अथवा पथिकेसु धावं सीघतमो=पथिकों में दौड़ने वाला शीघ्र होता है ।

ततिया के अर्थ में—पुप्फस्स बुद्धं पूजेति=फूल से बुद्ध की पूजा करता है ।

हेतु के अर्थ में उदरस्स हेतु, उदरस्स कारणा=पेट के हेतु ।

७. सत्तमी विभक्ति

सत्तम्याधारे—क्रिया के आधार में सत्तमी विभक्ति होती है । जैसे—पच्यते तिट्ठति=पहाट पर रहता है । कुम्भे ओटनं पचति=हॉटी में भात पकाता है । तिलेसु तेलं वत्तति=तिल में तेल है ।

इन अर्थों में भी सत्तमी विभक्ति होती है —

(१) निमित्त—उन्तेसु कुञ्जर हञ्जति=सँतो के निमित्त से हाथी को मारता है । मुसावादे पाचित्तिय=गुठ दोन्ने में 'पाचित्तिय' होता है ।

(१८१)

(=पत्त) दीजिए । ५. कोस भर गाँव नहीं है । ६. वाराणसी और कौशाम्बी के बीच में सहजाति है । ७. फरसा से मैं फल काटता हूँ । ८. गोत्र से वह आदमी काश्यप (=कस्सपो) है । ९. नाम से वह भिक्षु सुमन है । १०. भिखारियों के लिए दान देना चाहिए । ११. बहुजन हित बहुजन सुख के लिए तथागत धर्म को प्रकाशित करते हैं । १२. साँप से सभी डरते हैं । १३. ब्राह्मण का पुत्र स्कूल में पढ़ता है । १४. पेड़ों पर पक्षियाँ निवास करते हैं ।

जिस वाक्य में क्रिया कर्म के अनुसार हो और कर्म ही की प्रधानता पाई जाती हो, तो वह वाक्य कर्मवाच्य होता है। कर्मवाच्य में, कर्त्ता में ततिया विभक्ति और कर्म में पठमा विभक्ति होती है। क्रिया के पुरुष और वचन कर्म के पुरुष और वचन के समान होते हैं। इसमें भी धातु के बाद 'य' आता है। जैसे—

रज्जा धनं दीयते=राजा द्वारा धन दिया जाता है। पितरा त्वं दीयसि=पिता द्वारा तुम दी जा रही हो। दासेन ओदनो पचीयति=दास द्वारा भात पकाया जाता है। चोरेन सो पहरीयते=चोरों द्वारा वह मारा जाता है।

कर्मवाच्य में प्रयुक्त क्रियाओं के कुछ उदाहरणः—

करीयति=किया जाता है।

देसीयति=उपदेश दिया जाता है।

आहरीयति=लाया जाता है।

हरीयति=ले जाया जाता है।

आकहीयति=खाँचा जाता है।

गण्हीयति=लिया जाता है।

बन्धीयति=बाँधा जाता है।

कसीयति=हल से जोताया जाता है।

कर्मवाच्य में प्रयुक्त कृदन्तः—

ददु=डँसा हुआ।

पूजित=पूजा किया हुआ।

वन्दित=नमस्कार किया हुआ।

देसित=उपदेश दिया हुआ।

कृदन्तों के रूप तीनों लिंगों में होते हैं।

हिन्दी में अनुवाद कीजिए —

चालीसवाँ पाठ

विशेषण

विशेषण चार प्रकार के होते हैं—(१) गुणवाचक, (२) सख्या-वाचक, (३) कृदन्त, और (४) तद्धितान्त । इनमें से प्रायः सबका वर्णन किया जा चुका है । यहाँ संक्षेप में कुछ उदाहरणों के साथ इनका परिचय दिया जा रहा है :—

१. गुणवाचक

अच्छाई, बुराई आदि गुणों को प्रगट करने वाले विशेषण को गुणवाचक कहते हैं । जैसे—

सुन्दरता—सोमन, साधु, रुचिर, मनुज्ज, सुन्दर, मनोरम, भद्र, पेसल, कल्याण, मनाप, सुम आदि ।

उत्तम—उत्तम, पवर, जेठ, पमुख, वर, पवान, पामोख, सेय्य, पगीत आदि ।

प्रिय—इष्ट, सुमग, वल्लभ आदि ।

शून्य—तुच्छ, रिक्त, सुञ्ज, असार आदि ।

पवित्र—पूत, पवित्र, सुचि आदि ।

हीन—निहीन, हीन, लामक, अधम आदि ।

ऐसे ही बृहत्, स्थूल, सम्पूर्ण, प्रचुर, अल्प, सरल, तीक्ष्ण, उग्र, गति-शील, कर्श, उपयुक्त, निष्फल, असहाय, सुदृढ़, विख्यात, लोभी, प्रेमी, शून्य, पूजित, विलुप्त आदि गुणों को प्रगट करने वाले विशेषण गुणवाचक होते हैं ।

(१८७)

उट्ठासि । ८. बुद्धस्स धम्मो उत्तमतरो नित्थानिको च । ९. तेन पस्सितव्वं
फल मया गण्हित । १०. सेम्हिको आवाधो जातो ।

पालि में अनुवाद कीजिए :—

१. सुन्दर घोड़ा आ रहा है । २. श्रेष्ठ आदमी जा रहा है । ३.
उत्तम आहार खाकर मैं सोना चाहता हूँ । ४. चैत्य की वन्दना करने के
लिए चार आदमी जाते हैं । ५. यह तथागत का अन्तिम वचन है । ६.
कुशीनगर में भगवान् बुद्ध का शारीरिक स्तूप है । ७. आरण्यक भिक्षु ध्यान
करता है । ८. भगवान् का आवकसघ दाक्षिण्य है । ९. यह तथागत
का उत्तम शासन है । १०. भिक्षुओ ! अप्रमाद से जीवन के लक्ष्य का
सम्पादन करो ।

॥ भवतु सन्न मङ्गलं ॥
